किरण गाइड

MP-SI स्पेशल

सामान्य हिन्दी

सामान्य हिंदी का इतिहास एवं परिचय

VYAPAM,MPPSC,UGC,NET,RAS,
Bed, PGT,TGT KVS Bank, Railway,
SI, ASI, Constable, SSC
एवं सभी प्रतियोगी परीक्षाओ हेतु उपयोगी

eY ; 70/- ek=

प्रकाशक : किरण न्यूज एजेंसी स्टेशन रोड इंदौर

KNA प्रकाशक

रेलवे स्टेशन,पटेल ब्रिज,ग्वाल टोली,साई मार्केट

इंदौर, फोन न. 0731.4050553

इस गैस पेपर में किसी भी अंक का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनः प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनिकी–इलेक्ट्रॉनिक,मेकेनिकल, फोटो कॉपी से प्रकाशक की अनुमति के बिना वितरित नहीं किया जा सकता। किरण न्यूज एजेंसी ने अपने प्रयास से इस गैस पेपर के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है।

-:कार्यालय:-
किरण न्यूज एजेंसी , स्टेशन रोड, इंदौर
फोन न. 0731–4050553
E-Mail kirannews151@gmail-com
www.kirannewsagency.com & www.knaeshop.com

अधिकृत विक्रेता
किरण न्यूज एजेंसी
शॉप न.13 आवास संघ परिसर रेनबो चिल्ड्रन
हॉस्पिटल के पीछे नई मार्किट भोपाल
E-Mail kirannews.bpl@gmail-com

.

किरण न्यूज एजेंसी
जीवाजी चौक, महाराज बड़ा
लश्कर ग्वालियर
या
किरण एकडेमी
आईसीआईसीआई, बैंक के पास
दाल बाजार तिराहा,नया बाजार
लश्कर ग्वालियर
E-Mail kirannews@gmail.com

किसी भी विवाद के लिए न्यायक्षेत्र उच्च न्यायालय इंदौर होगा
कम्पोजिंग एवं डिजाइनिंग:किरण कंप्यूटर
मुद्रक: किरण कला प्रेस, गोल पहाड़िया,
एबी रोड लश्कर गवालियर (मप्र)

नोट:– इस गाइड को प्रकाशित करने में प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है। फिर भी किसी त्रुटि के लिए प्रकाशक/विक्रेता/लेखक जिम्मेदार नहीं होगा। परीक्षार्थी स्वविवेक से अपना निर्णय ले

सामान्य हिन्दी

सामान्य हिंदी का इतिहास एवं परिचय

VYAPAM,MPPSC,UGC,NET,RAS,
Bed, PGT,TGT KVS Bank, Railway,
SI, ASI, Constable, SSC
एवं सभी प्रतियोगी परीक्षाओ हेतु उपयोगी

संकलनकर्ता **जे.एल. भाटिया**

KNA प्रकाशक
रेलवे स्टेशन,पटेल ब्रिज,ग्वाल टोली,साई मार्केट
इंदौर, फोन न. 0731.4050553

नोट–सामग्री के प्रकाशन में पूर्ण सावधानी बरती गई हैं/ किसी भी प्रश्न के उत्तर या प्रश्न में भ्रम कीस्थिति पर पाठक किसी अन्य स्त्रोतों से इसकी पुष्टि के लिए स्वतंत्र हैं / अतः किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए प्रकाशक/ विक्रेता/ लेखक की जिम्मेदारी नहीं होगी

प्रकाशक

हिन्दी भाषा का विकास

- भाषा परिवार के आधार पर हिन्दी भारोपीय परिवार की भाषा है।
- भारत में 4 भाषा परिवार है भारोपीय, द्रविड़, ऑस्ट्रिक व चीनी तिब्बती मिलते है।
- भारत में बोलने वालों के प्रतिशत के आधार पर भारोपीय परिवार सबसे बड़ा भाषा परिवार है।

1.	भारोपयी	-	73 प्रतिशत
2.	द्रविड़	-	25 प्रतिशत
3.	आस्ट्रिक	-	1.3 प्रतिशत
4.	चीनी तिब्बती	-	0.7 प्रतिशत

- हिन्दी की आदि जननी संस्कृत है। संस्कृत की उत्पत्ति प्राकृत भाषा से होती हुई। अपभ्रश तक पहुंचती है फिर अपभ्रंश अवहट्ट से गुजरती हुई प्राचीन प्रारम्भिक हिन्दी का रूप लेती है। विशुद्ध हिन्दी भाषा के इतिहास का आरम्भ अपभ्रन्श से माना जाता है।

हिन्दी भाषा का विकास क्रम

संस्कृत - पाली - प्राकृत - अपभ्रंश - अवहट्ट

अपभ्रंश - अपभ्रन्श भाषा का विकास 500-1000 ईसवी के मध्य हुआ और इसमें साहित्य का आरम्भ 8 वी सदी से हुआ, जो 13 वी सदी तक जारी रहा।

अपभ्रंश- (अप + भ्रन्श + छञ्) शब्द का यू तो शाब्दिक अर्थ है। 'वतन' किन्तु साहित्य से अभीष्ट है। प्राकृत भाषा से विकसित भाषा विशेष का साहित्य अपभ्रंश का बाल्मीक स्वयं को माना जाता है इनकी रचना 'पउम चरिउ' (अर्थात् राम काव्य)

वैदिक संस्कृत (2000-1000 बी.सी.) B.C
↓
लौकिक संस्कृत (1000-500 बी.सी.) B.C
↓
पालि (500 - ईस्वी सन् आरंभ तक) A.D
↓
प्राकृत (ईस्वी - 500 ऐ.डी.) A.D
↓
अपभ्रंश (500-900 ऐ.डी.) A.D
↓
अवहट्ट (900-1100 ऐ.डी) A.D
↓
पुरानी हिन्दी (50-1850 ऐ.डी.) A.D
↓
आधुनिक हिन्दी (1850-आजतक)

प्रमुख सम्प्रदाय :-

सम्प्रदाय	प्रवर्तक
रस	भरतमुनि
अलंकार	भामह (आचार्य मम्मट)
वक्रोक्ति	आचार्य कुन्तक
ओचित्य	क्षेमेन्द्र

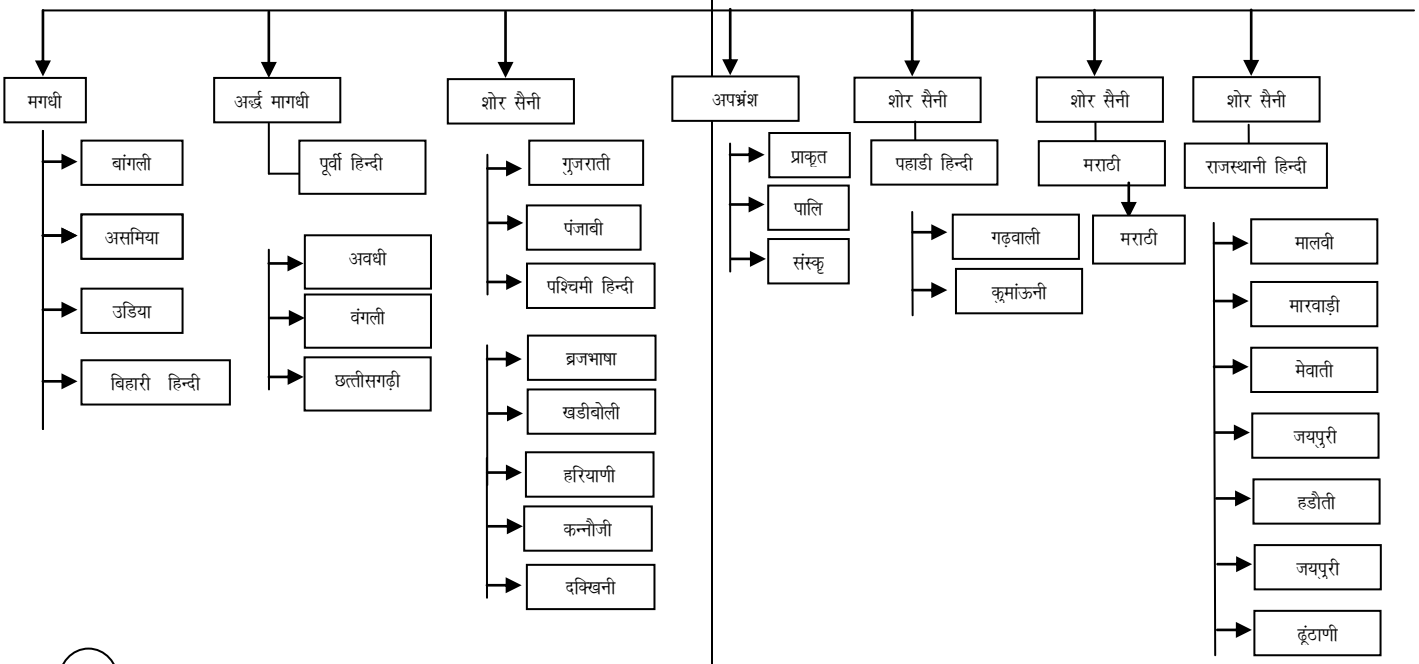
प्रमुख दर्शन या मत -

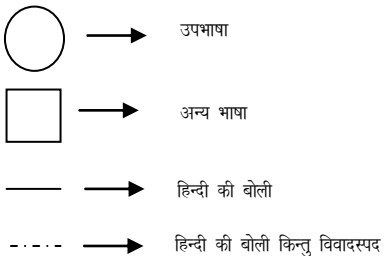
अद्वैतवाद	शंकराचार्य
द्वैतवाद	माधवाचार्य
विशिष्टा द्वैतवाद	रामानुजाचार्य
द्वैताद्वैतवाद	निम्बिकाचार्य
शुद्धाद्वैतवाद	बल्लभाचार्य
राधावल्लभ सम्प्रदाय	हित हरिवंश
अचिंत्य भेदाभेद	चैतन्य

हिन्दी की भाषा, उपभाषा एवं बोलियाँ

हिन्दी, मराठी, नेपाली आदि देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

संस्कृत
↓
पाली
↓
प्राकृत
↓
अपभ्रंश
↓





राष्ट्रभाषा -

राष्ट्रभाषा का शाब्दिक अर्थ है, समस्त शब्द प्रयुक्त होने वाली भाषा अर्थात् जो भाषा जन-जन में विचार विनिमय के लिए प्रयुक्त की जाती है, राष्ट्रभाषा कहलाती है।

1. राष्ट्रभाषा कोई संवैधानिक भाषा नहीं है, बल्कि यह प्रयोगात्मक व्यावहारिक व जन मान्यता प्राप्त शब्द है।
2. राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय एकता एवं अंतर्राष्ट्रीय संवाद संपर्क की आवश्यकता की उपज होती है।
3. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया गया।
4. जॉर्ज ग्रियर्सन ने हिन्दी को आमबोलचाल की महाभाषा कहा है।

राष्ट्रभाषा होने के लिए शर्तें या कसौटी -

1. शब्द भाषा सरल होनी चाहिए अर्थात् शब्द बोलने और लिखने के दृष्टिकोण से सरल होने चाहिए।
2. भारत वर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हो तथा इसी अनुपात में इसे समझते हो, यह देश की संस्कृति की वाहक होनी चाहिए।

राजभाषा (OFFICIAL LANGUAGE)

1. वह भाषा जो देश के राजकीय कार्यों के लिए प्रयोग में लाई जाती है, राजभाषा कहलाती है।
2. इसका शाब्दिक अर्थ है। ''राजकाज की भाषा''
3. राजाओं, नवावो के समय इसे दरबारी भाषा कहते थे।
4. राजभाषा कोई भी भाषा हो सकती है। संस्कृत और सिंधी को किसी भी राज्य में राजभाषा का दर्जा नही दिया गया।
5. राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है। हिन्दी को 14 सितम्बर 1949 को संवैधानिक रूप से राजभाषा घोषित किया गया।
6. प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को ''हिन्दी दिवस'' मनाया जाता है।
7. **अनुच्छेद 120** के अनुसार, संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा हिन्दी या अंग्रेजी होगी। किन्तु लोकसभा या राज्यसभा अध्यक्ष किसी सदस्य को उसकी मातृभाषा में सदन को सम्बोधित करने के लिये बाध्य नही कर सकता।
8. संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तो 15 वर्ष की अवधि के पश्चात् 'या अंग्रेजी में' शब्दो का लोप किया जा सकेगा।
9. **अनुच्छेछ 210** के अनुसार, राज्य विधान मण्डल में प्रयोग की जाने वाली भाषा कौन सी होगी? यह चुनने का अधिकार राज्यों को है अर्थात् राज्य अपने अनुसार अपनी राज्यभाषा को चुन सकता है।
10. **अनुच्छेद 343** के अनुसार, संघ की राज्य भाषा हिन्दी और लिपि देवनागिरी होगी। अंको का रूप भारतीय अंको का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा।
11. **अनुच्छेद 345** के अनुसार राज्य की भाषा प्रादेशिक भाषा या हिन्दी ना होने पर ऐसी व्यवस्था होने पर अंग्रेजी बनी रहेगी।
12. **अनुच्छेद 348** के अनुसार, उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यालय और संसद और राज्य विधान मण्डल में विधेयकों व अधिनियमों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा, यदि किसी भाषा का प्रावधान न होतो, अंग्रेजी में उपयुक्त कार्य लिये जा सकते हैं।
13. **अनुच्छेद 350** के अनुसार व्यवस्था के निवारण के लिए प्रार्थना पत्र में प्रयोग कि जाने वाली भाषा किसी भी भाषा में।
14. **अनुच्छेद 351** के अनुसार, हिन्दी के विकास के लिए निर्देश यह कि संघ हिन्दी भाषा का विकास और प्रसार करें।
15. **8 वीं अनुसूची** :- संविधान की आठवी अनुसूची में उल्लेखित 22 भाषाओं का स्त्रोत संस्कृत को माना गया है।
16. 1. असमिया, 2. बंगला, 3. गुजराती, 4. कश्मीरी, 5. मलयालम, 6. कन्नड, 7. मराठी, 8. उड़िया, 9. पंजाबी, 10. संस्कृत, 11. तमिल, 12. तेलगू, 13. उर्दू, 14. हिन्दी।

नोटः-

मूल संविधान में 14 भाषाये थी (भाषा संविधान में 14 भाषाये थी) सिंधी भाष को 21 वाँ संविधान, 1967 के तहत, 71 वे संविधन संशोधन के तहत चार भाषाओं को क्रमशः 16 कोंकणी 17 मणिपुरी 18 नेपाली को सम्मिलित किया गया। 92 वाँ संविधान संशोधन 2003 के तहत बोडो (19) डोंगरी, (20) मैथिली, (21) संथाली को शामिल किया गया।

बोली -एक छोटे से क्षेत्र में (या सीमित क्षेत्र में) बोली जाने वाली भाषा बोली कहलाती है। बोली मौखिक स्तर पर होती है। बोली की कोई लिपि नहीं होती है।

भाषा - बोली के अगले - चरण के रूप में भाषा को जाना जाता है। इसका क्षेत्र बोली से बहुत व्यापक होता है। इसमें व्यापक साहित्य सृजन होता है। प्रत्येक भाषा की लिपि निर्धारित होती है। भाषा लिखित स्तर पर होती है।

एक भाषा के अन्तर्गत कई उपभाषाएं होती है और एक उपभाषा के अन्तर्गत कई बोलियां होती हैं।

सर्वप्रथम एक अंग्रेज प्रशासनिक अधिकारी जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक **''भारतीय भाषा सर्वेक्षण''** में हिन्दी का उपभाषा व बोलियो में सर्वेक्षण वर्गीकरण विकसित किया।

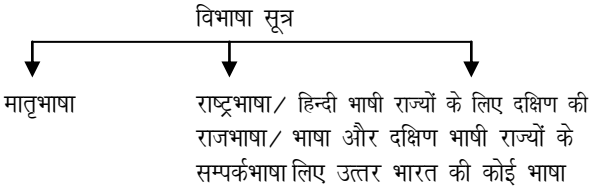
विभाषा- बोली और भाषा के बीच की स्थिति को विभाषा कहते हैं। विभाषा का क्षेत्र बोली से अधिक किन्तु भाषा से कम विस्तृत होता है। इसमें साहित्य रचनायें प्राप्त होने लगती है।

हिन्दी की विभाषा -

हिन्दी की भाषा, उपभाषा एवं बोलिया :-

ब्रज, खड़ी, अवधी, मैथली, भोजपुरी

विभाषा सूत्र- इस सूत्र के द्वारा भारत की एकता भावना को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है।



1. जिस भाषा में आचार विचार (आपस में बात करते है) खड़ी बोली जो लिखते है - देवनागरी लिपि
2. मुख से कोई ध्वनि निकलती है वह-अक्षर कहलाता है।
3. अक्षर का लिखित रूप-वर्ण
4. वर्ण के समूह को वर्णमाला

ब्रज, अवधी, खड़ी बोली, भोजपुरी, मैथिली।

लिपि :- बोली और भाषा ध्वनि रूप से होते है। इन ध्वनियों को हम जब संकेत या चिन्हों के रूप में प्रदर्शित करते है, तब उसे लिपि कहा जाता है। प्रत्येक भाषा के लिखने के लिए उसकी अपनी एक लिपि होती है। जैसे हिन्दी, मराठी और नेपाली की देवनागरी है। पंजाबी की गुरूमुखी, अंग्रेजी की लिपि रोमन है।

भारत की सभी लिपियाँ ब्राहमी लिपि से ही निकली है ब्राह्मी लिपि का प्रयोग वेदिक आर्यो ने शुरू किया है। देवनागरी लिपि को लोकनागरी एवं हिन्दी लिपि भी कहा जाता है। यह लिपि बायी से दायीं ओर लिखी जाती है।

हिन्दी साहित्य

साहित्य की निश्चित (संक्षिप्त) परिभाषा देना संभव नही है। क्योंकि परिभाषा का निर्माण वस्तुनिष्ठता के आधार पर होता है जबकि साहित्य की मूल प्रकृति आत्मनिष्ठ है। पुराने समय में इसकी परिभाषा देना का एक प्रयास आचार्य कुंतक ने किया उन्होंने आचार्य

भामक द्वारा दी गई परिभाषा ''शब्दार्थो सहितो काव्य'' की व्याख्या करते हुए कहा कि वाड्मय (वाणी/भाषा) तीन प्रकार का होता है।

1. वार्ता -

वह वाड्मय है। जिसमें अर्थ का महत्व शब्द से अधिक होता है। लौकिक जीवन की बातचीत और लोकसाहित्य में ऐसा ही दिखता है। मुहावरो की भाषा जैसे

1. नाकों चने चवाना
2. दांत खट्टे करना

इत्यादि अर्थ की प्रधानता पर आधारित है।

2. शास्त्र -

वाड्मय का वह हिस्सा जिसमें शब्द का महत्व अर्थ से बहुत अधिक होता है इसमें शब्द का जरा सा परिवर्तन अर्थ को क्षति पहुंचता है। वैज्ञानिक विषयों का वाड्मय इसी का उदाहरण है।

साहित्य/काव्य -

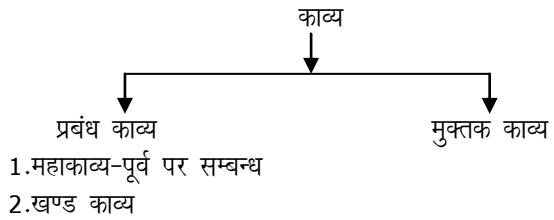
यह इन दोनों से अलग इस अर्थ में है कि यहाँ शब्द और अर्थ दोनों में से कुछ भी अत्यंत गौण नहीं होता। इसमें शब्द और अर्थ दोनों महत्वपूर्ण होते है। तथा उनमें महत्व हेतु परस्पर प्रतिस्पर्धा होती है।

आधुनिक काल में साहित्य शब्द का अर्थ बदलने लगा है। अब साहित्य सिर्फ कला या विकास की वस्तु नहीं रहा वल्कि समाज के यथार्थ से जुड़ने लगा। यहां साहित्य का अर्थ समाज का व्यापक हित है। इस शब्द के अनुसार साहित्य वही रचना है जो समाज के व्यापक हित को ध्यान में रखकर की गई है।

इन दोनों परिभाषाओं में साहित्य की बताई हुई विशेषताओं में एक और विशेषता है सौंदर्य और रमणियता। साहित्यिक रचना सौंदर्य से उक्त होती है। जो हमारे चित्त को प्रभावित करती है।

इन सभी लक्षणों के आधार पर साहित्य की परिभाषा देने का प्रयास किया जा सकता है ''हम कह सकते है। कि साहित्य वाड्मय का वह रूप है जिसमें सौंदर्य के साथ समाज के व्यापक हित की भावना विद्यमान होती है तथा जिसमें शब्द और अर्थ दोनों के महत्व में प्रतिस्पर्धा लगी रहती है।

काव्य



1.महाकाव्य-पूर्व पर सम्बन्ध
2.खण्ड काव्य

1. प्रबन्ध काव्य - महाकाव्य के नियम या पारम्परिक नियम

1. महाकाव्य का नायक धीरोदत्त दात होना चाहिए।
2. चारों पुरूषार्थों का वर्णन होना चाहिए।
   धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष
3. छन्दों की वैविध्य/विवधिता होनी चाहिए। एक सर्ग में एक ही छन्द होना चाहिए। उसी सर्ग का अन्तिम छन्द अलग होना चाहिए।
4. रचना की शुरूआत में मंगलाचरण होना चाहिए।
5. सज्जन की प्रशंसा और दुर्जन की निन्दा होना चाहिए।
6. समाज या संस्कृति का सम्पूर्ण चित्रण होना चाहिए।
7. रचना में आठ या अधिक सर्ग होना चाहिए।
8. पढ़ने वाले को (पाठक) नैतिक रूप से उत्कर्ष होना चाहिए।
   सर्ग (अध्याय)

महाकाव्य के आधुनिक नियम :-

डॉ. नगेन्द्र के नियम अनुसार -

1. उदात्त या महत्त्व पूर्ण कथानक होना चाहिए।
2. उदात्त भाव होना चाहिए।
3. उदात्त चरित्र होना चाहिए।
4. उदात्त कार्य होना चाहिए (अन्तिम भाग) में गरिमा होनी चाहिए।
5. उदात्त शैली होना चाहिए (तरीका होना)

महाकाव्य के तत्व - 4 प्रकार के महाकाव्य होते हैं।

1. भाव प्रधान - कामायनी (जयशंकर प्रसाद)
2. चरित्र प्रधान - रामचरित मानस (तुलसी दास)
3. वर्णन प्रधान - रामचन्द्रिका (केशव दास)
   सबसे अच्छे महाकाव्य चरित्र प्रधान महाकाव्य माने जाते हैं -
4. घटना प्रधान - पृथ्वीराजरासो

खण्डकाव्य

खण्डकाव्य -

(1) एक पक्ष को लेकर चलता है।
जैसे - व्यक्ति, घटना, स्थिति

यह व्यक्ति या एक पक्ष पर ही केन्द्रित होते है न कि समाज पर। ऐसी स्थिति में कविता के लिए सिर्फ भावों का है क्षेत्र बचा। द्विवेदी युग के कवि इस चुनौती को नहीं समझ सके इसीलिए कविताओं में विचारों और वर्णनों की प्रस्तुति करके गद्य से लोहा लेते रहे। इस प्रक्रिया में कविता को लाभ तो नही हुआ बल्कि उनकी कविताऐं अपने स्वरूप में गद्यात्मक तथा इतिवृतात्मक हो गई।

छायावाद के कवियों ने बदलते हुए समय की नब्ज को पहचाना कविता के स्वरूप में संशोधन किया और उन्होने मुख्यतः गीत और प्रगति लिखे तो तीप्त भावनाओं के बाहर थे इसके अतिरिक्त उन्होने पारम्पररिक प्रबंध काव्यों के इतिवृत्तात्मका प्ररांगों को कम करते हुए भावात्मक प्रसंगों को बनाये रखे हुए ऐसी कविताऐ रची जो आकार में पुराने प्रबंधो काव्यों से आकार में छोटी थी। किन्तु मुक्तक कविताओं से लंबी थी। कोई उपयुक्त नाम न मिलने के कारण उस समय इन्हे लंबी कविता कह दिया गया और यही नाम आज तक प्रचलित है।

नोट :-

आत्मनिष्ठ/व्यक्तिनिष्ठ - स्वयं पर निर्भर

1. वस्तुनिष्ठ - वस्तु पर निर्भर और सभी के लिए समान।
2. तथ्य - जिसे मानने के लिए सभी वाध्य हो।
3. एक आदेश अनुसारी होता है। अर्थात् केवल एक पक्ष को लेकर चलता है।

जैसे - व्यक्ति, घटना, काल, स्थिति
इसमें छन्द परिवर्तन जरूरी नहीं होता है।

जयद्रथ वध - मैथिली शरण गुप्त
भारत भारती - मैथिली शरण गुप्त

3. **गद्यकाव्य** - ऐसा काव्य जो विस्तार पूर्ण व्यास शैली में लिखा जाता है। जिसमें गेयता नही होती।
   उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, एकाकी, गद्य की विद्या है
4. **पद्यकाव्य** - पद्य काव्य मुख्यतः भावनाओं से प्रभावित होकर लिखा जाता है। इसमें गेयता एवं संगीतात्मकता होती है।

उदा. गीत, प्रगीत, पहेली, मुकरी, ढकोसला
गद्य और पद्य काव्य की मिश्रित शैली को चंपू काव्य कहते है।

5. **मुक्तक काव्य** - मुक्तक काव्य के निम्न भेद है।

1. गीत -

1. यह भावना कि चरण तीव्रता में लिखे जाते हैं।
2. इसे गाया जा सकता है।
3. इसमें भाव ऐक्यता होती है।
4. इसमे भाव वैयक्तिकता होती है।
5. गीत और पद समान होते है। किन्तु पद में भक्ति भाव होता है।

2. प्रगीत –

1. इसमें गीत से ज्यादा भाव ऐक्यता होती है।
2. इसमें छंद भंग हो जाता है।
3. इसमें गैयता समाप्त हो जाती है।
4. निराला ने सबसे ज्यादा प्रगीत की रचना की
5. प्रगीत का सर्वाधिक विकास छायवाद में हुआ।

3. पहेली –

जिस कविता मे प्रश्न हो तथा श्रोता उसका उत्तर दे। उसे पहली कहते है। आदिकाल मे अमीर खुसरो ने तथा आधुनिक काल मे भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने इसका उपयोग किया।

उदा. एक थाल मोती से भरा सबके सिर औधा धरा।
चारों ओर वह थाल फिरे मोती उसके एक ना गिरे।।

4. मुकरी –

जिस कविता में प्रश्न के साथ साथ उत्तर भी हो वह मुकरी कहलाती है। सामान्यतः इसमें चार चरण होते हैं।

उदा. नित घर आवत है रैन ढलै फिर जावत है। फसत अमावस गोरी के फंदा है सखी साजन न सखी चांदा।

5. गज़ल –

(गज़ल का अर्थ होता है) ''महिलाओं से'' या ''महिलाओं की बात चीत''

1. ये उर्दु और फारसी की परम्परा से भारत में आई है।
2. यह 1950 के बाद समाज से जुड़ने लगी।

गजल को पहला शेर को मतला (उगता हुआ सूर्य) कहते है जब कि अन्तिम शेर को मकता (ढ़लता हुआ सूर्य) कहते है।
गज़ल में 5-25 तक शेर होते है।

उदा. जिसे इश्क का तीर कारी लगे, उसे जिन्दगी क्यो न भारी लगे।

1. शेर हमेशा विषम सख्या में ही होते है गज़ल मे लय और तुक को क्रमशः रदीफ और काफिजा कहते है।
2. यदि लेखक अन्तिम शेर के नीचे अपना नाम लिखे देता है। तो उसे तखल्लुस कहते है।

6. नज्म –

यह उर्दु परम्परा की अतुकांत/छंद विहीन कविता है। जो अन्तर गीत और प्रगीत में है। वही अन्तर गज़ल और नज्म में होता है।

7. शोक गीति –

शोक गीति विशेषता मृत्यु के अवसर पर लिखी ाती है।

1. पारसी परम्परा में इसे (मार्सिया) तथा अंग्रेजी में इसे 'Elegy' 'एलिजी'।
2. अच्छी शोक गीति में प्रतीकात्मक भाषा होती है।
3. अन्त में इसमें भावुकता आ जाती है।
4. निराला ने 'सरोज स्मृति' नाम शोक गीति लिखी है।

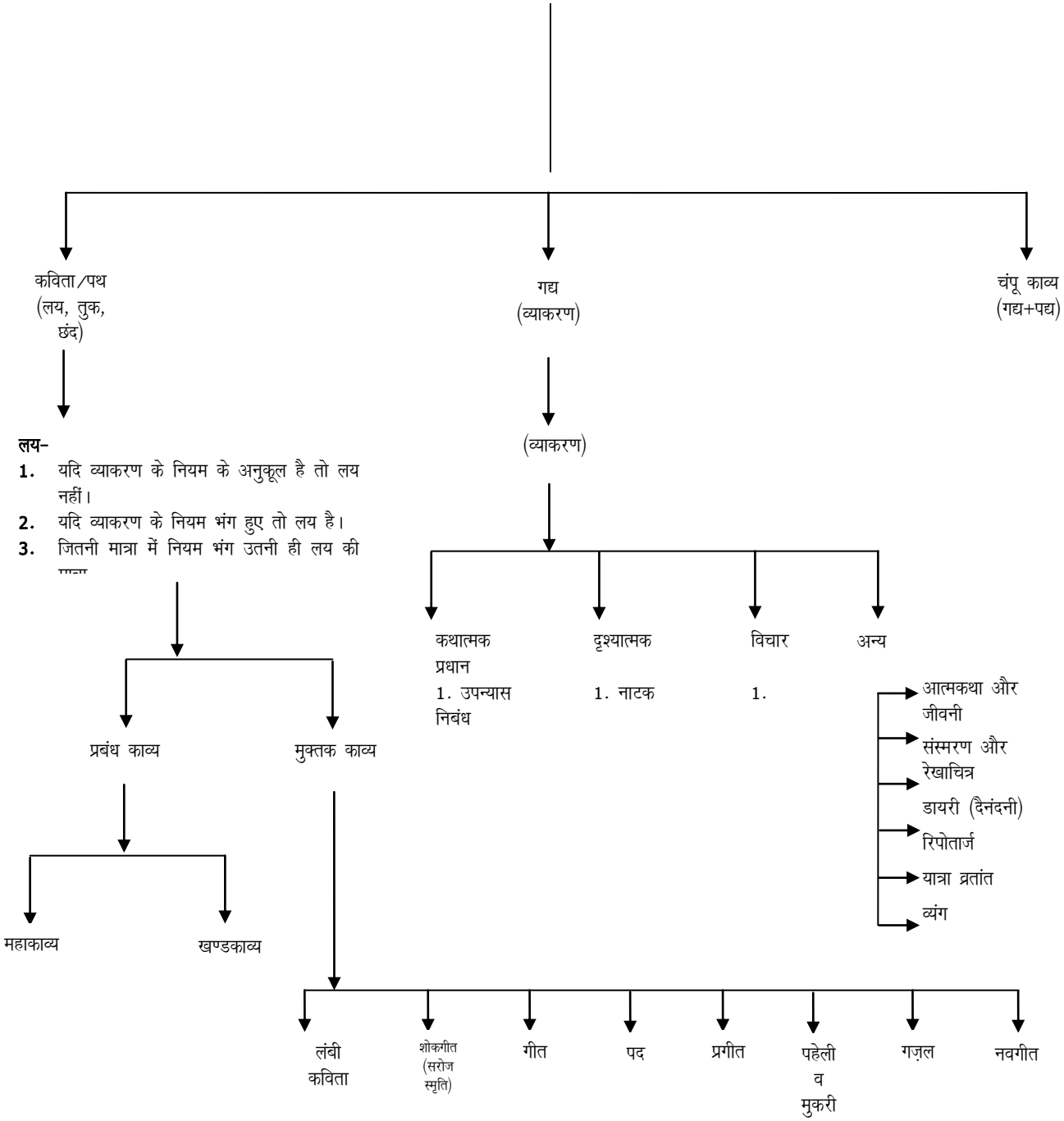
8. नवगीत –

नई कविता के समय जो गीत लिखे गये उन्हे नवगीत कहते हैं।

1. इसमें छायावाद के गीतों से अधिक भावनात्मक तीव्रता नही होती है।

9. सुखने–

1. पान क्यो सड़ा घोडा क्यो अड़ा फेरा न था
2. समोसा न खाया जूता न पहना तला न था


कविता/पथ
(लय, तुक, छंद)
गद्य
(व्याकरण)
चंपू काव्य
(गद्य+पद्य)
लय-
1. यदि व्याकरण के नियम के अनुकूल है तो लय नहीं।
2. यदि व्याकरण के नियम भंग हुए तो लय है।
3. जितनी मात्रा में नियम भंग उतनी ही लय की
(व्याकरण)
कथात्मक प्रधान
1. उपन्यास
निबंध
दृश्यात्मक
1. नाटक
विचार
1.
अन्य
आत्मकथा और जीवनी
संस्मरण और रेखाचित्र
डायरी (दैनंदनी)
रिपोतार्ज
यात्रा व्रतांत
व्यंग
प्रबंध काव्य
मुक्तक काव्य
महाकाव्य
खण्डकाव्य
लंबी कविता
शोकगीत (सरोज स्मृति)
गीत
पद
प्रगीत
पहेली व मुकरी
गज़ल
नवगीत

काव्य

आचार्य ''विश्वनाथ के अनुसार'' रस युक्त वाक्य ही काव्य है। आचार्य जगन्नाथ के अनुसार रमणी अर्थ के प्रतिवादक धर्म को काव्य कहते है।

''आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार उस वस्तु तथ्य की हृदय में कोई भाव जगा दे और उस वस्तु, तथ्य की मार्मिक भावना को लीन कर दे। वह काव्य है।

काव्य के भेद -

1. **श्रव्य काव्य** - श्रव्य काव्य ऐसे काव्य को कहते है जिनका आनन्द पढ़-कर और सुनकर लिया जाता है।
   जैसे - महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक काव्य, कहानी, उपन्यास आदि।
2. **दृश्य काव्य** - यह नाट्य विद्या से संबंधित ऐसा काव्य है। जिसका आनन्द लिया जाता है।
   जैसे - नाटक, एकांकी, प्रहसन

श्रव्य काव्य के दो भेद है।

1. प्रबंध काव्य
2. मुक्तक काव्य

प्रबंध काव्य के अन्तर्गत महाकाव्य और खण्डकाव्य आता है।

आधुनिक महाकाव्य :- रचनाएँ -

प्रिय प्रवास - हरिऔध साकेत - मैथिलीशरण गुप्त
कमायनी - जयशंकर प्रसाद
कुरूक्षेत्र - रामधारी सिंह दिनकर
लोकापतन - सुमित्रा नन्दन पंत
रश्मि रति - रामधारी सिंह दिनकर

गद्य काव्य (चम्पू काव्य) :- गद्य काव्य गद्य, पद्य के बीच की विधा होती है। इसमें गद्य के माध्यम से किसी भाव पूर्ण विषय की काव्यात्मक अभिव्यक्ति होती है।

विशेषताएँ -

1. इसमें भावों की सरस अभिव्यक्ति होती है
2. इसमें एक ही केन्द्रीय भाव की प्रधानता होती है।
3. इसमें विचारों का समावेश भावों के अनुरूप ही होता है।
4. अनुभूति की प्रधानता, प्रतिकात्मकता, काल्पनिकता, संक्षिप्ता इसकी विशेषताएँ

गद्य काव्य

	रचना		रचनाकार
1.	साधना, प्रवाल, पगला	-	कृष्णदास
2.	विश्वधर्म	-	
3.	साहित्य देवता	-	माखनलाल चतुर्वेदी

आख्यानक गीत - काव्य के अन्य रूपो में आख्यानक गीत भी प्रमुख है। जिसमें पद्य शैली में लघु आख्यनक कथा वर्णित होती है।
गेयता इसका प्रमुख गुण है।

उदा. झाँसी की रानी, लक्ष्मीबाई, चंदेरी का जौहर, महाराणा प्रताप आदि।

हिन्दी साहित्य की विकास यात्रा
हिन्दी साहित्य का काल और नामकरण

1. आदिकाल (1050 - 1350 ए.डी) :-
2. आदि काल नाम आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने दिया।
3. इस काल को वीर गाथा काल नाम आचार्य राम चन्द्र शुक्ल ने दिया।
4. इस काल के प्रमुख कवियो में -
   चन्द्रवरदाई - पृथ्वीरासो
   अमीर खुसरो - पहली, मुकरी
   विजय सेन - रेवन्तगिरी रास
5. इस काल में डिंगल - पिंगल दो शैलियाँ मिलती है।
6. इस काल में नाथ और सिद्ध साहित्य भी लिखा गयज्ञं
7. हिन्दी साहित्य का काल एवं नामांकरण - हिन्दी साहित्य इतिहास के विभिन्न कालों के नामकरण का प्रथम श्रेय
   अ. जार्ज ग्रियर्सन को दिया गया है।

इस काल के प्रमुख कवियों में चन्द्रवरदायी व विद्यापति मैथिलकोकिल कहलाए वह उनकी मैथली में रचित पदावली है यह मुक्तक काव्य है। और पूरी पदावली भक्ति व श्रंगार की धूप छाव है। इस काल में डिंगल और पिंगल दो शैलियाँ मिलती है। पिंगल शैली को ब्रज भाषा में समाहित कर दिया गया है।

1. सिद्धो की संख्या 84 मानी जाती है। प्रथम सिद्ध शहर ''सरहपा'' है।
2. अनुश्रुति के अनुसार 9 नाथ है नाथ साहित्य के प्रवर्तक गोरखनाथ है।
3. विद्यापति के कीर्तिलता व कीर्तिलका की रचना अवहट्ट में की।
4. चौपाई के साथ दोहा रखने की पद्धति कडवक कहलाती है। कडवक का प्रयोग आगे चलकर भक्ति काल में हुआ।
   जैसे -
   यशोधरा, जयद्रथ वध (मैथलीशरण गुप्त)
   इसमें छंद परिवर्तन जरूरी नही होता।

आदिकालीन रचना एवं रचनाकार -

	रचना	रचनाकार
1.	संदेश शासक	अब्दुर रहमान
2.	परमाल रासा	जगनिक
3.	खुमाण रासो	दलवति विजय
4.	सबदी	गोखनाथ
5.	दोहाकोष	सरहया

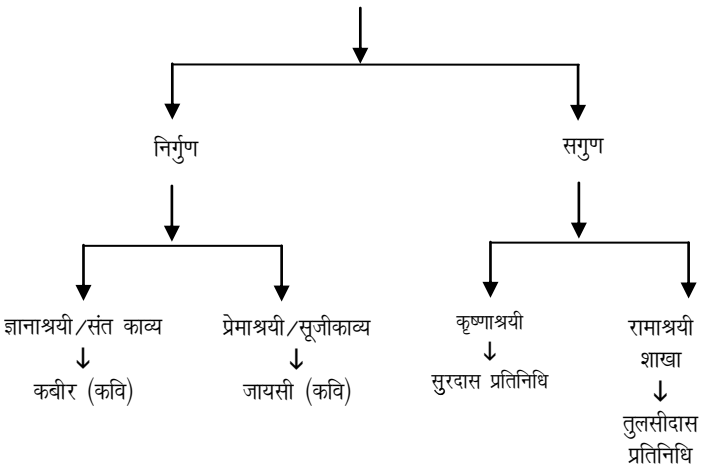
नोट :- अमीर खुसरो को हिंद इस्लामी समन्वित संस्कृति का प्रथम प्रतिनिधि कहा जाता है।

भक्तिकाल (1350-1650)

1. भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का 'स्वर्ण काल' कहा जाता है। भक्तिकाल के उदय के बारे में सबसे पहले जार्ज ग्रियसर्न ने मत व्यक्त किया वे इसे 'ईसायत की देन' मानते है।
2. तारा चंद के अनुसार भक्तिकाल अरबों की देन है।
3. भक्ति आनदोलन का स्वरूप देश व्यापी था।
4. भक्ति काव्य की दो काव्य धाराएँ है।
5. निर्गुण काव्य धारा।
6. सगुण काव्य धारा

निर्गुण काव्य धारा की दो शाखाऐ है

1. ज्ञानाश्रयी 2. भक्ति काव्य



निर्गुण की विशेषताए -

1. लोकिक प्रेम द्वारा अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति।
2. निराकार ईश्वर।
3. जाति प्रथा का विरोध व हिन्दू मुस्लिम एकता का समर्थन

सगुण की विशेषताऐ -

1. अवतारवाद में विश्वास।
2. ईश्वर की लीलाओं का गायन।
3. राम व कृष्ण भक्ति।

भक्ति कालीन काव्य की विशेषताएँ:-

1. संत काव्य का सामान्य अर्थ संतों के द्वारा रचा गया काव्य है।
2. बोली के ठेठ शब्दों के प्रयोग के कारण ही हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को वाणी का डिक्टेटर तानाशाही कहा गया।
3. जायसी के यश का आधार पद्मावत है।
4. मलिक मोहम्मद जायसी, जायस के रहने वाले थे ये सिकंदर लोधी व बाबर के समकालीन थे।
5. पद्मावत की कथा चित्तोड़ के शासक, रत्नसेन और सिंहलद्वीप की राजकन्या, पद्मणी की प्रेमवाणी पर आधारित थी।
6. ब्रजमण्डल में कई कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय सक्रीय थे इसमें वल्लभ, हरिराशी चेतन्य, राधावल्लभ, निम्बार्क, सम्प्रदाय विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
7. विटठ्लनाथ ने अष्टछाप की स्थापना की सूरदास इनमें सर्वप्रमुख हो और उन्हे अष्ठछाप का जहाज कहा जाता है।

रामभक्त कवि में कुछ नाम उल्लेखनीय है।

1. रामानंद 2. ईश्वरदास 3. केशवदास 4. नरहरिदास

1. सूर वात्सल्य चित्रण के लिए विश्व में अन्यतम कवि माने जाते है।

भक्तिकालीन रचना एवं रचनाकार

रचनाकार	रचना
कबीर	1. बीजक
मुल्लादाऊद	2. चंदायन
नंददास	3. रूपमंजरी
परमानंद दास	4. परमानंद सागर
गीतगोविन्द	5. नरसी जी का मायरा, मीराबाई
नरोत्तमदास	6. सुदामाचरित्र
रसखान	7. रसखान
विज्ञान गीता	8. कविप्रिय, रसिकप्रिया, केशवदास
दोहावली, शृंगार सोरठा	9. सतसई या रहीम रहीम

नोट- अष्टछाप के कवि।

1. बल्लभाचार्य के शिष्य - सूरदास, परमानंद दास, कुम्भन दास, और कृष्ण दास
2. विट्ठलदास के शिष्य - छीतस्वामी नंददास, चतुर्भजदास, गोविन्द स्वामी

इस काल के प्रमुख कवि एवं रचनाऐ :- भक्तिकाल (1350-1650)

कबीर दास - बीजक, सवद, रमैनी
मालिक मोहम्मद जायसी-पद्मावत सूरदास-सूरसागर, भ्रमरगीतसार
तुलसी दास - रामचरि, आखिरी सलाम, अखरावट

त्र मानस, कवितावली, कृष्ण गीताबली

1. भक्ति काल मे निर्गुण और सगुण दो शाखायें थी ।
2. निर्गुण धारा में कवीर और जायसी आते है जब कि सगुण के धारा मे तुलसी दास और सूरदास आते है।

कबीर दास	-	सन्त काव्य धारा - ज्ञानमर्गी
जायसी	-	प्रेमाश्रयी या सूफी काव्यधारा
कृष्ण काव्य धारा	-	सूरदास
तुलसी दास	-	रामकाव्य धारा

3. रीतिकाल (1650-1850) -

1. आचार्य शुक्ल ने इस काल का नाम रीतिकाल दिया तथा आचार्य विश्वनाथ प्रसादमिश्र ने इसे शृंगार काल कहा।
2. इस काल के प्रमुख कवियो में केशव दास है। इन्हें रीतिकाल का प्रवर्तक माना जाता है।
3. इन्हें कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है।
4. इनकी प्रमुख रचनाओं में रामचन्द्रिका विज्ञान गीता, नख शिख वर्णन आदि है।

नोट :-

बिहारी लाल - प्रमुख रचनाऐ - विहारी सतसई

5. इनके वारे मे 'जॉर्ज' ग्रियसर्न' ने कहा है। कि 'मुझे पूरे यूरोप में बिहारी जैसा कवि नही दिखाई देता।
घनानंद - सुजान चरित्र
6. आचार्य कवि परम्परा या लक्षण ग्रंथ परम्परा इस काल की प्रमुख विशेषता है।
7. गागर में सागर भरने का काम कविवर बिहारी लाल ने किया है
8. इस काल की रीति इतर शाखा में नीति कथन कहे गये हैं।

नोट :-

धनानंद को प्रेम पीर का कवि कहा जाता है।

9. समग्रतः रीतिकालीन काव्य जनकाव्य नहीं है। बल्कि दरबारी संस्कृति काव्य है। इसमें शृंगार और शब्द सज्जा पर जोर रहा।
10. रीतिकाल में कवि, जोधराज, खुमान, पद्माकार, भट्ट आदि ने जहाँ प्रबंधात्मक, वीरकाव्य काव्य की रचना की। वही भूषण, बांकीदास आदि ने मुक्तक वीर काव्य की रचना की।
11. रीतिकाल की गौण प्रवर्तियां, भक्ति, वीरकाव्य, राज प्रसस्ति व नीति थी।
12. रीतिकालीन देव ने फ्राइड की तरह, लेकिन फ्राइड के बहुत पहले ही 'काम' को समस्त जीवो की प्रक्रियाओं मे केन्द्र में रखकर अपने समय में क्रान्किारी चिंतन दिया।

रीतिकालीन रचना एवं रचनाकार

	रचना		रचनाकार
1.	कविकुल, कल्पतरू, रसविलास	-	चिन्तामणि
2.	बिहारी सतसई	-	बिहारी
3.	छत्रसाल दशक	-	भूषण
4.	चण्डिचरित्र, रतन हजारा रसनिधि	-	गुरूगोविंद सिंह
5.	शब्द रसायन, काव्यरसायन	-	देव
6.	हमीरासो	-	जोधराज

4. आधुनिक काल - (1850 - आजतक)

a. भारतेन्दु काल - (1850 - 1900)

1. भारतेन्दु युग का नामकरण हिन्दी नव जागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरीशचन्द्र के नाम पर किया गया है।

2. भारतेन्दु मण्डल के प्रमुख रचनाकार है। अम्बिका दत्त व्यास, सुधाकर द्विवेदी आदि।
3. भारतेन्दु मण्डल के रचनाकारों का मूल स्वर नवजागरण है। नव जागरण की पहली अनुभूति हमे भारतेन्दु हरीशचन्द्र की रचनाओं में रहती है।
4. भारतेन्दु हरीश चन्द्र के पिता गोपाल चन्द्र गिरधारी दास अपने समय के प्रसिद्ध कवि थे।
5. भारतेन्दु युगीन नव जागरण में एक ओर राजभक्ति तो दूसरी ओर देशभक्ति थी।
6. भारतेन्दु युग में नारी शिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, छुआछूत आदि को लेकर सहानुभूति पूर्ण कविताएं लिखी गयी।
7. भारतेन्दु युग में मुक्तक कविताएं ज्यादा लोकप्रिय।
8. भारतेन्दु ने उन मुक्तक काव्यों का उद्धार किया। जिन्हें अमीर खुसरो के बाद लगभग भुला दिया गया था। ये है पहेलियां और मुकरियां।
9. भारतेन्दु युग में पद्य के लिए ब्रज भाषा और गद्य के लिए खड़ी बोली को प्रयोग में लाया गया।

प्रमुख कवि :- **भारतेन्द्र हरिशचन्द्र**
वालकृष्ण भट्ट
प्रताप नारायण मिश्र
चौधरी बदरी नारायण प्रेमधन

इस काल की महत्त्व पूर्ण विशेषता समस्या पूर्ति है।

भारतेन्दु युग की रचना एवं रचनाकार

	रचना	रचनाकार
1.	प्रेम सरोवर, प्रेम मल्लिका गोविन्दा नन्द	भारतेन्दु हरीशचन्द्र
2.	मन की लहर, शृंगार-विलास	प्रताप नारायण मिश्र
3.	कंस वध, देश दशा	राधाकृष्ण दास

13. द्विवेदी युग :- (1900 - 1918)

1. इनका पूरा नाम महावीर प्रसाद द्विवेदी है।
2. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती पत्रिका' का सम्पादन किया।
3. मैथली शरण गुप्त - भारत भारती इसी कृति के कारण इन्हें राष्ट्र कवि का दर्जा दिया गया है।
4. अयोध्या सिंह हरिऔध-'प्रिय प्रवास' यही खड़ी बोली का पहला महाकाव्य है।
5. श्रीधर पाठक - ये स्वछन्दता वाद के कवि है।
6. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इसका नाम द्विवेदी युग रखा गया है।
7. द्विवेदी युग को जागरण सुधार काल भी कहा जाता है।
8. इस युग के कवियों के दो वर्ग थे।
   1. द्विवेदी मण्डल के कवि
   2. द्विवेदी मण्डल के बाहर के कवि
9. द्विवेदी मण्डल के कविओं की काव्य धारा को अनुशासन की धारा तथा द्विवेदी मण्डल के बाहर के विद्याओं की काव्यधारा को स्वछदता की धारा कहा जाता है।
10. द्विवेदी मण्डल के कविओं में मैथिलीशरण गुप्त, हरिऔद्य, महावीर प्रसाद द्विवेदी आदि आते है।
11. मैथिलीशरण गुप्त ने दो नारी प्रधान काव्य साकेत व यशोधरा की रचना की।
12. 'साहित्य समाज का दर्पण है।' यह कथन महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का है।
13. मैथिलीकरण गुप्त द्विवेदी युग के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि थे। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'रंग में भंग जो 1909 मे लिखी गयी है।

द्विवेदी युग के रचना और रचनाकार

	रचना	रचनाकार
1.	काव्य मंजूसा, सुमन, अवला विलाप	महावीर प्रसाद द्विवेदी
2.	वैदेही, वनवास, प्रिय-प्रवास	हरिऔध
3.	पंचवटी, विष्णुप्रिय, द्वापार, जय भारत, जयद्रथंवध	मैथिलीशरण गुप्त

7. छायावाद काल (1918-1936) -

जयशंकर प्रसाद - कामायनी, चन्द्रगुप्त, कंकाल, स्कन्द गुप्त
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला - राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति, कुकुरमुत्ता।
मुंशी प्रेम चन्द्र - गोदान, गवन, रंगभूमि, कर्मभूमि, मानसरोवर (कहानीयों का संकलन)
महादेवी वर्मा - यामा, नीरजा
इन्हे आधुनिक मीरा कहा जाता है।
सुमित्रानन्दन पंत - उच्छवास,

1. प्रसाद, महादेवी, निराला पंत इन्हे छाया वाद के चार स्तम्भ कहा जाता है।
2. छाया वाद में नारी स्वतन्त्रता को बल मिला है।
3. प्रेमचन्द्र का अन्तिम उपन्यास मंगल-सूत्र था जो कि पूरा न हो सका।

छायावाद का अर्थ मुकुटधर पाण्डे ने रहस्यवाद, सुशील कुमार ने अस्पष्टता, महावीर प्रसाद ने अन्योक्ति पद्धति, रामचन्द्र शुक्ल ने शैली वैचित्य, नन्द दुलारे वाजपेयी ने आध्यामिक छाया का भान, डॉ. नागेन्द्र ने स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह बताया है।

छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताऐं

1. सौन्दर्य तथा प्रणय भावनाओं का प्राधान्य
2. करूणा और वेदना की प्रवृत्ति।
3. भाषा में माधुर्य।
4. प्रकृति का सजीव सत्य के रूप में चित्रण था प्रकृति पर कवि द्वारा अपने भावों का आरोपण।
5. जयशंकर प्रसाद की प्रथम काव्य कृति 'उर्वशी' है।
6. प्रसाद की प्रथम छायावादी काव्य कृति 'झरना' थी। और उनकी अन्तिम काव्य कृति कमायनी (1935) सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति है।
7. मनु, श्रृद्धा, इड़ा थे कमायनी के पात्र है।
8. पन्त की प्रथम छायावादी काव्य संग्रह उच्छ्वास और अन्तिम छायावादी काव्य संग्रह गुन्जन है।
9. छायावाद में मुक्तक काव्य सर्वाधिक लोकप्रिय था।
10. प्रसाद, महादेवी, निराला इन्हे छायावाद का तिलक स्तम्भ कहा जाता है।

छायावादी युग की रचना एवं रचनाकार

	रचना	रचनाकार
1.	युगान्त, युगवाणी, वीणा पल्लव	'पन्त'
2.	हिमतरंगिणी, पुष्प की अभिलाषा	माखनलाल चतुर्वेदी
3.	त्रिधारा, वीरो का कैसा हो वंसत	सुभद्राकुमारी चौहान

प्रगति वाद (1936-1943) -

नागार्जुन - हरिजन गाथा
रामधारी सिंह दिनकर - कुरूक्षेत्र, उर्वशी,
प्रयोग वाद - (1943 - 1951)

1. प्रगतिवाद का आरम्भ प्रगतिशील लेखक संघ द्वारा 1936 ई. में लखनऊ में आयोजित उस अधिवेशन में हुआ। जिसकी अध्यक्षता मुन्शी प्रेम चन्द्र ने की थी।

2. प्रगतिवादी कविता में राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक शोषण से मुक्ति का स्वर प्रमुख है।

विशेषणताएँ –

1. प्रकृति के प्रति लगाव, नारी प्रेम।
2. राष्ट्रीयता।
3. रूढ़ियों का विरोध, मार्क्सवादी विचारधारा का पल्लवन।
4. बोधगम्य भाषा व व्यंग्यात्मकता 'कमेंट करना' जनता की भाषा।
5. राजनीतिक में जो स्थान समाजवाद का है। वही स्थान साहित्य में प्रगतिवाद का है।

छायावाद और प्रगतिवादी में अन्तर

1. **छायावाद** छायावाद में कविता करने का उद्धेश्य 'स्वान्तः सुखाय है
   प्रगतिवाद जबकि प्रगतिवाद में 'बहुजन सुखाय बहुजन हिताय' है

2. **छायावाद** छायावाद में अतिशय कल्पना शीलता है
   प्रगतिवाद जबकि प्रगतिवाद में ठोस यथार्थ है।

3. **छायावाद** छायावाद में वैयक्तिक भावना प्रबल है
   प्रगतिवाद जबकि प्रगतिवाद मे सामाजिक भावना प्रबल है।

प्रयोगवाद युग (1943 – 1951)

1. प्रयोगवाद उन कविताओं के लिए प्रमुख सम्बोधन बना। जो कतिपय नूतन बोधो, सम्वेदनाओं, शिल्पगत चमत्कारों को लेकर प्रारम्भ में तार सप्तक के माध्यम से सन् 943 में प्रकाश में आयी। इसके उन्नायक सच्चिदानंद हीरानन्द वात्सयानन 'अज्ञेय' स्वीकार किए गए। यह वर्ग अंग्रेजी के कविओं तथा टी.एस. दूतियन, ऐजरा पाउण्ड, लॉरिन्स आदि से प्रभावित हुआ।
2. प्रयोगवादी कवि यथार्थवादी कवि होने के साथ-2 भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता को विशेष रूप से ग्रहण करते है। कवि मध्यम वर्गीय व्यक्ति जीवन की समुचिकुण्ठा, पराजय, मानसिक संघर्ष तथा जड़ता को बड़ी बौद्धकता के साथ प्रकट करते है।
3. प्रयोगवादी काव्य महान संघर्षो तक जीवन प्रसंगों से न जुड़कर व्यक्ति के अन्तः संघर्षो और मन की विविध स्थितियों के प्रति प्रतिबद्ध होकर छोटी, तीव्र तथा प्रभावशील कविओं का समूह बना।
4. इसने लघु मानव के प्रति साहनुभूति का मार्ग अपना पाया।

- प्रयोगवाद के अगुआ कवि 'अज्ञेय' को प्रयोगवाद का प्रवर्तक कहा जाता ह।
- इस तरह की कविताओं को सबसे पहले नन्ददुलारे वाजपेयी ने प्रयोगवादी कविता कहा।

प्रयोगवाद के रचना एवं रचनाकार

1. **रचना** शेखर एक जीवनी, असाध्य वीणा नदी के दीप (कविता)
   रचनाकार 'अज्ञेय' (सच्चिदानंद हीरानंद वाहयायन अज्ञेय)

नई कविता (1951 – 1960) :–

1. नयी कविता भारतीय स्वतंत्रता के बाद लिखी गई। उन कविता को कहा जाता है। जिनमें परम्परागत कविता से आगे नए भाव बोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नए मूल्यों एवं नए शिल्प विधान का अन्वेषण किया गया।
2. 'अज्ञेय' को नयी कविता का भारतेन्दु कहे सकते है।
3. आम तौर पर दूसरा सप्तक और तीसरा सप्तक के कविओं को नयी कविता के कविओं में शामिल किया जाता है।
4. नयी कविता के रचनाकारों पर दो वाद या विचार धाराओं का प्रभाव विशेष रूप से पड़ा
   1. अस्तित्ववाद 2. आधुनिकवाद
5. अस्तित्ववाद एक आधुनिक दर्शन है। जिसमें यह विश्वास किया जाता है। कि मनुष्य के अनुभव महत्वपूर्ण होते है। और प्रत्येक कार्य के लिए वह स्वयं उत्तरदायी होते है।
6. आधुनिकतावाद का सम्बन्ध पूंजीवाद विकास से है।

नवगीत– नयी कविता के समय जो गीत लिखे गये इनमें छायावाद के गीतो से तीव्र वैक्तिक्ता नहीं होती।

लंबी कविता – लंबी कविता छायावाद में विकसित हुआ एक विशेष काव्यरूप है। दरअसल 19वीं सदी के अंत और 20 वी सदी की शुरूआत में गद्य का तीव्र विस्फोट हुआ और उसने कविता के सामने एक चुनौती प्रस्तुत की। विचार पर निबंध ने अपना दावा जताया। वर्णन पर उपन्यास और कहानी ने तो घटना व्यवहार पर नाटक ने की।

विशेषताएँ –

1. नयी कविता जीवन के हर क्षण को सत्य ठहराती हैं
2. नयी कविता की वाणी अपने परिवेश के जीवन अनुभव पर आधारित है।
3. नयी कविता मानव तत्व को स्वीकार करती है।
4. नयी कविता में जीवन मूल्यों की पुनः परीक्षा की गयी है।

''यदि छायावादी कविता का नायक महामानव था, प्रगतिवादी कविता का नायक शोषित मानव तो नयी कविता का मानव लघु मानव है।''

अज्ञेय – नयी कविता
गजानन – माधव मुक्ति बोध – ब्रह्म राक्षस, अंधेरे में,
[जन्म श्योपुर (म.प्र.)] चांद का मुँह टेढ़ा

11. **समकालीन कविता** – (1960 – आजतक)

तारसप्तक – पहला तार सप्तक 1943 का है।

कवि – अज्ञेय, मुक्तिबोध, गिरिजा कुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, भारत भूषण अग्रवाल, नेमीचन्द्र जैन, राम विलास शर्मा।

दूसरा तार सप्तक (1951) :–

कवि – रघुवीर सहाय
धर्मवीर भारती
भवानी प्रसाद मिश्र, नरेश मेहता, रामशेर बहादुर सिंह, शकुन्तला माथुर व हरिनारायण दास।

तीसरा तार सप्तक (1959) :–

केदार नंद सिंह
विजय देव नारायण साही, सर्वेश्वर दयाल सक्सैना, कीर्ति चौधरी, प्रयोग नारायण त्रिपाठी, केदारनाथ सिंह, कुवंर नारायण।

चौथा तार सप्तक (1979) :–

सुमन राजे, राज कुमार कुम्भज

नोट – महत्वपूर्ण तथ्य

प्रमुख दर्शन या मत –

1. अदैतवाद	–	शंकराचार्य
2. द्वैतवाद	–	माधवाचार्य
3. विशिष्ट दैतवाद	–	रामानुजाचार्य
4. द्वैताद्वेतवाद	–	निम्बिकाचार्य
5. शुद्ध द्वैतावाद	–	बल्लभाचार्य

गुरू शिष्य परम्परा –

'शिष्य'		'गुरू'
1. शंकराचार्य	–	गोविन्द योगी
2. गोरवनाथ	–	मच्छदर नाथ
3. निम्बिकाचार्य	–	नारद मुनि
4. कबीरदास	–	रामानन्द
5. सूरदास	–	बल्लभाचार्य
6. मीराबाई	–	रैदास
7. तुलसीदास	–	बाबा नरहरिदास

वर्णमाला

1. वर्णमाला का अर्थ है 'प्रकार' जो भाषा की सबसे छोटी इकाई है। इसके पहले यह ध्वनि के रूप मे था।

2. अब दो या दो से अधिक वर्णो को मिलकर शब्द बनाया गया और दो या दो से अधिक शब्दो को मिलाने पर वाक्य की रचना हुई जिसमें सार्थकता उत्पन्न हो गयी। दो या दो से अधिक वाक्यों का संग्रह एक गद्यांश को जन्म देता है। दो या दो से अधिक गंद्याशो का संग्रह गद्य या पद्य के रूप में पाठ निर्मित करता है।

3. पाठों के संग्रह से पुस्तक की रचना होती है, जो कि हमे विषयानुकूल ज्ञान की प्राप्ति कराती है।

वर्ण- भाषा कि सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। और इस ध्वनि को वर्ण कहते है। वर्ण दो प्रकार के होते है-

1. स्वर वर्ण
2. व्यंजन वर्ण

1. स्वर वर्ण - जो वर्ण एक ही उच्चारण करने पर एक ही प्रकार की ध्वनि बनाता है। वह स्वर वर्ण कहलाते है।

जैसे - अ, इ, उ (प्राकृतिक स्वर)

मूलतः स्वरों की संख्या 11 है, यदि अं, अः (अयोगवाह) को शामिल कर दिया जायें तो स्वरों की संख्या 13 हो जाती है।

उदाहरण :-
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ - मूल स्वर ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः

स्वरों का वर्गीकरण -

1. **ह्रस्व स्वर** - जिनके उच्चारण मे कम समय लगता है। वह ह्रस्व स्वर कहलाते है।
जैसे - अ, इ, उ

2. **दीर्घ स्वर** - जिनके उच्चरण में ह्रस्व स्वरों से दुगना समय लगता है वे स्वर दीर्घ स्वर होते है
जैसे - आ, ई, ऊ, ऐ, ओ, औ

3. **प्लुत स्वर** - जिन वर्णो के उच्चारण मे स्वर वर्गो से कई गुना ज्यादा समय लगता है। उन्हे प्लुत स्वर कहते है।
जैसे - रा ऽऽऽऽऽ म
ओ ऽऽऽऽऽ म

विशेष :-
1. संस्कृत में स्वर कुल 13 है उदाहरण लृ, ऋ
प्रकृतिक स्वर तीन होते है -
अ, इ, उ

व्यंजन- जिन वर्णो के उच्चारण में दो ध्वनियाँ सुनाई पड़ती है, वे व्यंजन वर्ण कहलाते है।

⇒ व्यंजन वर्ण क, च, ट, त, प वर्ग समूह में होते है।

क वर्ग	-	क ख ग घ ङ
च वर्ग	-	च छ ज झ ञ
ट वर्ग	-	ट ठ ड़ ढ़ ण
त वर्ग	-	त थ द ध न
प वर्ग	-	प फ ब भ म

नोट :- .....
अंतस्थ व्यंजन - य, र, ल, व
संघर्षी/ऊष्म व्यंजन - श, स, ष, ह
संयुक्त व्यंजन - क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

संयुक्त व्यंजनों का निर्माण :-
क्ष (क् + ष्) त्र (त् + र्) ज्ञ (ज् + ञ्) श्र (श् + र्)

व्यंजनों का वर्गीकरण -

1. **स्पर्श व्यंजन** - जिन व्यंजन वर्णो का उच्चारण करते समय वायु की टकराहट, कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ - को छूती हुई निकले वो स्पर्श व्यंजन कहलाते है।

स्पर्श व्यंजनों का उच्चारण स्थान -
कंठ - क ख ग ज ङ
तालू - च छ ज झ ञ
मूर्धा - ट ठ ड़ ढ़ ण
दंत - त थ द ध न
ओष्ठ - प फ ब भ म

अघोष वर्ण - जिन ध्वनियों के उच्चारण में उच्चारण तन्त्र कम्पित न हो।

जैसे - प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा व्यंजन
क ---- च, छ ---- ट, ठ ---- त, थ --- प, फ
क वर्ग ---- च वर्ण --- ट वर्ण --- त वर्ग --- प वर्ग

सघोष वर्ण - जिन वर्णो के उच्चारण में कम्पन्न हो वे वर्ण सघोष या घोष वर्ण कहलाते है।

जैसे - प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, चौथा व पांचवा वर्ण।
अल्प प्राण वर्ण - जिन व्यंजनों के उच्चारण से मुख से कम हवा निकलती है, वे अल्प प्राण कहलाते है।

जैसे - प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा वर्ण
महाप्राण वर्ग - जिन व्यंजनों के उच्चारण में अधिक वायु मुख से निकलती है, वे महाप्राण वर्ण व्यंजन कहलाते है।

जैसे - प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा व्यंजन

2) **अन्तःस्थ व्यंजन** - जिन वर्गो का उच्चारण वर्णमाला के बीच अर्थात् (स्वरों और व्यंजनो) के बीच होता हो, वे अंतस्थः व्यंजन कहलाते है।

3) **ऊष्म या संघर्षी व्यंजन** - जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय वायु किसी स्थान विशेष पर घर्षण करती हुई या रगड़ती हुई बाहर निकले जिससे गर्मी पैदा हो।

जैसे - श, स, ष, ह

4) **अक्षित/द्विगुण व्यंजन** - वर्णमाला में जो वर्ण शब्दों के रूप में नीचे अनुस्वार बिन्दु के साथ प्रयोग के रूप में लाए जाते है, वे द्विगुण व्यंजन कहलाते है।

इनमें जीभ पहले ऊपर उठती है, फिर जीभ मूर्धन्य उच्चारण पर आ जाती है।
जैसे - ड़, ढ़

5) **संयुक्त व्यंजन** - वर्णमाला में ऐसे व्यंजन वर्ण जो दो अक्षरों को मिलाकर बनाए गए है, वो संयुक्त व्यंजन कहलाते है।
जैसे - क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

विशेष :- वाह वर्ण अं और अः कहलाते हैं क्योंकि इन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण को प्रयोग में नही लाया जाता है। अर्थात् इनका भी स्वतंत्र उच्चारण होता हैं।

शब्द-शक्ति

मनुष्य अपने मनोगत विचारों को दूसरो पर जिस भाषा के माध्यम से लिखकर या बोलकर प्रकट करते है, वह भाषा शब्दों के समूह से मिलकर बनती है।

शब्द दो प्रकार के होते है -

1. सार्थक **2. निरर्थक**

साहित्य या काव्य में सार्थक शब्द ही अपेक्षित है। सार्थक शब्द के कई अर्थ साहित्यिक दृष्टि से निकलते है जैसे :- वाचक, लक्षण और व्यंजक। ये तीन सार्थक शब्द है।

शब्द के विभिन्न अर्थ बताने वाले व्यापार अथवा साधन को शब्द शक्ति कहते है। यह तीन प्रकार की होती है।

1. अभिधा शक्ति - जिस शब्द के श्रवण मात्र से उसका परस्पर प्रसिद्ध अर्थ सरलता से समझ में आ जाए उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते है।

जैसे:-

बैल बडा उपयोगी पशु है।
रमेश के कान में पीड़ा है।

इन वाक्यों में बैल का अर्थ पशु विशेष और कान का अर्थश्रवण इन्दियों से ही होता है, जो इन शब्दों के प्रचलित अर्थ है।

2. लक्षणा शक्ति - लक्षणा शक्ति, शब्द के वाच्यार्थ या मुख्यार्थ से भिन्न है परन्तु उनके समान अन्य अर्थ को प्रकट करती है। जब किसी शब्द का अभिधा के द्वारा मुख्यार्थ का बोध नही हो पाता अथवा मुख्यार्थ समझने में बाधा हो जाती है तब उस शब्द के अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति को लक्षणा शक्ति कहते है।

जैसे- सुदेश बैल है।
रमेश के कान नही है।

इन वाक्यों में सुदेश मनुष्य है पशु नही हैं किन्तु उसे बैल कहने का तात्पर्य है बैल के समान बुद्धि शून्य है जो दूसरे के नियंत्रण में रहा है। इसी प्रकार रमेश के कान नही है इसका मतलब होता है कि वह सुनता नही है। यहां उक्त शब्दों का अर्थ अभिधा शक्ति द्वारा प्रकट न हो कर लक्षणा शक्ति द्वारा प्रकट होता है।

3. व्यंजना शक्ति :- जब अभिधा और लक्षणा से अर्थ व्यक्त नहीं होता है तब व्यंजना शब्द शक्ति की सहायता से व्यंग्यार्थ निकलता है इसको ध्वनि कहते है। श्रेष्ठ कवियों और साहित्यकारों की रचनाओं में ध्वनि के कारण ही विशेष चमत्कार होता है।

जैसे - गंगा में घर है।

इसका तात्पर्य है कि गंगा के समान घर की पवित्रता है।

इन्दौर म.प्र. की मुंबई है।

इसमें मुंबई शब्द में ऐश्वर्य छिपा है, सम्पन्नता की जो ध्वनि है वही इंदौर के लिए भी प्रतीत होती है।

शब्द गुण

कविता कामिनी को अंलकारों से सुसज्जित करके भी विद्वानों ने उसके आन्तरिक रूप को ही महत्व दिया है। अलंकार, छंद, से काव्य का बाहय रूप, सुसज्जित है किन्तु सुन्दर संजीला तन भावपूर्ण मन के बिना तथा गुण रहित होने से व्यर्थ होता। है अतः मानवोचित गुणों के अनुकूल ही काव्य गुण भी होते है।

आचार्य दण्डी ने 10 काव्य गुणों का उल्लेख किया है और भोज ने 24 गुणों का। किन्तु साहित्य में काव्य के तीन गुण ही प्रमुख माने गए है। उसी वर्गीकरण के अन्तर्गत इन्ही तीनों में अन्य सभी गुण समाहित कर लिए है।

मुख्य तीन गुण :-

(1) माधुर्य गुण (2) ओज गुण (3) प्रसाद गुण

1. मधुरता के भाव को माधुर्य कहते है मिठास अर्थात् कर्ण प्रियता ही इसका मुख्य भाव है जिस काव्य के श्रवण से आत्मा द्रवित हो जाए और कानों में मधु घुल जाए वही माधुर्य गुण युक्त है। यह गुण विशेष रूप से श्रृंगार, शांत एवं करूण रस में पाया जाता है।

माधुर्य गुण की विशेषताऐ :-

2. कठोर वर्ण यानि सम्पूर्ण ट वर्ण (ट, ठ, ड़, ढ़, ण) के शब्द नही होने चाहिए।
3. अनुनासिक वर्णो से युक्त असत्य दीर्घ संयुक्त अक्षर नही होने चाहिए।
4. लम्बे-लम्बे सामायिक पदों का प्रयोग भी वर्जित है।
5. कोमलाकांत, मृदु पदावली एवं मधुर वर्णो (क, ग, ज, द) का प्रयोग होना चाहिए।

उदा.

अ. छाया करती रहे सदा, तुझ पर सुहाग की छाँह।
सुख-दुख में ग्रीवा के नीचे हो, प्रियतम की बाँह।।

ब. बसो, मोरे नैनन में नंदलाल।
मोहिनी सूरत, साँवरी सूरत नैना बने बिसाल।।

2. ओज गुण :-

जिस काव्य रचना को सुनने से मन में उत्तेजना पैदा होती है उस कविता में ओज गुण होता है। ओज का सम्बन्ध चित्त की उत्तेजना वृत्ति से है। इसलिए हृदय जिस काव्य के पढ़ने से या सुनने से हृदय में उत्तेजना आ जाती है, वही ओज गुण प्रधान रचना होती है। वीर रस रचना के लिए इस गुण की आवश्यकता होती है इस गुण को उत्पन्न करने के लिए विद्वानों ने निम्न गुणों का विधान किया है :-

1. रचना की शैली एवं शब्द योजना दोनों का ही सुगठित एवं सुनियोजित होना आवश्यक है।
2. पंक्ति अथवा छंद की रचना में कही भी शिथिलता होना नही चाहिये
3. रचना में कठोर वर्ण एवं ट वर्ण का आधिक्य होना चाहिए।
4. लम्बे-लम्बे समासों से युक्त शब्द का प्रयोग होना चाहिए। अधिकाधिक संयुक्त अक्षरों का प्रयोग होना चाहिए।

उदाहरण -

1. महलों ने दी आग, झोपडियों में ज्वाला सुलगाई थी।
वह स्वतंत्रता की, चिनगारी, अन्तरतम से आई थी।।
2. हिमाद्री तुंग श्रृंग पर, प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयंप्रभा समुज्वला, स्वतंत्रता पुकारती।।

3. **प्रसाद गुण** :- प्रसाद का अर्थ है प्रसन्नता या निर्मलता। जिस काव्य को सुनते या पढ़ते समय पर हृदय पर छा जाए और बुद्धि शब्दों के दुरूह जाल में या क्लिष्ट कलुषता में मलिन न होकर एकदम प्रवाहित हो जाए, मन में खिल जाए, उसे प्रसाद गुण कहते है।

सभी रसों की रचना प्रसाद गुण से युक्त हो सकती है क्योंकि यह सीधे हृदय पर छाप छोड़ता क्योंकि यह अधिक समय तक प्रभावशाली रह सकता है।

उदहारण :-

1. हे प्रभो। आनंद दाता ज्ञान हमको दीजिए।
2. आशीषों का ऑचल भरकर, प्यारे बच्चों लाई हूँ। युग जननी में भारत माता द्वार तुम्हारे आई हूँ।
3. तन भी सुन्दर, मन भी सुन्दर। प्रभू मेरा जीवन हो सुन्दर।

व्याकरण

संज्ञा

संज्ञा - भाषा मे संज्ञा को नाम भी कहते है। किसी प्राणी, वस्तु, भाव आदि का नाम भी उसकी संज्ञा कहलाती है। जिससे उसकी पहचान बनती है।

उदाहरण -

(1) मोहन स्कूल जा रहा है।
(2) आम में मिठास है।

संज्ञा के भेद - संज्ञा के पाँच भेद होते है।

(1) **व्यक्तिवाचक संज्ञा** - जो शब्द किसी स्थान, व्यक्ति, वस्तु आदि का बोध कराती है। व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाती है

उदाहरण-

(1) देशों के नाम - भारत, श्रीलंका, जापान
(2) नदियो के नाम - गंगा, यमुना
(3) व्यक्तियों के नाम - राम, श्याम, सीता
(4) शहरों के नाम - ग्वालियर, भोपाल
(5) पुस्तकों के नाम - रामायण, महाभारत

(2) **जातिवाचक संज्ञा**- जातिवाचक संज्ञा से व्यक्तियों या वस्तुओं की पूरी जाति का बोध होता है।

उदाहरण-

(1) मनुष्य - लड़का, लड़की, भाई, बहन
(2) पशु पक्षी - गाय, घोड़ा, मोर
(3) वस्तुओं के नाम - घर, घड़ी, कुर्सी, मेज
(4) पदो या व्यक्तियों के नाम - शिक्षक, लेखक, मंत्री

(3) **द्रव्यवाचक संज्ञा**- द्रव्य वाचक संज्ञा से उस द्रव्य या पदार्थ का बोध होता है जिसे हम माप या तौल सकते है।

उदाहरण

(1) वस्तुओ तथा खनिजों के नाम - लोहा, चाँदी, सोना, दूध, पानी, घी, तेल।

(4) **समूहवाचक संज्ञा** - जिस संज्ञा से अनेक वस्तुओ या प्राणियों का बोध होता है उसे समूहवाचक संज्ञा कहते है।

उदाहरण-

(1) व्यक्तियों का समूह - परिवार, संघ, सेना झुण्ड।
(2) वस्तुओं का समूह - गुच्छा, पुंज, ढेर, शृंखला

(5) **भाववाचक संज्ञा** - भाववाचक संज्ञा उस नाम को कहते है जो किसी का भाव, दशा, धर्म, गुण या कार्य का बोध कराए। भाववाचक संज्ञा की गणना नही कर सकते। जैसे (क्रोध या लोभ की गणना कोई नही कर सकता)

उदाहरण-

(1) क्रोध, लोभ, मोह, आनंद, यौवन, शैशव, धैर्य, वीरता, लिखाई, पढ़ाई, बुढ़ापा।

लिंग

लिंग- संज्ञा के जिस शब्द से यह बोध हो कि वह संज्ञा स्त्री जाति की है, या पुरूष जाति की, इस विशेषता को लिंग कहते है

हिन्दी में दो प्रकार के लिंग वचन माने गये है।

(1) पुल्लिंग
(2) स्त्रीलिंग

(1) **पुल्लिंग** - पुरूष जाति का बोध कराने वाली संज्ञा शब्दो को, पुल्लिंग कहते है।

उदाहरण-

(1) मोहन खाना खाता है। - इसमें मोहन लड़का है और वह पुरूष जाति का बोध कराने के कारण पुल्लिंग है।

(2) **स्त्रीलिंग** - स्त्री जाति का बोध कराने वाली संज्ञा शब्दो को स्त्री लिंग कहते है।

उदाहरण-

(1) सीता गाती है। - इसमे सीता लड़की है और वह स्त्री जाति का बोध कराती है।

वचन

वचन - संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से एक या एक से अधिक का बोध होता है, उसे वचन कहते है।

वचन दो प्रकार के होते हैं

(1) एक वचन
(2) बहुवचन

(1) **एकवचन** - शब्द के जिस रूप में केवल एक का बोध होता है उसे एक वचन कहते है

उदाहरण-

(1) घोड़ा दौड़ता है।
(2) बालक पढ़ता है।

(2) **बहुवचन** - शब्द के जिस रूप से एक से अधिक का बोध होता है उसे बहुवचन कहते है।

उदाहरण-

(1) बालक पड़ते हैं।
(2) बालक खेलते हैं।
(3) वे जाते हैं।

कारक

कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ जाना जाए, उसे कारक कहते है। वाक्य मे प्रयुक्त शब्द आपस में संबंधित होते है। क्रिया के साथ संज्ञा का सीधा संबंध ही कारक है। कारक को प्रकट करने के लिए संज्ञा और सर्वनाम के साथ जो चिह्न लगाये जाते है, उन्हे विभक्तियाँ कहते है।

उदाहरण - पेड़ पर फल लगते हैं।

इस वाक्य में पेड़ कार्यकीय ''पद'' है और ''पर'' कारक सूचक चिह्न तथा विभक्ति है।

हिन्दी में कारक आठ माने गये है।

क्र.	कारक	-	विभक्ति
1.	कर्ता	-	ने
2.	कर्म	-	को
3.	करण	-	से, के द्वारा (साधन/उपकरण)
4.	सम्प्रदान	-	को, के, लिए, हेतु (उद्देश्य)
5.	अपादान	-	से (अलग होने के अर्थ में)
6.	सम्बन्ध	-	का, की, के, रा, री, रे
7.	अधिकरण	-	में, पर
8.	सम्बोधन	-	हे, ! अरे, ! ऐ, ! ओ, ! हाय !

(1) **कर्ता कारक** - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का बोध हो, उसे कर्ता कारक कहते है। उसका चिह्न (ने) कभी कर्ता के साथ लगता है। कभी नहीं।

उदाहरण (1) रमा ने पुस्तक पढ़ी।
(2) मोहन खेलता हैं।

(2) **कर्म कारक** - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप पर क्रिया का प्रभाव या फल पड़े, उसे कर्म कारक कहते है। कर्म के साथ ''को'' विभक्ति आती हैं। इसकी पहचान होती है कभी-कभी ''को'' विभक्ति का इस्तेमाल नही होता।

उदाहरण (1) उसने श्याम को पढ़ाया।
(2) राहुल ने चोर को पकड़ा।

विशेष :- कारक का प्रयोग हो 'कहना' व ''पूछना'' के साथ ''से'' का प्रयोग होता है ''को'' का नही।

उदाहरण (1) राम ने रहीम से कहा।
(2) मोहन ने श्याम से पूछा।

(3) **करण कारक** -जिस साधन से अथवा जिसके द्वारा क्रिया पूरी की जाती है उसे संज्ञा का करण कहते है इसकी मुख्य पहचान ''से अथवा के द्वारा'' है।

उदाहरण (1) श्याम गेंद से खेलता है।
(2) आदमी चोर को लाठी द्वारा मारता है।

(4) **सम्प्रदान कारक** - जिसके लिए क्रिया की जाती है, उसे सम्प्रदान कारक कहते है। इसकी मुख्य पहचान ''के लिए'' है।

उदाहरण (1) कमल मोहन के लिए बॉल लाता है।
(2) हम पढ़ने के लिए स्कूल जाते हैं।

(5) **अपादान कारक** - अपादान का अर्थ है अलग होना। जिस संज्ञा अथवा सर्वनाम से जिस वस्तु का बोध अलग होना ज्ञात हो, उसे अपादन कारक कहते हैं इसकी पहचान भी ''से'' है।

उदाहरण (1) घुडसवार घोड़े से गिरता है।
(2) हिमालय से गंगा निकलती है।
(3) वृक्ष से पत्ता गिरता है।

(6) **सम्बन्ध कारक** - जिस संज्ञा अथवा सर्वनाम से एक वस्तु का संबंध दूसरी वस्तु से जाना जाए, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं इसकी मुख्य पहचान ''का, की, के'' है।

उदाहरण (1) राम का घर दूर है।
(2) कमल की किताब लाओ।

(7) **अधिकरण कारक** - संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है उसे अधिकरण कारक कहते है। इसकी मुख्य पहचान है ''मे और पर''।

उदाहरण (1) घर पर माँ हैं।
(2) सड़क पर गाड़ी खड़ी हैं।
(3) घोंसले में चिड़िया हैं।

(8) **सम्बोधन कारक** - संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारने या सावधान करने का बोध हो, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं।

उदाहरण (1) खबरदार ! यहाँ मत आना।
(2) अरे ! रूको, उसे मत मारो।
(3) ऐ ! लड़के जरा इधर आ।

सर्वनाम

सर्वनाम - जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हे सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरण (1) मै, तुम, वह, यह, आप, कोई, इसका, उसका।

सर्वनाम के 6 भेद होते है।

(1) **पुरूषवाचक सर्वनाम** - पुरूष वाचक सर्वनाम पुरूषो के नाम के स्थान पर आते है पुरूष वाचक से पुरूष स्त्री दोनों का बोध होता है।
(1) उत्तम पुरूष
(2) मध्यम पुरूष
(3) अन्य पुरूष

(1) **उत्तम पुरूष** - बोलने वाले वक्ता को उत्तम पुरूष कहते है।

उदाहरण (1) मैं और हम।

(2) **मध्यम पुरूष** - सुनने वाले श्रोता को मध्यम पुरूष कहते है।

उदाहरण (1) तू, तुम और आप आदि

(3) **अन्य पुरूष** - अन्य जिसके सम्बन्ध में बात की गई हो।

उदाहरण (1) वे, ये, वह, यह आदि

(2) **निश्चयवाचक सर्वनाम** - निश्चयवाचक सर्वनाम से पास या दूर की वस्तु का निश्चित बोध होता है।

उदाहरण (1) यह अच्छा है।
(2) वे अच्छे है।
(3) वह बुरा है।

(3) **निजवाचक सर्वनाम** - निजवाचक सर्वनाम 'आप' कर्ता के विषय मे कुछ बताता है। पर वह स्वयं कर्ता नही होता है। पुरूषवाचक आप स्वयं ही कर्ता का काम करता है।

उदाहरण (1) आप आजकल कहाँ रहती हो।
(2) मै यह काम अपने आप ही कर लूँगा।

(4) **संबंधवाचक सर्वनाम**- जहाँ पर दो वस्तुओं अथवा व्यक्तियो का पारस्परिक संबंध प्रकट होता है, वहाँ संबंधवाचक सर्वनाम होता है।

उदाहरण (1) वह लड़का जो कल आया था, पढ़ने में तेज था।

(5) **अनिश्चियवाचक सर्वनाम** - जो सर्वनाम किसी ऐसे व्यक्ति या पदार्थ का बोध कराए, जिसका कोई पता, ठिकाना ज्ञात न हो अर्थात्, जिस सर्वनाम से किसी वस्तु या पदार्थ का निश्चित बोध न हो, उसे अनिश्चित वाचक सर्वनाम कहते है।

उदाहरण (1) कौन आया था?
(2) कुछ दे दो।
(3) घर में कुछ नही हैं।

(6) **प्रश्नवाचक सर्वनाम** - जिस सर्वनाम से प्रश्न का बोध होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते है।

उदाहरण (1) यह कौन है? जो मुझे जानता है।
(2) तुम कैसे आए?
(3) वह क्या चाहता है?

विशेषण

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। प्राणी, वस्तु, स्थान आदि के रूप, आकार, अवस्था, रंग, गणना आदि की दृष्टि से अनेक गुण होते है। इन सभी गुणो को व्यक्त करने में विशेषण पद सहायक होते है। अतः विशेषण का कार्य संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताना है।

उदाहरण (1) वहाँ चार लड़के बैठे थे।
(2) शीला उनकी लाड़ली बेटी है।
(3) राधा सुन्दर लड़की है।
(4) अध्यापक के हाथ में लम्बी छड़ी है।

विशेषण के साथ दो प्रमुख बाते जुड़ी होती है विशेष और प्रविशेषण। विशेष्य उस शब्द को कहते है जिसकी विशेषता बतलाई जाती है।

उदाहरण (1)

मोहन	बहुत	सुन्दर	बालक	है।
↓	↓	↓	↓	
संज्ञा	प्रविशेषण	विशेषण	विशेष्य	

यहाँ बालक विशेष्य है क्योकि सुन्दर शब्द उसकी विशेषण बतलाता है। कभी-कभी विशेषण की भी विशेषता बतानी होती है उस काम को प्रविशेषण सम्पन्न करता है। अर्थात् प्रविशेषण उस शब्द को कहते है जो विशेषण की विशेषता बतलाते।।

विशेषण के भेद - विशेषण के मुख्य रूप से 4 भेद है।

(1) **गुणवाचक विशेषण** - जिस विशेषण से किसी संज्ञा या सर्वनाम का गुण, दोष, रूप-रंग, आकार - प्रकार, सम्बन्ध, दशा आदि का पता चले, उसे गुण वाचक विशेषण कहते हैं।

उदा0 (1) सोहन **दुष्ट** लड़का है।
(2) वह **मोटा** आदमी इधर ही आ रहा है।
(3) श्याम **हरी** कमीज पहने है।

(2) **परिमाणवाचक विशेषण** - जिस विशेषण से संज्ञा के परिमाण का बोध होता हो, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते है।

उदा0 (1) मुझे **थोड़ी चाय** दे दो।
(2) मुझे **2 सेर** चावल दे दो।
(3) यह गाय **बहुत दूध** देती है।

इसके दो भेद होते है। जो इस प्रकार है।

(1) **निश्चित परिमाणवाचक विशेषण** - जिस विशेषण से किसी संज्ञा के निश्चित माप-तौल का बोध हो, उसे निश्चित परिमाण वाचक विशेषण कहते है।

उदा0 (1) दो मीटर कपड़े से मेरी कमीज बन जाएगी।
(2) बाजार जा रहे हो तो 1 किलो मिठाई ले आना।
(3) राहुल बाजार से 4 किलो सेब लाया है।

(2) **अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण** - जिस विशेषण से किसी संज्ञा का कोई निश्चित परिमाण ज्ञात न हो। उसे अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण कहते है।

उदा0 (1) कॉलेज के कुछ छात्र हड़ताल पर है।
(2) सभागार में बहुत आदमी थे।

(3) **सार्वनामिक विशेषण** - पुरूषवाचक या निजवाचक सर्वनाम को छोड़कर अन्य सर्वनाम जब किसी संज्ञा की विशेषताएँ बतलाएँ तो उन्हे सार्वनामिक विशेषण कहते है।

उदा0 (1) यह आदमी विश्वासी है।
(2) ऐ लड़के कहाँ जा रहे है।
(3) ऐसा आदमी तो देखा नही।
(4) मेरा घर इसी शहर मे है।

सर्वनाम विशेषण दो प्रकार के होते है :-

(1) **मौलिक सार्वनामिक विशेषण** - जो सर्वनाम अपनी विशेषता बतलाते है। उन्हे मौलिक सार्वनामिक विशेषण कहते है।

उदा0 (1) यह आदमी चोर है।
(2) ये लोग भले है।

(2) **यौगिक सार्वनामिक विशेषण** - जो सर्वनाम किसी प्रत्यय के योग से बनकर किसी संज्ञा की विशेषता बतलाते है। उन्हे यौगिक सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

जैसे -

उदा0 (1) ऐसा लड़का मिलना कठिन है।
(2) कैसा सामान लाए हो।
(3) तुम्हारे जैसा आदमी मैंने नही देखा।

अतिरिक्त - मेरा, तुम्हारा, आपका, कितना, उतना, इतना, अपना आदि भी यौगिक सर्वनाम है।

(3) **संख्यावाचक विशेषण** - जिस विशेषण से संज्ञा की संख्या का बोध हो, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे -

उदा0 (1) यहाँ तीन बालक और चार बालिकाएँ मौजूद हैं।
(2) तीसरा आदमी कहाँ गया।
(3) यहाँ हर एक आदमी ईमानदार है

इसके 5 भेद होते है-

(1) गणना वाचक (2) क्रम वाचक
(3) आवृत्ति वाचक (4) समुदाय वाचक
(5) प्रत्येक बोधक

(1) **गणना वाचक** - जो संख्या वाचक विशेषण पूर्णांक बोध और अपूर्णांक बोधक के रूप मे गिनने योग्य हो। उन्हे गणना वाचक कहते हैं।

जैसे - (1) दो आदमी जा रहे है। (पूर्णांक बोधक)
(2) आधा किलो दाल मिली है। (अपूर्णांक बोधक)

(2) **क्रमवाचक**- जो संख्या वाचक विशेषण संख्या के क्रमांक को सूचित करते है, उन्हे क्रम वाचक कहते है।

जैसे- (1) पहला, आदमी आगे रहेगा।
(2) सातंवा और आठवां आदमी एक-दूसरे के पीछे रहेगें।

(3) **आवृत्ति वाचक** - जो संख्यात्मक विशेषण किसी संख्या की आवृत्ति को सूचित करता है, उसे आवृति वाचक कहते है।

जैसे - (1) दुगना, तिगुना, चौगुना, दोबारा, तिबारा आदि।

(4) **समुदाय वाचक** - जो संख्यावाचक विशेषण समूह या समूदाय का बोध कराए, उसे समुदाय वाचक कहते हैं।

जैसे - (1) दोनों, तीनो, चारों।

(5) **प्रत्येक बोधक** - जो संख्या एक का बोध कराएँ, उसे प्रत्येक बोधक संख्या कहते है।

जैसे - (1) हरेक, प्रत्येक, एक-एक आदि।

क्रिया

क्रिया- जिन शब्दों से काम का करना या होना पाया जाए, उन्हे क्रिया कहते हैं। क्रिया से सदा कार्य का बोध होता है।

क्रिया तीन प्रकार के शब्दो से बनती है।

(1) धातु से - पढ़ना (पढ + ना)
(2) संज्ञा से - हथियाना (हाथ + आ + ना)
(3) विशेषण से - चिकनाना (चिकना + आ + ना)

रचना की दृष्टि से क्रिया दो प्रकार की होती है।

(1) रूढ़ (मूल) क्रिया (2) यौगिक क्रिया

(1) **रूढ़ (मूल) क्रिया** - रूढ़ क्रियाएँ वे है, जो धातु से बनती है क्योंकि धातु का अर्थ ही 'मूल' है।

जैसे- खाना, खाया, खाती, खाऊँ, खाए, खाऊँगा, खायेगा आदि में एक धातु निश्चित अनिश्चित विद्यमान है। 'खा' इसी से सब क्रिया रूप बने है। इसी प्रकार देख, देखा, देखे, देखकर, देखू, देखूगी।

(2) **यौगिक क्रिया** - यौगिक क्रियाऐं वे है, जो एक से अधिक तत्वों से बनती है।

जैसे -

(1) खाना से खिलाना, पीना से पिलाना, देख-देखना,पढ़ना-पढ़वाना आदि।

यौगिक क्रियाएँ 4 प्रकार की होती है

(1) **प्रेरणार्थक क्रियाएँ** - जब कर्ता किसी कार्य को स्वयं न करके किसी दूसरे को कार्य करने की प्रेरणा दे तो उस क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते है।

जैसे -

(1) गोविन्द ने राम को जगाया।
(2) गोविन्द ने राम को जगवाया। (प्रेरणार्थक क्रिया)

(2) **संयुक्त क्रियाएँ** - वे क्रियाएँ जो किसी क्रिया अथवा संज्ञादि शब्द के साथ दूसरी क्रिया का योग करने से बनती है उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

(3) **अनुकरणात्मक क्रियाएँ** - किसी वास्तविक या कल्पित ध्वनि के अनुकरण में हम क्रियाएँ बना लेते है। **जैसे -**

(1) खटखट से खटखटाना, भनभन - भनभनाना, थरथर - थरथराना, सनसन - सनसनाना, थप-थप से थपथपाना।

(4) **नाम धातु क्रियाएँ** - जो धातु संज्ञा या सर्वनाम विशेषण से बनती है। उसे नाम धातु कहते है।

जैसे -

(1) हाथ-हथियाना, बात - बतियाना, गर्म-गर्माना, ठण्डा-ठण्डाना।

सकर्मक और अकर्मक क्रियाएँ -

जिन क्रियाओं के प्रयोग में कर्म की अवश्यकता नही होती है, उन्हे अकर्मक तथा जिन क्रियाओं में कर्म की आवश्यकता होती है, उन्हे सकर्मक क्रियाएँ कहते हैं।

उदा0 (1) मैं गया। (2) मै सोता हूँ। (3) पक्षी उड़ते हैं।

इन वाक्यों में कर्ता और क्रिया ही है तो अभी वाक्य पूर्ण है इनमें कर्म की आवश्यकता नहीं है। अतः जाना, सोना, उड़ना अकर्मक क्रियाएँ है।

यदि प्रश्न यह उठता है कि, क्या खाता हूँ? किसको पीटा? क्या खाया इन वाक्यो मे कर्म की अपेक्षा है कर्म के बिना ये अपूर्ण है यह कर्म के साथ कहना होगा। में वेतन पाता हूँ। उसने लड़के को पीटा। उसने मिठाई खाई। सकर्मक क्रिया की यह पहचान है कि उसके साथ क्या, किसको लगाकर देखिए। यदि कोई उत्तर मिलता है। तो समझिये क्रिया सकर्मक हैं अन्यथा तो अकर्मक हैं।

	सकर्मक क्रियाएँ		अकर्मक क्रियाएँ
	उदाहरण		उदाहरण
1.	वह फुटबॉल खेल रहा है।	1.	वह खेल रहा है।
2.	वह पुस्तक पढ़ रहा है।	2.	वह पढ़ रहा है।
3.	नौकर पानी भरता है।	3.	कुँआ भरता है।
4.	लड़का रस्सी को ऐंठ रहा है।	4.	रस्सी ऐंठती है।

वह धातु जो अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में प्रयुक्त होती है। वह द्विविध या उभयविध कहलाती है।

1) **द्विकर्मक क्रियाएँ** - कई सकर्मक क्रियाओं के साथ दो कर्मो की अपेक्षा होती है।

जैसे-श्याम ने राम को पुस्तक पढ़ाई।

वाच्य

वाच्य क्रिया के उस रूपान्तरण को कहते हैं। जिससे कर्ता, कर्म और भाव के अनुसार क्रिया के परिवर्तन ज्ञात होते है।

जैसे - रमा पुस्तक पढ़ती है।
पुस्तक पढ़ी जाती हैं।

ऊपर के वाक्यों में उनकी क्रियाएँ क्रमशः कर्ता, कर्म और भाव के अनुसार है। पहले वाक्य में रमा कर्ता है और उसके अनुसार क्रिया पढ़ती है। दूसरे वाक्य में कर्म उसके अनुसार क्रिया है 'पढ़ी जाती है' पुस्तक के अन्तिम वाक्य में पढ़ा नही जाता है, से न पढ़ने का भाव स्पष्ट है। अतः यहाँ क्रिया भाव के अनुसार है।

वाच्य के तीन भेद होते है -

(i) कर्तृवाच्य (ii) कर्मवाच्य (iii) भाववाच्य

(1) **कर्तृवाचक** - जिस वाक्य में क्रिया कर्ता के अनुसार हो, उसे कर्तृवाच्य कहते है

कर्ता (कर्ता के अनुसार क्रिया)
↑ ↑

उदा. 1 राम पत्र लिखता है।
उदा. 2 सीता पुस्तक पढ़ती है।

(2) **कर्मवाच्य** - जिस वाक्य में क्रिया कर्म के अनुसार हो, उसे कर्म वाच्य कहते हैं।

कर्म (कर्म के अनुसार क्रिया)
↑ ↑

उदा. 1 पत्र लिखा जाता है।
उदा. 2 पुस्तक पढ़ी जाती है।

(3) **भाववाच्य** - जिस वाक्य में क्रिया कर्ता और कर्म को छोड़कर भाव के अनुसार हो, उसे भाववाच्य कहते हैं।

उदा. 1 उससे बैठा नही जाता है।
उदा. 2 राम से खाया नही जाता है।

नोट :- कर्तृवाच्य में सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाएँ होती है।

1. कर्म वाच्य में क्रिया केवल सकर्मक होती है। क्रिया का लिंग, वचन और पुरूष कर्म के अनुसार होता है।
2. कर्म वाच्य का प्रयोग विधान और निषेध दोनों स्थितियों में होता है।
3. भाव वाच्य में क्रिया प्रायः अकर्मक होती है। इसकी क्रिया सदा एक वचन, अन्य पुरूष और पुल्लिंग में होती है। इसमें असमर्थता और निषेध होने से वाक्य प्रायः नकारात्मक होता है।

काल

काल क्रिया के उस रूपान्तर को कहते है। जिससे क्रिया के व्यवहार और उसकी पूर्ण या अपूर्ण अवस्था का बोध होता है। समय का बोध जैसे-

(1) राम घर जाता है (वर्तमान)
(2) राम घर गया। (भूत काल)
(3) राम घर जाएगा। (भविष्य काल)

काल के भेद - काल तीन प्रकार के होते है :-

1) वर्तमान काल
2) भूतकाल
3) भविष्यकाल

1) **वर्तमान काल** - जिस क्रिया से कार्य के वर्तमान समय में सम्पन्न होने का बोध है, उसे वर्तमान काल कहते है।

जैसे -

1) मैं बाजार जाता हूँ।
2) तुम बाजार जाते हो।
3) वह बाजार जाता है।

वर्तमान काल के भेद - वर्तमान काल के 5 भेद है :-

1) **सामान्य वर्तमान काल** - जिस क्रिया का होना या करना वर्तमान समय से ही मालूम हो, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते है।

जैसे -

1) वह जाता है।
2) वह जाती है।
3) मै जाता हूँ।
4) तुम जाते हो।

2) **पूर्ण वर्तमान काल** -जिसमें क्रिया के होने या करने की पूर्णतः का बोध वर्तमान काल में हो, उसे पूर्ण वर्तमान काल कहते है

जैसे -

1) इसने खाया है।
2) मोहन ने पढ़ा है।

3) **तात्कालिक वर्तमान काल** - जिस क्रिया मे कार्य के होने या करने की निरन्तरता वर्तमान समय मे मालूम हो, उसे तात्कालिक वर्तमान काल कहते है।

इसमे क्रिया का वर्तमान काल में लगातार होते रहने का बोध होता है।

जैसे -

1) मैं जा रहा हूँ।
2) वह आ रहा है।

4) **सन्दिग्ध वर्तमान काल** -जिस क्रिया से कार्य होने या करने में सन्देह प्रकट हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते है।

उदा.

1) राजेश पढ़ाता होगा।
2) मोहिनी खाती होगी।

5) **सम्भाव्य वर्तमान काल** – जिस क्रिया से कार्य के होने या करने की सम्भावना का बोध हो, उसे सम्भाव्य वर्तमान काल कहते है।

उदा.
1) देखो घर पर वह आया है।
2) रमा बाजार गई होगी।

2) **भूतकाल** – जिससे क्रिया के व्यापार की समाप्ति का बोध हो उसे भूतकाल कहते है।

उदा.
1) राम घर गया था।
2) सोहन मेरे यहाँ आया था।

भूतकाल के भेद – भूतकाल के छः भेद है।

1) **सामान्य भूतकाल** – क्रिया के जिस रूप से साधारणः काम का बीते हुए समय में होना पाया जाए उसे सामान्य भूतकाल कहते है। उदा.

2) **आसन्न भूतकाल** – जब काम भूतकाल मे प्रारम्भ होकर अभी-2 समाप्त हुआ हो वहाँ आसन्न भूतकाल होता है।

उदा. 1. उसने लड़ाई की।
2. अभी-2 राधा सो गई है।
3. राम अभी आया है।

3) **पूर्ण भूतकाल** – जब कार्य भूतकाल में ही पूरा हो जाए। तो उसे पूर्ण भूतकाल कहते है।

उदा. 1. रेलगाड़ी आयी थी।
2. वर्षा हुई थी।
3. वह मेरे यहाँ आया था।

4) **अपूर्ण भूतकाल** – इसमें कार्य की समाप्ति की अपूर्णता प्रकट होती है।

जैसे 1. लड़के आ रहे थे।
2. माया सो रही थी।

5) **संदिग्ध भूतकाल** – इसमे क्रिया के भूतकाल मे होने पर सन्देह किया जाता है।

जैसे –
1) शायद आपने देखा होगा।
2) आपने कहा होगा।

6) **हेतुहेतु मद् भूतकाल** – इसमें यह पता चलता है। कि क्रिया भूतकाल मे सम्पन्न हो सकती थी पर वह नही हो सकी। इसे हेतुहेतु मद् भूतकाल कहते है।

जैसे –
1) वह पढ़ता तो उत्तीर्ण हो जाता।
2) यदि वर्षा हो तो खेती नही सूखती।
3) यदि वह आता तो मैं जाता।

3) **भविष्य काल** – क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय का बोध हो उसे भविष्यकाल कहते है।

उदा.
1) राम खेलेगा।
2) कृष्ण वंशी बजाएगा।

इसके पहचान चिन्ह है। गा, गे, गी

भविष्य काल के भेद – भविष्य काल के 3 भेद होते है।

1) **सामान्य भविष्य काल** – भविष्य में होने वाली क्रिया के सामान्य भविष्यकाल कहते है।

उदा.
1) मैं खेलूँगा।
2) तुम पढ़ोगे।

2) **सम्भाव्य भविष्यकाल** – क्रिया के जिस रूप से भविष्य में कार्य होने की सम्भावना हो। उसे सम्भाव्य भविष्य काल कहते है।

उदा.
1) सम्भव है। कल राम आए।
2) शायद वह मान जाए।
3) सम्भवतः मैं नौकरी छोड़ दूँगा।

3) **सातत्य बोधक भविष्य काल** – जिस क्रिया रूप से भविष्य में भी कार्य के जारी रहने का बोध हो, उसे सातत्य बोधक भविष्यकाल कहते है।

उदा.
1) मैं आपके काम आता रहूँगा।
2) मैं रोज पुस्तकालय जाऊँगा।

अव्यय

जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन या विकार उत्पन्न न हो उन्हे अव्यय कहते है।

उदा. 1) अव्यय जब मैं जाऊँगा तब वह आएगा।

पहचान – धीरे, अब, वाह, आदि अव्ययो के प्रयोग के उदा. है।

उदा.
1) वाह अब सुनीता धीरे-धीरे चलने लगी है।
2) मैं भी आपके साथ जाऊँगा।
3) राम और श्याम सहोदर भाई है।

अव्यय के भेद – अव्यय के प्रमुख 4 भेद होते है :-
1) क्रिया विशेषण
2) सम्बन्ध बोधक
3) समुच्चय बोधक
4) विस्मय बोधक

1) **क्रिया विशेषण** – जिस अव्यय से क्रिया विशेषण या अन्य क्रिया विशेषण की विशेषता प्रकट हो, उसे क्रिया विशेषण अव्यय कहते है।

उदा.
1) राम धीरे-धीरे पढ़ता है।
2) वह कल अवश्य आएगा।
3) उसके पास पर्याप्त धन है।

क्रिया विशेषण के भेद –

1) रूप के आधार पर – तीन भेद है।
i) मूल क्रिया विशेषण
ii) यौगिक क्रिया विशेषण
iii) कारण क्रिया विशेषण

2) प्रयोग के आधार पर – तीन भेद है।
i) साधारण क्रिया विशेषण
ii) अनुबद्ध क्रिया विशेषण
iii) संयोजक क्रिया विशेषण

3) अर्थ के आधार पर – 4 भेद है।
i) स्थान वाचक क्रिया विशेषण
ii) काल वाचक क्रिया विशेषण
iii) परिमाण वाचक क्रिया विशेषण
iv) रीति वाचक क्रिया विशेषण

2) **सम्बन्ध बोधक अव्यय** – जिन अव्ययो से दो पदों के बीच परस्पर सम्बन्ध सूचित हो, उसे सम्बन्ध बोधक अव्यय कहते है।

जैसे –
i) पुरूषार्थ के बिना जीवन सम्भव नही।
ii) तुम्हारे बिना में कुछ नहीं।
(और, ताकि, किन्तु)

iii) **समुच्चय बोधक** - जो अव्यय दो पदों, दो उपवाक्यों या दो वाक्यो को परस्पर जोड़ते है, उन्हे समुच्चय बोधक अव्यय कहते है।

उदा.

1) ईमानदारी और परिश्रम उन्नति के लिए आवश्यक है।
2) परिश्रम करो ताकि जीवन सफल हो सके।

समुच्चय बोधक अव्यय के भेद -

1) समानाधिकरण बोधक अव्यय।
2) व्यधिकरण बोधक अव्यय।

iv) **विस्मय बोधक** - जो अव्यय हर्ष, उल्लास, शोक, दु:ख, घृणा आदि मनोभावो को सूचित करते है, उन्हे विस्मयादि बोधक अव्यय कहते है।

उदा.

1) वाह! क्या खुबसूरत गुलदस्ता है।
2) अरे ! तुम्हे अक्ल नही।
3) छि: छि: ! इतना घृणित व्यवहार।
4) ओह ! आप तो पास हो गए।

उपसर्ग

जो शब्दांश शब्दो के आदि में जुड़कर उनके अर्थ में कुछ विशेषता लाते है, वे उपसर्ग कहलाते है।

उपसर्ग- उप (समीप) + सर्ग (सृष्टि करना) का अर्थ है किसी शब्द के समीप आकर नया शब्द बनाना।

1. **संस्कृत के उपसर्ग** - उपसर्ग का निर्माण किसी शब्द के प्रारम्भिक भाग में जोड़कर किया जाता है।

उदाहरण

1.	अत्याधिक	-	अति + अधिक
2.	अनुचर	-	अनु + चर
3.	आगमन	-	आ + गमन
4.	आजीवन	-	आ + जीवन
5.	दुर्जन	-	दुर + जन
6.	निर्गुण	-	निर + गुण
7.	अधिपति	-	अधि + पति
8.	अपयश	-	अप + यश
9.	आरक्षण	-	आ + रक्षण
10.	उत्तर	-	उत् + तर
11.	उपहार	-	उप + हार

2. **हिन्दी के उपसर्ग** -

उदाहरण

1.	अटल	-	अ + टल
2.	बिनव्याहा	-	बिन + व्याहा
3.	अध कचरा	-	अध + कचरा
4.	अनपढ़	-	अन + पढ़
5.	सुजान	-	सु + जान
6.	भरपेट	-	भर + पेट

विशेष :- परि + आ + वरण = पर्यावरण दो उपसर्ग

3. **अरबी - फारसी के उपसर्ग** -

उदाहरण

1.	खुशनसीब	-	खुश + नसीब
2.	गैरकानूनी	-	गैर + कानूनी
3.	सरपंच	-	सर + पंच
4.	बाइज्जत	-	बा + इज्जत
5.	हमराह	-	हम + राह
6.	नापसंद	-	ना + पसंद

4. **अंग्रेजी के उपसर्ग** -

उदाहरण

1.	सबइंस्पेक्टर	-	सब + इंस्पेक्टर
2.	डिप्टीकलेक्टर	-	डिप्टी + कलेक्टर
3.	हेडमास्टर	-	हेड + मास्टर
4.	चीफइंजीनियर	-	चीफ + इंजीनियर
5.	डिप्टी रजिस्टार	-	डिप्टी + रजिस्टार

तत्सम (संस्कृत) उपसर्ग (अर्थ और शब्द रूप)

अ-

अनेक तद्भव शब्दों में भी अ-उपसर्ग लगता है। देखिए एन् भी जिनके आदि में व्यंजन होता है, जैसे -

- अचूक
- अडिग
- अथक
- अदेखा
- अबेर
- अमिट
- अलग
- अलोना

अंत:-, अंतर्-, अंतस्

- अंत:करण
- अंत:कालीन
- अंत:पुर
- अंत:शुद्धि
- अंत:सलिला
- अंतरंग
- अंतरात्मा
- अंतर्कथा
- अंतर्ज्ञान
- अंतर्दशा
- अंतर्भूत
- अंतर्भौम
- अंतर्यामी
- अंतर्वर्ग
- अंतर्वस्तु

अति -

अधिक, उस पार, ऊपर

यह उपसर्ग, नियमित या सामान्य से अधिक, 'साधारण के अतिरिक्त या सिवाय', 'आवश्यकता या औचित्य से अधिक' आदि अर्थ देता है।

- अतिकाल
- अतिक्रमण
- अतिजीवन
- अतिदेश
- अतिपात
- अतिभोग
- अतिरंजना
- अतिरेक
- अतिव्याप्ति
- अतिशय
- अतिसार
- अतीन्द्रिय
- अतीत
- अत्यंत
- अत्यल्प

- अत्युत्पादन

हिन्दी अध-

आधा

- अधकचरा
- अधखिला
- अधजला
- अधबीच

अध :-

नीचे, तले

- अधःपतन
- अधस्तल
- अधोगति
- अधोगति
- अधोमुख
- अधोलोक
- अधोवायु
- अधोहस्ताक्षरी
- अधोमार्ग

अधि-

(क) ऊपर, ऊँचाा, (ख) प्रधान, मुख्य (ग) अधिकार, (घ) स्वार्थ (ड) अधिक

- अधिकरण
- अधिकार
- अधिकृत
- अधिक्रय
- अधिक्षेत्र
- अधिगत
- अधिग्रहण
- अधित्यका
- अधिदेव
- अधिनायक
- अधिनिर्णय
- अधिभार
- अधिभास
- अधिमूल्य
- अधिराज
- अधिमास
- अधिराज्य
- अधिरोहण
- अधिलाभ
- अधिशासी
- अधिसूचना
- अधिहरण
- अधिष्ठता

अन्-

अभाव, निषेध

अ- निषेधात्मक उपसर्ग का वह रूप जो संस्कृत में स्वर से आंरभ होने वाले शब्दों में लगता है।

- अंनग
- अंनत
- अंनतर
- अनद्यतन
- अनधिकार
- अनधिगत
- अनध्याय
- अननिवार्य
- अनन्य
- अनपत्य
- अनभित
- अनभ्यस्त
- अनर्थ
- अनलंकृत
- अनस्तित्व
- अनादि
- अनाप्त
- अनादश्यक

हिन्दी अन-

निषेध, अभाव या विपरीत

तद्भव शब्दों में भी इसी अर्थ में अन उपसर्ग (बिना हल चिह्न) बहुत से शब्दों में जुड़ता है। उदाहरण

- अनकहा
- अनखुला
- अनगढ़
- अनगिनत
- अनजाना
- अनदेखा
- अनपथ
- अनपढ़
- अनविधा
- अनबोला
- अनमना
- अनमंत्र
- अनमोल
- अनलेखा
- अनसुना
- अनसुनी
- अनहोनी

अनु-

अ. पीछे, ब. संग-साथ, स. प्रत्येक, द. बार-बार र. स्वार्थे (वहीं अपना अर्थ) फ. अनुकूल, और ग. समान

- अनुकंपा
- अनुकरण
- अनुकूल
- अनुकृत
- अनुक्रम
- अनुक्षण
- अनुगमन
- अनुज्ञा
- अनुताप
- अनुतोष
- अनुदान
- अनुदेश
- अनुधावन
- अनुनाद
- अनुजीवी
- अनुचिंतन
- अनुचर
- अनुताप
- अनुमति

- अनुमान
- अनुयान
- अनुरक्षक

अप-

निषेध, अपकर्ष, विकार, बुराई

- अपंग
- अपकर्म
- अपकार
- अपक्रम
- अपगति
- अपघर्षण
- अपचेता
- अपध्वंस
- अपभ्रष्ट
- अपमिश्रण
- अपयोजन
- अपराग
- अपराध
- अपनयन
- अपरूप
- अपताप
- अपसण्य

अभि-

सामने, पास, कुशल, अच्छी तरह और अनुचित

- अभिकथन
- अभिकर्ता
- अभिक्रांति
- अभिगमन
- अभिग्रहण
- अभिघात
- अभिचार
- अभिजात
- अभिज्ञ
- अभिदान
- अभिदंन
- अभिन्यस्त
- अभिप्राय
- अभियंता
- अभिलेख
- अभिशप्त
- अभिषंग
- अभ्युदय

अव-

निश्च, अनादर, निषेध, कमी, कुराई, उतार, व्याप्ति आदि

- अवकाश
- अवकीर्ण
- अवकृपा
- अवक्रांत
- अवक्षय
- अवगुंठन
- अवगुंफन
- अवगुण
- अवतरण
- अवज्ञा
- अवतार
- अवदशा
- अवदान
- अवधारणा
- अवनति
- अवमर्दन
- अवमानव
- अवरोध
- अवसाद

आ-

अपनी ओर, उलटा, बलपूर्वक, तर्क आदि

- आकर्षण
- आकलन
- आकांक्षा
- आकुंचन
- आपेक्ष
- आख्यात
- आगणन
- आचरण
- आच्छादन
- आजानु
- आदर्श
- आनंद
- आपत्ति
- आभार
- आभूषण
- आराधना
- आरोपण
- आसन्न
- आहार

आत्म-

अपना

- आत्मकथा
- आत्मगत
- आत्मगौरव
- आत्मघात
- आत्मचरित्र
- आत्मज
- आत्मज्ञान
- आत्मत्याग
- आत्मनियंत्रण
- आत्मप्रशंसा
- आत्मबलि
- आत्मविस्मृति
- आत्मसंयम
- आत समर्पण
- आत्मावलंबी
- आमोत्सर्ग
- आत्मोन्नति

उत्

ऊपर, ऊँचा, श्रेष्ठ

- उत्कंठा
- उत्कर्ष
- उत्कलित
- उत्कीर्ण
- उत्कृष्ट

- उत्क्रम
- उत्क्रांत
- उत्खनन
- उत्तर
- उत्तरोत्तर
- उत्ताप
- उत्तुंग
- उत्थान
- उत्थापन
- उत्पत्ति
- उत्पादन
- उत्पीड़न
- उत्साह
- उदय
- उद्घाटन
- उद्धरण
- उन्नति
- उदय

उप-

आंरभ, समीपता, विस्तार या अधिकता, गौणता, छोटाई और व्याप्ति

- उपकरण
- उपकार
- उपकुल
- उपक्रम
- उपकीर्ण
- उपचर्या
- उपजीविका
- उपजीवी
- उपनिवेश
- उपमा
- उपयुक्त
- उपराग
- उपरूपक
- उपरोध
- उपलक्ष्य
- उपविभाग
- उपविष्ट
- उपस्थित
- उपजीवी
- उपनयन
- उपमा

उपसर्ग	अर्थ	शब्द-रूप निर्मित शब्द
अधि	ऊपर, स्थान में श्रेष्ठ	अधिकरण, अधिकार, अधिपाठक, अधिष्ठाता, अध्यात्म, अध्याय
अनु	पीछे, समान, साथ	अनुक्रम, अनुचर, अनुज, अनुरूप, अनुस्वार, अनुगामी, अनुनासिक, अनुशासन
अप	बुरा, हीन, विरूद्ध, दूर, उलटा	अपकीर्ति, अपभ्रंश, अपमान, अपसव्य,
अभि	ओर, पास, सामने, अधिक	अभिमुख, अभिलाष, अभिसार, अभ्यास, अभ्युदय, अभिनय, अभिनव
अव	नीचे, हीन, अभाव, बुरा, दूर	अवगत, अवगाह, अवनति, अवसान, अवसर, अवस्था, अवतार, अवधि
आ	तक, ओर, समेत, उलटा	आकर्षण, आकार, आचरण, आबालवृद्धा आरम्भ, आहार, आज्ञा
उत्, उद्	ऊपर, ऊँचा, श्रेष्ठ	उत्कर्ष, उत्तम, उन्नति, उत्पन्न, उल्लेख, उच्चारण, उत्कण्ठा, उल्लास
उप	निकट, सदृश, गौण	उपहार, उपकार, उपदेश, उपभेद, उपयोग, उपवेद, उपक्रम, उपलक्ष्य
दुर-दुस्	बुरा, दुष्ठ, कठिन	दुराचार, दुष्कर्म, दुर्गम, दुर्दशा, दुर्लभ, दुराग्रह, दुर्बल, दुर्जन
नि	भीतर, नीचे, बाहर	निक्षेप, निकृष्ट, निदर्शन, निपात, निबन्ध, निरूपण, निकम्मा, निडर
निर्	बाहर, निषेध, रहित, दूर	निराकरण, निवाह, निर्दोष, निर्णय
निस्	बिना, बाहर	निस्सन्देह, निष्कासन
परा	पीछे, उलटा, अनादर, नाश	पराविद्या, पराकोटि, पराजय, पराभव, पराक्रम, परास्त, परामर्श
परि	आस-पास, चारों ओर, पूर्ण अतिशय	परिजन, परिवार, परिभ्रमण, परिक्रमा, परिणाम, परिधि, परिशीलन, परिचर्या
प्र	प्रकृष्ट, अधिक, आगे ऊपर	प्रबोध, प्रमाद, प्रकाश, प्रख्यात, प्रचार, प्रबल, प्रस्थान
प्रति	वापस, ओर, तरफ़, विरूद्ध सामने, एक-एक	प्रतिकूल, प्रतिक्षर, प्रतिवादी, प्रत्यक्ष, प्रत्युपकार, प्रतिगमन, प्रतिक्रिया
वि	भिन्न, विशेष, अभाव, दूसरा, अधिक	विकल, विदेश, विकास, विज्ञान, विवाद, विशेष, विस्मरण, वियोग, विशुद्ध
स. (सम्)	सम्यक्, भलीप्रकार, अच्छा, साथ	संकल्प, संग्रह, सुगम, सुलभ, स्वागत
सु	अधिक, अधिक अच्छा, सुन्दर	सुकर्म, सुकृत, सुगम, सुलभ, स्वागत, संरक्षण
स	सहित, साथ	सहित, सरस, सजग, सड्गम
कु	बुरा	कुकर्म, कुरूप, कुख्यात, कुयोग, कुदृष्टि

तद्भव उपसर्ग (अर्थ और शब्द-रूप)

उपसर्ग	अर्थ	शब्द रूप निर्मित शब्द
अ, अन्	अभाव, निषेध, अचेत, अजान, अलग	अचेत, अजान, अथाह, अबेर, अनमोल, अनमेल, अनहित
अध	आधा	अधकच्चा, अधपई, अधपका, अधसेरा, अधमरा, अधखिला
उन	एक कम	उन्नीस,, उनतीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर
औ	हीन, निषेध	औगुन, औघट, औसर, औढर, औढसा
दुः	बुरा-हीन	दुकाल, दुर्बल, दुष्कर्म, दुर्दान्त, दुष्चरित्र
नि	निषेध, अभाव, रहित	निहत्था, निकम्मा, निखरा, निडर, निधड़क, निश्चल, निश्छल
बिन	निषेध, अभाव	बिनदेखा, बिनब्याहा, बिनजाने, बिनबोया, बिनखाया बिनचखा
भर	पूरा, ठीक	भरपेट, भरपूर, भरसक, भरकोस

विदेशज उपसर्ग (अरबी+–फारसी*)

उपसर्ग	अर्थ	शब्द रूप निर्मित शब्द
+ अल	निश्चित	अलमस्त, अलगरज, अलबत्ता
+ ऐन	ठीक, पूरा	ऐनजवानी, ऐनवक्त
*खुश	अच्छा	खुशबू, खुशदिल, खुशकिस्मत, खुशशक्ल
+ ग़ैर	भिन्न, विरूद्ध	ग़ैरमनकूला, ग़ैरमूल्क़, गैरवाज़िब, ग़ैरसरकारी, ग़ैर-हाज़िर, ग़ैरहाज़िरी
*दर	में	दरअस्ल, दरकार, दरख़ास्त, दरकिनार, दरहक़ीक़त
*ना	अभाव	नाउम्मीदर, नादान, नापसन्द, नाराज़, नालायक़, नामुमकीन
*फ़ी	प्रत्येक	फ़ीसैकड़ा, फीआदमी
*ब	ओर में, अनुसार	बनाम, बदस्तूर, बदौलत
*बद	बुरा	बदकार, बदक़िस्मत, बदनाम, बदबू, बदहज़मी, बदफैल, बदमाश, बदतर, बदअपनी, बदमिज़ाज, बदनसीब
*बर	ऊपर, पर, बाहर	बरख़ास्त, बरदाश्त, बरतरफ़ बरव़क्त, बराबर
+*बा	साथ	बातमीज़ बावफ़ा, बाक़लम, बाक़ायदा, बाखूबी
+ बिल	साथ	बिलकुल, बिलमुक्ता
+ बिला	बिना	बिलाशक़, बिलादिमाग़, बिलाकुसूर
+ बे	बिना	लापता, लाचार, लावारिस, लाजवाब, लाइलाज, लापरवाह, लामज़हब
+ * सर	मुख्य	सरकार, सरंताज, सरदार, सरनाम, सरहद
+*हम	साथ, बराबर, समान	हमबिस्तर, हमशक़्ल, हमनवाँ, हमपेशा, हमउम्र, हमक़दम, हमराह, हमराज़, हमसफ़र
+*हर	प्रत्येक	हररोज, हरमाह, हरचीज़ हरसाल, हरतरह, हरमाल

विदेशज अँगरेज़ी-उपसर्ग (अर्थ और शब्द रूप)

उपसर्ग	अर्थ	शब्द रूप निर्मित शब्द
सब (Sub)	अधीन, भीतरी, सह	सबइंस्पेक्टर, सबरजिस्ट्रार, सबजज, सब-ऑफिस, सबकमेटी
हॉफ (Half)	आधा, अर्द्ध	हॉफटोन, हॉफपैण्ट, हॉफ मैड
हेड (Head)	प्रधान, प्रमुख	हेडऑफिस, हेडकांस्टेबिल, हेडमिस्ट्रेस, हेडमास्टर, हेडपोस्ट ऑफिस
वाइस (Vice)	उप, नायब, छोटा	वाइसचैयरमैन, वाइसचाँसलर, वाइस-प्रेसीडेण्ट, वाइस-प्रिंसिपल, वाइसकैप्टेन

प्रत्यय

जो शब्दांश शब्दों के अन्त में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते है, वे प्रत्यय कहलाते है।

प्रत्यय - प्रति (साथ में पर बाद में) + अय (चलने वाले) प्रत्यय शब्द का अर्थ है, पीछे चलना।

जैसे - लेखक - लेख शब्द के अन्त में 'अक' प्रत्यय जुड़ने से अर्थ में विशेषता आ गई है। अतः यहां अक प्रत्यय है।

प्रत्यय के भेद -

प्रत्यय के दो भेद है -

1. कृत् प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

1. **कृत् प्रत्यय** - वे प्रत्यय जो धातु में जोड़े जाते हैं, कृत् प्रत्यय कहलाते है। कृत् प्रत्यय से बने शब्द कृदन्त शब्द कहलाते हैं।
   जैसे - नयन = नय + अन
   पालन = पाल + अन
   लड़ाई = लड़ + आई
2. **तद्धित प्रत्यय** - वे प्रत्यय जो धातु को छोड़कर अन्य शब्दो, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण में जुड़ते है, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धित प्रत्यय से बने शब्द तद्धितांत शब्द कहलाते है।
   जैसे - सेठ + आनी = सेठानी यहां आनी तद्धित प्रत्यय है, तथा सेठानी तद्धितांत शब्द है।

प्रत्ययों के पूर्वोक्त वर्गीकरण (कृत् व तद्धित) को कई भाषाविद् उचित नही मानते है, क्योंकि हिन्दी में कई प्रत्यय ऐसे है जो दोनो रूप में आते है, अर्थात् धातु में भी जुड़ते है, और संज्ञा आदि शब्दो में भी जुड़ते है।

जैसे - लुटेरा - लुट + एरा (कृत् प्रत्यय)
अपवाद- चचेरा - चाचा + एरा (तद्धित प्रत्यय)
भलाई - भल + आई (तद्धित प्रत्यय)
पढ़ाई - पढ़ + आई (कृत् प्रत्यय)
कतर्नी - कतर + अनी (तद्धित प्रत्यय)
ऊटनी - ऊट + अनी (कृत् प्रत्यय)

महत्वपूर्ण प्रत्यय

क्रम	प्रत्यय	मूल शब्द/धातु	उदाहरण
1.	अक	लेख्, पाठ्, कृ, गै	लेखक, पाठक, कारक, गायक
2.	अन	पालु, सह्, ने, चर्	पालन, सहन, नयन, चरण
3.	अना	घट्, तुल्, वन्द्, विद्	घटना, तुलना, वन्दना वेदना
4.	अनीय	मान्, रम्, दृश, पूज्, श्रु	माननीय, रमणीय, दर्शनीय, पूजनीय, श्रवणीय
5.	आ	सूख, भूल, जाग, जूज, इष्, भिक्ष्	सूखा, भूला, जागा, पूजा, इच्छा, भिक्षा
6.	आई	लड़, सिल, पढ़, चढ़	लड़ाई, सिलाई, पढ़ाई, चढ़ाई
7.	आन	उड़, मिल, दौड़	उड़ान, मिलान, दौड़ान
8.	इ	हर, गिर, दशरथ, माला	हरि, गिरि, दाशरथि, माली
9.	इया	छल, जड़, बढ़, घट	छलिया, जड़िया, बढ़िया, घटिया
10.	इत	पठ, व्यथा, फल, पुष्प	पठित, व्यथित, फलित, पुष्पित
11.	इत्र	चर्, पो, खन्	चरित्र, पवित्र, खनित्र
12.	इयल	अड़, मर, सड़	अड़ियल, मरियल, सड़ियल
13.	ई	हँस, बोल, त्यज्, रेत	हँसी, बोली, त्यागी, रेती
14.	उक	इच्छ्, भिक्ष्	इच्छुक, भिक्षुक
15.	तव्य	कृ, वच्	कर्तव्य, वक्तव्य
16.	ता	आ, जा, बह, मर, गा	आता, जाता, बहता, मरता, गाता
17.	ति	अ, प्रीत, शक्, भज	अति, प्रीति, शक्ति, भक्ति
18.	ते	ता, खा	जाते, खाते
19.	त्र	अन्य, सर्व, अस्	अन्यत्र, सर्वत्र, अस्त्र

20.	न	कद, वद, मंद, खिद्, बेल, ले	क्रंदन, वंदन, मदन, खिन्न,, बेलन, लेन
21.	ना	पढ़, लिख, बेल, गा	पढ़ना, लिखना, बेलना, गाना
22.	म	दा, धा	दाम, धाम
23.	य	गद्, पद्, कृ, पंडित, पश्चात्, दंत्, ओष्ठ,	गद्य, पद्य, कृत्य, पाण्डित्य, पाश्चात्य, दंत्य, ओष्ठ्य
24.	या	मृग, विद्	मृगया, विद्या
25.	रू.	गे	गेरू
26.	वाला	देना, आना, पढ़ना	देनेवाला, आनेवाला, पढ़नेवाला
27.	ऐया/वैया	रख, वच, डाँट; गा, खा	रखैया, बचैया, डटैया; गवैया, खवैया
28.	हार	होना, रखना, खेवना	होनहार, रखनहार, खेवनहार

तद्धित प्रत्यय

क्रम	प्रत्यय	शब्द	उदाहरण
1.	आइ	पछताना, जगना	पछताई, जगाई
2.	आइन	पण्डित, ठाकुर, लड़, चतुर, चौड़ा	पण्डिताई, ठकुराई, लड़ाई, चतुराई, चौड़ाई
3.	आनी	सेठ, नौकर, मथ	सेठानी, नौकरानी, मथानी
4.	आयत	बहुत, पंच, अपना	बहुतायत, पंचायत, अपनायत
5.	आर/आरा	लोहा, सोना, दूध, गाँव	लोहार, सुनार, दूधार, गँवार
6.	आहट	चिकना, घबरा, चिल्ल, कड़वा	चिकनाहट, घबराहट, चिल्लाहट, कड़वाहट
7.	इल	फेन, कूट, तन्द्रा, जटा, पंक, स्वप्न, धूम	फेनिल, कुटिल, तन्द्रिल, जटिल, पंकिल, स्वप्निल, धूमिल
8.	इष्ठ	कन्, वर्, गुरू, बल	कनिष्ठ, वरिष्ठ, गरिष्ठ, बलिष्ठ
9.	ई	सुन्दर, बोल, पक्ष, खेत, ढोलक, तेल, देहात	सुन्दरी, बोली, पक्षी, खेती, ढोलकी, तेली, देहाती
10.	ईन	ग्राम, कुल	ग्रामीण, कुलीन
11.	ईय	भवत्, भारत, पाणिनी, राष्ट्र	भवदीय, भारतीय, पाणिनीय, राष्ट्रीय
12.	ए	बच्चा, लेखा, लड़का	बच्चे, लेखे, लड़के
13.	एय	अतिथि, अत्रि, कुन्ती, पुरूष, राधा	आतिथेय, आत्रेय, कौन्तेय, पौरूषेय, राधेय
14.	एल	फुल, नाक	फुलेल, नकेल
15.	ऐत	झका, लाठी	डकैत, लठैत
16.	एरा/ऐरा	अंध, साँप, बहुत, भाता काँसा, लुट	अँधेरा, सँपेरा, बहुतेरा, ममेरा, कसेरा, लुटेरा
17.	ओला	खाट, पाट, साँप	खटोला, पटोला, सँपोला
18.	औती	बाप, ठाकुर, मान	बपौती, ठकरौती, मनौती
19.	औटा	बिल्ला, काजर	बिलौटा, कजरौटा
20.	क	धम, चम, बैठ, बाल, दर्श, ढोल	धमक, चमक, बैठक, बालक, दर्शक, ढोलक
21.	कर	विशेष, खास	विशेषकर, खासकर
22.	का	खट, झट	खटका, झटका
23.	जा	भ्राता, दो	भतीजा, दूजा
24.	ड़ा, ड़ी	चाम, बाछा; पंख, टाँग	चमड़ा, बछड़ा; पंखड़ी, टँगड़ी
25.	त	रंग, संग, खप	रंगत, संगत, खपत
26.	तन	अद्य	अद्यतन
27.	तर	गुरू, श्रेष्ठ	गुरूतर, श्रेष्ठतर
28.	तः	अंश, स्व	अंशतः, स्वतः
29.	ती	कम, बढ़, चढ़	कमती, बढ़ती, चढ़ती
30.	धा	अनेक, बहु, शत्	अनेकथा, बहुधा, शतथा
31.	पन	लड़का, बच्चा, काला, धीमा	लड़कपन, बचपन, कालापन, धीमापन
32.	पा	बूढा, मोटा	बुढ़ापा, मोटापा
33.	मात्र	लेश, रंच	लेशमात्र, रंचमात्र
34.	य	ग्राम, पंड़ित, मधु, दिती	ग्राम्य, पांडित्य, माधुर्य, दैत्य
35.	ल	शीत, श्याम, वत्स, मांस	शीतल, श्यामल, वत्सल, मांसल
36.	लु	दया, कृपा, निद्रा, तंदा	दयालु, कृपालु, निद्रालु, तंद्रालु
37.	व	रघु, लघु	राघव, लाघव
38.	वत्	मातृ, पुत्र, यत्	मातृवत्, पुत्रवत्, यावत्
39.	वान्	धन, गुण	धनवान, गुणवान
40.	वाल	पाली, ब्रज	पालीवाल, ब्रजवाल
41.	वाँ	पाँच, आठ	पाँचवाँ, आठवाँ
42.	वी	तपस, मेधा, माया, लखनऊ	तपस्वी मेधावी, मायावी, लखनवी
43.	शः	क्रम, अक्षर	क्रमशः, अक्षरशः
44.	स	वय, सर, घम	वयस, सरस, घमस
45.	सा	ऐ, वै, मरा	ऐसा, वैसा, मरा-सा
46.	सरा	दो, तीन	दूसरा, तीसरा
47.	सों	पर, तर	परसों, तरसों
48.	हरा	सोना, दो	सुनहरा, दुहरा
49.	हारा	पानी, लकड़ी	पनिहारा, लकड़हारा

तत्सम प्रत्यय

क्रम	प्रत्यय	बोधक/अर्थ	उदाहरण
1.	आ	स्त्री. प्रत्यय; भाववाचक, संज्ञा प्रत्यय	आदरणीया, प्रिय,
2.	आनी	स्त्री, प्रत्यय	देवरानी, भवानी, मेहतरानी
3.	आलु	विशेषण प्रत्यय, वाला	कृपालु, दयालु, निद्रालु, श्रद्धालु
4.	इत	विशेषण प्रत्यय, युक्त	पल्लवित, पुष्पित, फलित, हर्षित
5.	इमा	भाववाचक संज्ञा प्रत्यय	गरिमा, नीलिमा, मधुरिमा, महिमा
6.	इक	विशेषण व संज्ञा प्रत्यय	दैनिक, वैज्ञानिक, वैदिक, लौकिक
7.	क	स्वार्थे, समूह	घटक, ठंडक, शतक, सप्तक
8.	कार	लिखने या बनाने वाला; वाला	पत्रकार; जानकार
9.	ज	जन्मा हुआ	अंडज, जलज, पंकज, पिंडज, देशज, विदेशज
10.	जीवी	जीनेवाला	परजीवी, बुद्धिजीवी, लघुजीवी, दीर्घजीवी
11.	ज्ञ	जाननेवाला	अज्ञ, मर्मज्ञ, विज्ञ, सर्वज्ञ
12.	तः	क्रियाविशेषण प्रत्यय	अंशतः, वस्तुतः, स्वतः, सामान्यतः
13.	तया	क्रिया विशेषण प्रत्यय	मुख्यतया, विशेषतया, सामान्यतया, श्रेष्ठतर
14.	तर	तुलना बोधक प्रत्यय	उच्चतर, निम्नतर, सुन्दरतर

15.	तम	सर्वाधिक बोधक प्रत्यय	उच्चतम, निकृष्टतम, महत्तम, लघुत्तम
16.	ता	भाववाचक संज्ञा प्रत्यय	नवीनता, मधुरता, सुन्दरता
17.	त्व	भाववाचक संज्ञा	कृतित्व, ममत्व, महत्व, सतीत्व
18.	मान्	विशेषण वाचक प्रत्यय	विद्यमान, सेव्यमान, बुद्धिमान
19.	वान्	वाला	गुणवान, धनवान, बलवान, रूपवान

तद्भव प्रत्यय

क्रम	प्रत्यय	बोधक/अर्थ	उदाहरण
1.	अंगड़	वाला	बतंगड़
2.	अंत्	वाला	रटंतू, घुमंतू
3.	अत	संज्ञा प्रत्यय	खपत, पढ़त, रंगत, लिखत
4.	आँध	संज्ञा प्रत्यय	विषाँध, सड़ाँध
5.	आ	-	अच्छा, घोड़ा, बड़ा, लड़का
6.	आई	भाववाचक प्रत्यय	कठिनाई, बुराई, सफाई
7.	आऊ	वाला	खाऊ, टिकाऊ, पंडिताऊ, बिकाऊ, पंडिताऊ, बिकाऊ
8.	आप/आपा	भाववाचक प्रत्यय	मिलाप, अपनापा, पुजापा, बुढ़ापा, रैंडापा
9.	आर/आरा आरी	करनेवाला	कुम्हार, लुहार, चमार; घसियारा; पुजारी, भिखारी
10.	आलू	करनेवाला	झगड़ालू, दयालू
11.	आवट	भाववाचक प्रत्यय	कसावट, बनावट, बिनावट, लिखावट, सजावट
12.	आस	इच्छावाचक प्रत्यय	छपास, प्यास, लिखास, निकास
13.	आहट/आहत	भाववाचक प्रत्यय	गड़गड़ाहट, घबराहट, चिल्लाहट, भलमनसाहत
14.	इन	स्त्री. प्रत्यय	जुलाहिन, ठकुराइन, तेलिन, जुजारिन
15.	इया	वाला; लघुत्व बोधक; स्त्री. प्रत्यय	कनौजिया, पर्वतिया, भोजपुरिया; चुटिया; चुहिया, डिबिया
16.	ई	वाला; स्त्री, प्रत्यय	घमड़ी, लालची, ऊनी, सूती; घोड़ी; लड़की, नानी चाची
17.	ईला	वाला	चमकीला, पथरीला, शर्मीला, हठीला
18.	एरा	वाला	कँसेरा, चचेरा, फुसेरा, बहुततेरा, ममेरा, लुटेरा
19.	औड़ा/औड़ी	-	पकौड़ा, मुगौड़ा, सेवड़ा, रेवड़ी
20.	जा	जन्मा हुआ	भतीजा, भांजा, आत्मजा

देशज प्रत्यय

क्रम	प्रत्यय	बोधक/अर्थ	उदाहरण
1.	अक्कड़	वाला	घुमक्कड़, पियक्कड़, भुलक्कड़
2.	अड़		अंधड़, भुक्खड़
3.	आक		चटाक, थड़ाक, थड़ाका, धमाका, फटाक
4.	आटा		खर्राटा, फर्राटा
5.	इयल	वाला	अड़ियल, दढ़ियल, सड़ियल

विदेशज/विदेशी प्रत्यय

क्रम	प्रत्यय	बोधक/अर्थ	उदाहरण
1.	आ	भाववाचक	सफेदा, खराबा
2.	आना	भाववाचक, विशेषण वाचक	जुर्माना, दस्ताना, मर्दाना, मस्ताना, जनाना
3.	आनी	संबंधवाचक	ज़िस्मानी, बर्फ़ानी, रूहानी
4.	इयत	भाववाचक	अंग्रेज़ियत, असलियत, आदमियत, इंसानियत, खैरियत
5.	कार	करनेवाला	काश्तकार, दस्तकार, सलाहकार, पेशकार
6.	खोर	खानेवाला	गमखोर, घूसखोर, रिश्वतखोर, हरामखोर
7.	गर/गरी /गिरी	करनेवाला	कारीगर, कीमिद्यागर, बाज़ीगर; जादूगरी; कुलीगिरी, बाबूगिरी
8.	गार	करनेवाला	परहेज़गार, मददगार, यादगार, रोज़गार
9.	गाह	स्थानवाचक	ईदगाह, चरागाह, बन्दरगाह
10.	गी	भाववाचक संज्ञा प्रत्यय	गन्दगी, जिन्दगी, बंदगी
11.	चा/ची	वाला	देगचा, बगीचा, इलायची, डोलची, संदूकची, बाबरची
12.	ज़ाद/ज़ादा/ज़ादी	जन्मा	आदमज़ाद; हरामज़ादा, शाहज़ादा; शाहज़ादी
13.	दाँ	जानने वाला	उर्दूदाँ, कद्रदाँ, कानूनदाँ
14.	दान/दानी	स्थिति वाचक, आधार	इत्रदान, कलमदान, पीकदान, गोंददानी, चायदानी
15.	दार	वाला	ईमानदार, कर्जदार, दुकानदार, मालदार, फौजदार
16.	नाक	वाला	खतरनाक, खौफनाक, दर्दनाक, शर्मनाक
17.	बाज़/बाज़ी	वाला	चालबाज़, धोखेबाज़, मुकदमेबाज़; मुकदमेबाज़ी
18.	बान	वाला	दरबान, बागबान, मेजबान
19.	मंद	वाला	अक्लमंद, जरूरतमंद, दौलतमंद
20.	साज	वाला	घड़ीसाज

अंग्रेजी प्रत्यय

क्रम	प्रत्यय	बोधक/अर्थ	उदाहरण
1.	इज्म	वाद/मत	कम्युनिज्म, बुद्धिज्म, सोशलिज्म, मार्क्सिज्म
2.	इस्ट	वादी/व्यक्ति	कम्युनिस्ट, बुद्धिस्ट, मार्क्सिस्ट, सोशलिस्ट

आ- आटा, घेरा, छापा, गुज़ारा
आई - गढ़ाई, चराई, पढ़ाई, रूलाई, लिखाई, लड़ाई
आन - उठान, पिसान, मिलान, लगान, मकान, खदान
आप - मिलाप, कलाप, अलाप, प्रलाप, विलाप, संस्थान
आव - उतराव, घुमाव, चलाव, चुनाव, बनाव
आस - निकास, हुलास, विकास, गिलास, विलास, प्यास
इया - बढ़िया, घटिया, मइया, भुइया, गइया, भइया, लइया
ई - चढ़ाई, लड़ाई, बड़ाई, पढ़ाई, लिखाई, हँसी, बोली, धमकी
औनी - कमौनी, लिखौनी, उठौनी, नचौनी, गवौनी, लड़ौनी
त - खपत, बचत, लागत, जपत, बनत, बिगड़त, हँसत
ती - चढ़ती, बढ़ती, घटती, रटती, पटती, श्रीमती
न्ती - चढ़न्ती, बढ़न्ती, घटन्ती, उठन्ती, गिरन्ती, फिरन्ती, लड़न्ती
न - उद्घाटन, पुरान, देन, मारन, मोहन, लगन, लेन, देन
नी - कटनी, मरनी, भरनी, लड़नी, अनी, ठनी

र – ठोकर, जोकर, मकर, बेर, केर, नीर, क्षीर
वट – तरावट, लिखावट, सजावट, बनावट, केवट, बुनावट
हट – आहट, चिल्लाहट, घबराहट, बुलबुलाहट, अकुलाहट
अंकू – उंकू, अड़ंकू, पढ़ाकू
अक – लेखक, पाठक, वाचक, नायक, सम्पादक, साधक, दीपक, वाचक
अक्कड़ – पियक्कड़, बुझक्कड़, भुलक्कड़, कुदक्कड़
आ – चढ़ा, रखा, कटा, भूँजा, फोड़ा, चला
आक – पैराक, तैराक, तड़ाक, उड़ाक
आकू – लड़ाकू, उड़ाकू, पढ़ाकू, कूदाकू, हलाकू
इयल – अड़ियल, सड़ियल, मरियल, बढ़ियल, दढ़ियल
इया – जड़िया, लखिया, धुनिया, नियरिया, दुनिया
ऊ – खाऊ, रट्टू, उतारू, चालू, बिगाड़ू, मारू, काटू, लागू
एरा – कमेरा, लुटेरा, झलेरा, पखेरा, हिलेरा
ऐया – कटैया, बचैया, परोसैया, भरैया
ऐत – लठैत, लड़ैत, चढ़ैत, फिकैत
औड़ा – भगोड़ा, हँसोड़ा, मरोड़ा
वैया – खवैया, गवैया, देवैया, लेवैया
सार – मिलनसार, हिलनसार
हार – राखनहार, खेवनहार, देवनहार, तारणहार, सेवनहार
हारा – सेवनहारा, खेवनहारा, तारणहारा, देवनहारा
ना – खाना, गाना, बोलना, रोना, पीना, सोना, आना, लेना, देना
नी – चटनी, सुँघनी, कहनी, छननी, ओढ़नी, घोटनी, पढ़नी, सुननी
आ – झूला, ठेला, फाँसा, झारा, पोता, घेरा
ई – रेती, फाँसी, गाँसी, चिमटी
ऊ – झाड़ू, माड़ू, काढ़ू, साढ़ू
न – झाड़न, बेलन, जामन
ना – बेलना, कसना, ओढ़ना, घोटना, रेतना, दलना
आवना – सुहावना, लुभावना, डरावना, हँसावना, रूलावना, गिरावना
ना – उड़ना, हँसना, सुहाना, रोना, लदना
नी – कहानी, सुननी, हँसनी, ओढ़नी, पहननी, जननी
वाँ – ढलवाँ, कटवाँ, पिटवाँ, चुनवाँ
क – बैठक, फाटक
ना – झिरना, रमना, पालना
आनी – कमानी, लुभानी, मिलानी
औना – खिलौना, बिछौना, उढ़ौना
औनी – पहरौनी, ठहरौनी, मिचौनी, गवौनी, बुलौनी, मिलौनी
आवानी – छावनी, उठावनी, गिरावनी, बुलावनी, लुभावनी, मिलावनी, डोलावनी
इन – कमाइन, गन्धाइन, लियाइन, दियाइन
का – छिलका, किलका, चिलका
की – फिरकी, फुटकी, डुबकी, लुटकी
आ – जोड़ा, चूरा, सराफा, बजाजा, बोझा
आइँद – कपड़ाइँद, सड़ाइँद, घिनाइँद, मघाइँद
आई – भलाई, बुराई, ढिठाई, चतुराई, पण्डिताई
आन – घमासान, ऊँचान, निचान, लम्बान, चौड़ान, उड़ान, बैठान
आयत – बहुतायत, पञ्चायत, तिहायत, अपनायत
आवट – अमावट,महावट, गिरावट
आस – मिठास, खटास, निन्दास
आहट – कड़ुवाहट, चिकनाहट, गरमाहट, चिल्लाहट
औती – बपौती, बुढ़ौती, छिनौती
त – चाहत, रंगत, मिल्लत
ती – कमती, बढ़ती, घटती, चढ़ती
पन – कालापन, लड़कपन, बालपन, पागलपन, गँवारपन
पा – बुढ़ापा, रंड़ापा, बहिनापा, मोटापा
स – आपस, घमस, तमस, रजस
इया – आढ़तिया, मखनिया, बखेड़िया, मुखिया, रसोइया
एड़ी – भँगोड़ी, गँजेड़ी, नशेड़ी
एली – हथेली, भेली, तबेली
आऊ – अगाऊ धराऊ, बटाऊ, पण्डिताऊ
ऐल – खपरैल, दुधैल, दन्तैल, तोन्दैल
ला – अगला, पिछला, मँझला, धुँलला, लाड़ला
वन्त – गुणवन्त, धनवन्त, दयावन्त, शीलवन्त
हरा – सुनहरा, रूपहरा
हा – हलवाहा, पनिहा, कविराहा
आ – झूला, ठेला, फाँसा, झारा, पोता, झोरा, घेरा
इया – खटिया, फुड़िया, डबिया, गठरिया, बिटिया
ई – पहाड़ी, घाटी, ढोलकी, डोरी, टोकरी, रस्सी
की – कनकी, टिमकी
टा – रोंगटा, कलूटा
टी – चोटी, बहूटी
ड़ा – चमड़ा, बछड़ा, दुःखड़ा, मुखड़ा, टुकड़ा, लँगड़ा
डी – टँगड़ी, पलँगड़ी, पँखड़ी, लालड़ी
री – कोठरी, छतरी, बाँसुरी, मोटरी, गठरी, कुमारी
ली – टिकली, बछवा, बचवा, पुरवा
सा – लालसा, अच्छासा, उड़तासा, एकासा, मरासा
आना – राजापुताना, हिन्दुआना, तिलंगाना, उड़ियाना
इया – मथुरिया, कलकतिया, सरवरिया, कनौजिया,
ड़ी – अगाड़ी, पिछाड़ी
आर – दुधार, गँवार
आल – कार्मिक, धार्मिक, तार्किक, कारूणिक, साम्प्रदायिक, पाशविक
ई – आरी, ऊनी, देशी
उआ – मछुआ, गरूआ, खारूआ, फगुआ, टहलुआ
ऊ– ढालू, घरू, बाज़ारू, फेटू, गरजू, झाँसू
आई – वकई, खनाई, जोताई, रेताई, जिताई
आर – बिलार, छीनार, दुत्कार, सत्कार, व्यवहार
आरी – दुधारी, दुवारी, बिलारी, किनारी
इय – कमनीय, गमनीय, दमनीय
एरा – घनेरा, कमेरा, जनेरा
एल – फुलेल, नकेल, अकेल
एला – अकेला, दुकेला, बघेला, मुरेला, अधेला, सौतेला, पेला, ठेला, मेला, रेला
ता – पाँयता, रायता
नी – चाँदनी, पैजनी, नथनी
वान – भाग्यवान्, मूल्यवान्, गुणवान्
वाला – रखवाला, बलवाला, दिलवाला, रंगवाला, घरवाला, ग्वाला, गानेवाला
ल – घायल, पायल, छागल, पागल
हट – आहट, बुलाहट, चौधराहट, बौखलाहट

सन्धि-विच्छेद

दो वर्णो के मेल को सन्धि कहते है सन्धि उन दो वर्णो में होती है। जहाँ प्रथम शब्द का अन्तिम वर्ण, तथा द्वितीय शब्द का प्रथम वर्ण।

जैसे – देव + आलय

अ + आ = आ > स्वर = दीर्घ स्वर

सन्धि के प्रकार – सन्धि के तीन प्रकार होते है।

(1) स्वर (2) व्यंजन (3) विसर्ग

(1) **स्वर सन्धि** - जहाँ पर प्रथम शब्द का अन्तिम वर्ण स्वर हो तथा द्वितीय शब्द का प्रथम वर्ण स्वर हो, वहाँ स्वर सन्धि होती है।

जैसे - विद्यालय - विद्या + आलय

आ + आ = आ स्वर सन्धि

स्वर सन्धि के भेद -

1) **दीर्घ स्वर सन्धि** - जहाँ पर प्रथम शब्द का अन्तिम वर्ण दीर्घ या लघु आए तो वहाँ दीर्घ स्वर सन्धि होती है।

जैसे - अ + आ = आ
अ + अ = आ
आ + आ = आ
ई + ई = ई
ऊ + ऊ - ऊ

उदाहरण

1) वाचनालय - वाचन + आलय - अ + आ = आ (दीर्घ स्वर सन्धि)
2) वीरांगना - वीर + अंगना - अ + अ = आ (दीर्घ स्वर सन्धि)
3) अतीव - अति + इव - ई + इ = ई (दीर्घ स्वर सन्धि)
4) परमार्थ - परम + अर्थ (अ) (अ) = अ (दीर्घ स्वर सन्धि)
5) महिन्द्र - मही + इन्द्र = ई + इ - ई (दीर्घ स्वर सन्धि)
6) भानूदय - भानु + उदय = उ + उ = ऊ (दीर्घ स्वर सन्धि)
7) गुरूपदेश - गुरू + उपदेश = ऊ + उ = ऊ (दीर्घ स्वर सन्धि)

2) **गुण स्वर सन्धि** - यदि लघु या दीर्घ और ऋ आए है तो क्रमशः ए, ओ तथा अर् हो जाता है।

जैसे - **अ / आ + इ, ई, उ, ऊ, ऋ, = ए, ओ**
ए ओ अर अर्

जैसे -

1. नरेन्द्र = नर + इन्द्र
   अ + इ = ए (गुण स्वर सन्धि)
2. सूर्योदय = सूर्य + उदय
   अ + उ = ओ (गुण स्वर सन्धि)
3. महोत्सव = महा + उत्सव
   आ + उ = ओ (गुण स्वर सन्धि)
4. देवर्षि = देव + ऋषि
   अ + ऋ = अर् (गुण)
5. महर्षि = महा + ऋषि
   आ + ऋ = अर् (गुण)
6. परमेश्वर = परम् + ईश्वर
   अ + इ = ए (गुण स्वर सन्धि)

Formula : अ + इ - ए
सूत्र अ + ई - ए
अ + उ - ओ
अ + ऊ - ओ
अ + ऋ - अर्

3) **वृद्धि स्वर सन्धि** - यदि लघु या दीर्घ आ के बाद ए, ऐ आए तो दोनों के स्थान पर ऐ हो जाता है और जब ओ या औ आए तो औ हो जाता है।

जैसे -

1. मतैक्य = मत + ऐक्य
   अ + ऐ = ऐ
   अ / आ + ए, ऐ = ऐ
   अ / आ + ओ, औ = औ
2. एकैक = एक + एक
   अ + ए = ऐ
3. सदैव = सदा + एवं
   आ + ए = ऐ
4. **यण स्वर सन्धि** - यदि **इ, ई** के बाद कोई अन्य स्वर आए तो उनके मेल से **य** बनता है। इसी प्रकार **उ** या **ऊ** के बाद कोई अन्य स्वर आए तो उनके मेल से **व** बनता है और **ऋ** के आगे यदि कोई अन्य स्वर आए तो **ऋ** ही बनता है। यही यण स्वर सन्धि कहलाती है।

जैसे-1. अत्यधिक - अति + अधिक
इ + अ = य
2. इत्यादि - इति् + आदि
इ + आ = या
3. न्यून =नि + ऊन
इ + ऊ = या
4. स्वागत = सु + आगत
इ + आ = वा
5. अन्वेषण = अनु + एषण
उ + ए = व
6. पित्रनुमति = पितृ + अनुमति
ऋ + अ = ऋ
7. मात्राज्ञा = मातृ + आज्ञा
ऋ + आ = ऋ

5) **अयादि स्वर सन्धि** - अयादि सन्धि में अय्, आय्, अव्, आव, चार शब्द हुये हुए है जो ए, ऐ, ओ, औ निर्मित करते है।

जैसे - ए	ऐ	ओ	औ
अय्	आय्	अव्	आव्
नयन	नायक	पवन	पावक

1) नयन - न + अय् + अन , न + ए + अन = ने + अन
2) नायक - न + आय् + अक्, न + ऐ + ऐ + अक - नै + अक
3) पवन - प + अव + अन्, प + ओ + अन् - पो + अन
4) पावक - प + आव् + अक्, प + औ + अक - पौ + अक
5) भावुक - भौ +उक = भावुक
6) नावक - नौ + इक
7) पवित्र - पौ + इत्र

व्यंजन सन्धि - दो व्यंजनो के मेल से या व्यंजन अथवा स्वर के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे व्यंजन सन्धि कहते है।

व्यंजन सन्धि के नियम -

1. **वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन** - किसी वर्ग के पहले वर्ण (क् च् ट् प् प्) का मेल किसी स्वर अथवा अंत:स्थ व्यंजन (य् र् ल् व्) के किसी वर्ण से होने पर वर्ग का पहला अक्षर अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण (ग् ज् ड् द् ब्) में परिवर्तित हो जाता है; जैसे -

क् का ग् होना-	दिक्	+	अंत	=	दिगंत
	दिक्	+	विजय	=	दिग्विजय
	वाक्	+	ईश	=	वागीश
क् का ज् होना-	अच्	+	अंत	=	अंजत
	अच्	+	आदि	=	अजादि
ट् का ड् होना-	षट्	+	आनन	=	षडानन
	षट्	+	रिपु	=	षड्रिपु
त् का द् होना-	भगवत्	+	भजन	=	भगवद्भजन
	उत्	+	योग	=	उद्योग
	सत्	+	भावना	=	सद्भावना
प् का ब् होना-	अप्	+	ज	=	अब्ज
	सुप	+	अंत	=	सुबंत

2. वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन- यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क् च् ट् त् प्) का मेल किसी अनुनासिक वर्ण से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण (ङ् ञ् ण् न् म्) हो जाता है; जैसे -

क् का ङ् होना-	वाक्	+	मय	=	वाङ्मय
ट् का ण्. होना-	षट्	+	मुख	=	षण्मुख
त् का न् होना-	तत्	+	मय	=	तन्मय
	जगत्	+	नाथ	=	जगन्नाथ

3. 'छ' संबंधी नियम- किसी भी ह्रस्व स्वर या 'आ' का मेल 'छ्' से होने पर 'छ्' से पहले 'च्' जोड़ दिया जाता है; जैसे -

स्व + छंद = स्वच्छंद परि + छेद = परिच्छेद
अनु + छेद = अनुच्छेद

4. त् संबंधी नियम-

(i) 'त्' के बाद यदि 'ल' हो तो 'त्', 'ल्' में बदल जाता है; जैसे -

उत् + लास = उल्लास तत् + लीन = तल्लीन
उत् + लेख = उल्लेख

(ii) 'त्' के बाद यदि 'ज्', 'झ्' हो तो 'त्', 'ज' में बदल जाता है; जैसे-

सत् + जल = सज्जन
जगत् + जननी = जगज्जननी
विपत्+ जाल = विपज्जाल
उत् + झटिका = उज्झटिका

(iii) 'त्' के बाद यदि 'ट्', 'ड्' हो तो 'त्', 'ड' में बदल जाता है; जैसे-

बृहत्	+	टीका	=	बृहट्टीका
उत्	+	डयन	=	उड्डयन

(iv) 'त्' के बाद यदि 'श्', हो तो 'त्' का 'च्' और 'श्' का 'छ्' हो जाता है; जैसे-

उत्	+	श्वास	=	उच्छ्वास
सत्	+	शास्त्र	=	सच्छास्त्र

(v) 'त्' के बाद यदि 'च्', 'छ' हो तो 'त्' 'च्' हो जाता है; जैसे -

उत्	+	चारण	=	उच्चारण
उत्	+	चरित	=	उच्चरित
जगत्	+	छाया	=	जगच्छाया

(vi) 'त्' के बाद यदि 'ह' हो तो 'त्' के स्थान पर 'द्ध' और 'ह' के स्थान पर 'ध्' हो जाता है; जैसे -

तत् + हित = तद्धित उत् + हार = उद्धार
उत् + हत = उद्धत

5. 'न' संबंधी नियम- यदि 'ऋ', 'र', 'ष' के बाद 'न' व्यंजन आता है तो 'न' का 'वर्ण' हो जाता है; जैसे-

परि + नाम = परिणाम प्र + मान = प्रमाण
राम + अयन = रामायण भूष + अन = भूषण

6. 'म' संबंधी नियम-

(i) 'म्' का मेल 'क्' से 'म्' तक के किसी भी व्यंजन वर्ग से होने पर 'म्' उसी वर्ग के पंचमाक्षर (अनुस्वार) में बदल जाता है; जैसे :-

सम् + गति = संगति सम् + चय = संचय
परम् + तु = परंतु सम् + पूर्ण = संपूर्ण

(ii) 'म्' का मेल यदि 'य', 'र', 'ल', 'व्', 'श्' 'ष्', 'स्' से हो तो 'म्' सदैव अनुस्वार ही होता है; जैसे -

सम् + योग = संयोग सम् + रक्षक = संरक्षक
सम् + लाप = संलाप सम् + विधान = संविधान
सम् + यश = संशय सम् + सार = संसार

(iii) 'म्' के बाद 'म' आने पर कोई परिवर्तन नहीं होता; जैसे -

सम् + मान = सम्मान सम् + मति = सम्मति

विशेष - आजकल सुविधा के लिए पंचमाक्षर के स्थान पर प्रायः अनुस्वार का ही प्रयोग होता है।

7. 'स' संबंधी नियम- 'स' से पहले 'अ', 'आ' से भिन्न स्वर हो तो 'स' का 'ष' हो जाता है; जैसे -

वि + सम = विषम वि + साद = विषाद
सु + समा = सुषमा

पहचान - (-) हलन्त होना है।

त / द

+ च	च्च
छ	च्छ
ज	ज्ज
ट	ट्ट
ड	ड्ड
ल	ल्ल
ह	ह
स	स्स

उदा. दिग्गज - दिक् + गज
दिगम्बर - दिक् + अम्बर
षड्ंग - षट् + अंग
सद्भाव - जगत् + अम्बा = जगदम्बा
सदाशय - सत् + आशय

नोट - अपवाद - इसमें द का त नहीं होता है।

1. उद्गार - उद् + गार
2. उद्देश्य - उद् + देश्य
3. उद्घाटन - उद् + घाटन

स्वेच्छंद - स्व + छन्द
सच्चिदानंद - सत् + चिदानंद

<u>विसर्ग सन्धि</u> - विसर्ग सन्धि में सात नियम है। विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर जो परिवर्तन होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते है।

विशेष नियम और पहचान -

ओर (श ष स) - विसर्ग

1) **<u>विसर्ग का ओ हो जाना</u>** - यदि विसर्ग के पहले अ और बाद मे भी अ अथवा तीसरा चौथा और पांचवा वर्ण अथवा य, र, ल, चौथा और पांचवा वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है।

जैसे मनः + अनुकूल - मनोकूल
अधः + गति - अधोगति

2) **<u>विसर्ग का र हो जाता है</u>** - यदि विसर्ग के पहले अ, आ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो और बाद में आ अथवा तीसरा, चौथा, व पांचवा वर्ग अथवा य, र, ल, व मे से कोई वर्ण हो तब विसर्ग का र हो जाता है।

जैसे - निराशा - निः + आशा

3) **<u>विसर्ग का (श) हो जाता है</u>** - यदि विसर्ग के पहले स्वर हो और बाद में च या छ हो तो विसर्ग (श) हो जाता है।

उदा. निश्छल - निः + छल

इ + छ = श्

4) **<u>विसर्ग का (ष) हो जाता है</u>** - विसर्ग के पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का (ष) हो जाता है।

जैसे - निष्कपट - निः + कपट
इ + क = (ष)

धनुष्टकांर - धनुः + टंकार
उ + ट = (ष)

निष्फल - निः + फल

इ + फ = (ष)

5) **विसर्ग का (स) हो जाता है** -
विसर्ग के बाद यदि त और स हो तो विसर्ग का (स) हो जाता है।

जैसे - नमः + ते - नमस्ते
निः + तेज - निस्तेज

6) **विसर्ग का (लोप) हो जाना** - यदि विसर्ग के बाद (र) आए तो विसर्ग लुप्त हो जाता है और उसके पहले वाला स्वर दीर्घ हो जाता है।

जैसे-नीरोग - निः + रोग
नीरज - निः + रस

7) **विसर्ग में परिवर्तन न होना** - यदि विसर्ग के पूर्व **अ** हो तथा बाद मे **क** या **प** हो तो विसर्ग में परिवर्तन नही होता है

जैसे - अन्तःकरण - अन्तः + करण
अंतःपुर - अन्त + पुर
प्रातः काल - प्रातः + काल

समास

समास का अर्थ है, छोटा करना अर्थात् संक्षेप मे लिखना। किसी विस्तार को सारगर्भित बनाने के लिए संक्षिप्तीकरण का नाम समास है।

दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते है।

समास के प्रकार- समास 6 प्रकार के होते है।

विशेष :- (तत्पुरूषो में विभक्ति, द्वन्द्व में और छिपाया, संख्या वाचक द्विगु, अव्ययी में अव्यय आया, विशेषण विशेष्य जानकर, कर्मधारय जाना, मुख्य अर्थ को छोड़कर बहुब्रीहि पहचाना।)

1) **तत्पुरूष समास** - इसमें उत्तर पद प्रधान होता है। दोनों शब्दों के बीच विभक्ति चिन्हों का लोप होता है।

उदा.

रसोई घर	-	रसोई के लिए घर
राजमहल	-	राजा का महल
पथभ्रष्ट	-	पथ से भ्रष्ट
यश प्राप्त	-	यश को प्राप्त
रचनाकार	-	रचना को करने वाला
शोकाकुल	-	शोक से आकुल
अकाल पीड़ित	-	अकाल से पीड़ित
तुलसीकृत	-	तुलसी द्वारा कृत
प्रेमातुर	-	प्रेम से आतुर
देशभक्ति	-	देश के लिए भक्ति
नरोत्तम	-	नरों में उत्तम

2) **द्वन्द्व समास** - इस समास में दोनों ही पदों की प्रधानता होती है। इस समास में तथा, और, या, अथवा आदि संयोजक शब्दों का लोप होता है।

उदा. और वाले उदा.

अन्नजल	-	अन्न और जल
राधाकृष्ण	-	राधा और कृष्ण
कन्दमूलफल	-	कन्द और मूल और फल
दूध रोटी	-	दूध और रोटी

आदि वाले उदा.

भलाबुरा	-	भला बुरा आदि।
हाथ पाँव	-	हाथ पाँव आदि।
दाल रोटी	-	दाल रोटी आदि।
खाना पीना	-	खाना पीना आदि।

या वाले उदा.

थोड़ा बहुत	-	थोड़ा या बहुत
आजकल	-	आज या कल
घट बढ़	-	घट या बढ़
सुख दुख	-	सुख या दुःख
एक दो	-	एक या दो
जीवन मरण	-	जीवन या मरण

3) **द्विगु समास** - द्विगु समास में पहला पद संख्या वाचक होता है।

उदा.

सतसई	-	सात सौ छन्दों का संग्रह
अष्टाध्यायी	-	आठ अध्यायों का संग्रह
नवरत्न	-	नौ रत्नों का समूह
पंचवटी	-	पांच वट वृक्षों का समूह
पंचामृत	-	पांच अमृत का समूह
त्रिमूर्ति	-	तीन मूर्तियों का समूह
नवरस	-	नौ-रसों का समूह

4) **अव्ययी भाव समास** - जिस सामासिक पद में प्रथम पद अव्यय तथा दूसरा शब्द संज्ञा हो अव्ययीभाव कहलाता है अर्थात् इसमें प्रथम पद प्रधान होता है।

जैसे -

प्रत्यारोप	-	आरोप के बदले आरोप (प्रति + आरोप)
अजन्म	-	अ + जन्म (जन्म से लेकर)
भरपेट	-	भर + पेट (पेट भरके)
प्रतिकूल	-	प्रति + कूल (इच्छा के विरूद्ध)
हाथोहाथ	-	हाथ + हाथ (हाथ ही हाथ)
घर घर	-	घर + घर (घर ही घर)

5) **कर्मधारय समास** - इस समास में दूसरा पद प्रधान होता है और पहला पद विशेषण होता है। इस प्रकार हम सरल भाषा में कह सकते है कि पहला पद, दूसरे पद की विशेषता बताता है।

जैसे -

नीलकमल	-	नीला है जो कमल
चरणकमल	-	कमल के समान चरण
नीलकण्ठ	-	नीला है जो कण्ठ
पीताम्बर	-	पीला है अम्बर जिसका
अधमरा	-	आधा है जो मरा
महावीर	-	महान है जो वीर
पर्णकुटि	-	पत्तों की कुटिया
मृगनयन	-	मृग के समान नयन

6) **बहुब्रीहि समास** - इस समास में कोई पद प्रधान नहीं होता है। दोनों शब्द मिलकर एक नया अर्थ बनाते है।

जैसे-लम्बोदर - लम्बा है उदर जिसका अर्थात् श्री गणेश

प्रधानमंत्री	-	मंत्रियो में प्रधान जो अर्थात् प्रधानमंत्री
चक्रपाणि	-	चक्र है पाणि में जिसके अर्थात् विष्णुजी
गिरिधर	-	गिरि को धारण करने वाले अर्थात् श्रीकृष्ण
निशाचर	-	निशा में विचरण करने वाला अर्थात् राक्षस
त्रिलोचन	-	तीन है नयन जिसके अर्थात् शिव
मृत्युन्जय	-	मृत्यु को जीतने वाला अर्थात् शिव
चन्द्रशेखर	-	चन्द्रमा है शिखर पर जिसके अर्थात् शिव
चन्द्रमौलि	-	चन्द्र है मोलि पर जिसके अर्थात् शिव जी

पर्यायवाची

अर्थ - एक जैसे अर्थ का बोध करने वाले शब्द एक दूसरे के पर्यायवाची कहलाते है इसे समानार्थी भी कहते है।

जैसे - जल - पानी, नीर

पर्यायवाची के दो प्रकार -

1. **पूर्ण पर्यायवाची** :- वे शब्द जो ठीक वही अर्थ अथवा यथावत अर्थ का बोध करावे, पूर्ण पर्यायवाची है - पितृ- पिता
2. **अपूर्ण पर्यायवाची** :- वे शब्द जो समान अर्थ का बोध कराए किन्तु अनेकार्थी होता है अपूर्ण पयार्यवाची या समानार्थी शब्द कहलाते है।

(अ)

अंक - चिन्ह, निशान, प्रतीक, पहचान
अंग - काया, शरीर, गात, बदन तन, वपु, देह
अंश - भाग, हिस्सा, भंग, अवयव, खण्ड, सोपान
अग्नि - धनञ्जय, जातवेद, हुताशन, कृषानु, रोहिताश्व, आग, अनल, पावक,
अचल - गिर, शैल, नग, महिधर, आद्रि
अनुपम - अद्‌भुत, अनूठा, अपूर्व, अद्वितीय, अप्रतिम, अनोखा
अनुवाद - भाषान्तर, उल्था, तर्जुमा, रूपान्तर
अनेक - नाना, कई, एकाधिक, कतिपय
अन्धा - नेत्रहीन, सूरदास, अन्ध, चक्षुविहीन, प्रज्ञाचक्षु
अन्वेषण - गवेषणा, खोज, जाँच, शोध, अनुसन्धान
अपमान - अनादर, अवमान, बेइज्जती, अवज्ञा, तिरस्कार, उपेक्षा
अपराध - कुसूर, दोष, जुर्म
अपार - असमीम, अनन्त, बेहद, बेशुमार, निस्सीम
अप्सरा - सुरबाला, देवबाला, देवांगना, दिव्यांगना, सुर-सुन्दरी
अभिजात - श्रेष्ठ, पूज्य, उच्च, कुलीन
अभिप्राय - अर्थ, तात्पर्य, आशय, मतलब, मायने
अमृत - सुधा, अमिय, सोम, पीयूष, अमी
अरूण - सूर्य, भास्कर, दिवाकर, दिनकर, रवि
अश्व - हय, बाजि, तुरंग, घोटक, घोड़ा, रविसुत
असुर - दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशाचर, रजनीचर, तमीचर

(आ)

आँख - लोचन, नयन, नेत्र, दृग्, आक्ष, चक्षु, दीदा, विलोचन
आँगन - अँगना, अजिर, प्रांगण, अँगनाई
आँचल - पल्ला, छोर, दामर, कोना, कोर
आँसू - अश्रु, नेत्रनीर, नयनजल, नेत्रवारि, नयन-नीर
आकर्षण - दिलकशी, खिंचाव, विमोहन, सम्मोहन, प्रभावकारी
आकलन - कूतना, आँकना, आगणन, मूल्यांकन
आकाश - गगन, नभ, अम्बर, अनन्त, अन्तरिक्ष, शून्य, अभ्र
आकाशगंगा- स्वर्गनदी, सुरनदी, मन्दाकिनी, नभोनदी, नभगंगा
आकृति - चेहरा, मोहरा, नैन-नक्श, डील-डौल, आकार
आक्षेप - आरोप, दोषारोपण, अभियोग, इल्जाम
आखिरकार- अन्ततः, अन्ततोगत्वा, परिणामतः, फलतः, निष्कर्षतः
आख्यान - कहानी, कथा, वृत्तान्त, इतिवृत, किस्सा
आचार - चरित्र, स्वभाव, चाल-ढाल, चलन, प्रकृति
आज्ञा - अनुमति, मंजूरी, स्वीकृति, सहमति, इजाजत
आडम्बर - प्रपञ्च, ढकोसला, स्वाँग, दिखावा, ढोंग
आड़ - परदा, रोक, आश्रय, ओट, आवरण
आंतक - विभीषिका, उपद्रव, अतिभय, संत्रास, दहशत
आदरणीय - सम्मान्य, पूज्य, पूजनीय, मान्यवर, माननीय, श्रद्धेय
आदर्श - नमूना, प्रतिरूप, प्रतिदर्श
आदि - प्रथम, पहला, आदिम, शुरू का, आरम्भिक
आदित्य - भास्कर, दिवाकर, दिनकर, सूर्य, रवि, भानु
आधार - मूल, सहारा, अवलम्ब, जड़, बुनियाद
आनन्द - सुख, चैन, प्रसन्नता, मोद, विनोद, आमोद, प्रमोद, हर्ष
आपत्ति - आपदा, मुसीबत, विपदा, आफ़त, विपत्ति।
आयुष्मान - चिरञ्जीव, दुर्धार्पयु, शतायु, चिरायु, दीर्घजीवी
आलसी - सुस्त, काहिल, ठेलुआ, निकम्मा, निरूद्यमा
आवाज़ - शब्द, स्वर, ध्वनि, वाणी, गिरा, नाद
आवश्यक - ज़रूरी, अपरिहार्य, बाध्यकार, अनिवार्य
आवेग - स्फूर्ति, तेज़ी, जोश, चपलता, त्वरा
आशय - भाव, अभिप्राय, मतलब, अर्थ, तात्पर्य
आशीर्वाद - आशीष, मंगलकामना, आशीर्वचन
आश्रम - मठ, विहार, कुटी, संघ
आहार - भोजन, खाना, खाद्यवस्तु, भोज्यसामग्री

(इ)

इच्छा - अभिलाषा, आकांक्षा, कामना, लालसा, उत्कण्ठा, रूचि, ईप्सा, अभीप्सा, चाहत, मनोरथ
इच्छुक - अभिलाषी, लालायित, आतुर, उत्सुक, उत्कण्ठित
इठलाना - शेखी मारना, ऐंठना, इतराना, शान दिखाना
इनकार - प्रत्याख्यान, अंनगीकार, निषेध, अस्वीकृति
इनाम - उपहार, पुरस्कार पारितोषिक
इन्द्र - सुरपति, शचीपति, मधवा, शक, पुरन्दर, कौशिक, देवराज, मेघपति, सुरेन्द्र, सुरेश, अमरपति
इन्द्रपुरी - देवलोक, अमरावती, इन्द्रलोक, देवेन्द्रपुरी, सुरपुर
इन्द्राणी - इन्द्रवधू, इन्द्रा, शची, पुलोमजा, शतावरी, पौलोमी
इशारा - निर्देश, संकेत, इंगित

(ई)

ईख - गन्ना, ऊख, रसडण्ड, रसाल, पैंड़ी, रसद
ईधन - जलावन, जलाने की लकड़ी, कण्डा, जरनी
ईदृश - इस प्रकार, इस तरह, ऐसे, इस रीति से
ईप्सा - चाह, अभिलाषा, इच्छा, अभीप्सा
ईमानदारी - निष्कपटता, निश्छलता, सदाशयता
ईश - प्रभु, स्वामी, ईश्वर, परमेश्वर
ईश्वर - भगवान्, परमेश्वर, परमात्मा, प्रभु, दीनानाथ, ईश, जगत्प्रभु
ईर्षा - डाह, जलन, कुढ़न, द्वेष
ईर्ष्या - मत्सर, जलन, डाह, कुढ़न, द्वेष

(उ)

उकसाना - उभारना, उत्तेजित करना, उद्‌बाधित करना
उग्र - प्रबल, तेज, प्रचण्ड
उचित - ठीक, सीचीन, मुनासिब, संगत, वाजिब, उपयुक्त
उजाड़ - निर्जन, वीरान, बियाबान, सुनसान, बरबाद, खण्डहर
उजड् - अभद्र, धृष्ट, लण्ड, गंवार, अक्खड़, उद्धत, लम्पट
उतावला - उद्धत, व्यग्र, आतुर, अधीर, हड़बड़िया, जल्दबाज़
उदास - अप्रसन्न, विषण्ण, खिन्न, चिन्ताकुल, उद्विग्न, अन्यमनस्क
उत्तम - बढ़िया, उत्कृष्ट, प्रवर, प्रकृष्ट
उत्कर्ष - उन्नति, उन्मेष, श्रेष्ठ, प्रवर, प्रकृष्ट
उत्कर्ष - उन्नति, उन्मेष, उत्थान, अभ्युदय, आरोह, चढ़ाव, उत्क्रमण, उठाव
उत्पात - उपद्रव, ऊधम, बखेड़ा, टण्टा, शरारत
उत्पत्ति - पैदाइश, जन्म, उद्‌गम, उद्‌भव, आविर्भाव
उतसव - मंगलकार्य, पर्व, जलसा, त्यौहार, समाहोर
उद्यत - तैयार, प्रस्तुत, तत्पर, सन्नद्ध

उथल-पुथल- रद्धो-बदल, हेरा-फेरी, इंकलाब, हेर-फेर, बदलाव
उत्सुक - व्यग्र, आतुर, उत्कण्ठित, रूझान, रूचि
उद्यत - तैयार, प्रस्तुत, तत्पर, सन्नद्ध
उदार - महामना, महाशय,, दरियादिल, उदारचेता
उद्धार - मुक्ति, मोक्ष, निस्तार, छुटकारा, अपमोचन, निर्वाण
उद्यम - ध्यवसाय, परिश्रम, मिहनत, श्रम, पुरूषार्थ, व्यवसाय
उद्धेश्य - प्रयोजन, लक्ष्य, ध्येय, निमित्त, सक्रसद, हेतु
उनींदा - निद्राप्रवण, तन्द्रालु, निद्रालु, निंदासा, ऊँघना
उन्मूलन - अन्त, उत्पादन, निरसन
उपमा - सादृश्य, मिलान, समानता, तुलना
उपहार - सौग़ात, भेंट, तोहफ़ा
उपयुक्त - वांछनीय, ठीक, वाजिब, मुनासिब, उचित, संगत
उपकार - हितसाधन, भलाई, नेकी, कल्याण, परोपकार, अच्छाई
उपजाऊ - उतपादक, उर्वरक, फलप्रद
उपालम्भ - उलाहना, शिकवा, शिकायत
उपवास - निराहर, व्रत, अनशन, फाका
उपहास - हंसी, खिल्ली, अपमान, उपेक्षा
उपयोगी - कार्यकर, इष्टकर, उपादेय
उपस्थित - मौजूद, विद्यमान, प्रस्तुत, हाज़िर, वर्तमान
उपाय - ढंग, युक्ति, जुगत, जुगाड़, तरीका, तरकीब, तदबीर
उपेक्षा - लापरवाही, विरक्ति, उदासीनता, अनाशक्ति, अवहेलना
उलटा - विपरीत, प्रतिकूल, विरूद्ध, प्रतिलोम, औंधा
उल्लास - आह्लाद, आनन्द, हर्ष, प्रमोद, मौज़
उल्लू - कोशिक, उलूक, लक्ष्मीवाहन

ऊ

ऊँचा - उच्च, उत्तुंग, बुलन्द, ऊर्ध्व, ऊपर, तुंग, उन्नत, गगनचुम्बी
ऊँट - लम्बोष्ठ, महाग्रीव, उष्ट्र
ऊँघ - तन्द्रा, ऊँचाई, झपकी, अर्द्धनिद्रा, अलसाई
ऊर्जा - शक्ति, ओज, स्फूर्ति
ऊधम - उपद्रव, उत्पाद, हुल्लड

ऋ

ऋक्ष - रीक्ष/ऋछ, भालू
ऋचा - स्तोत्र, वेदमन्त्र
ऋच्छरा - गणिका, वेश्या, रण्डी, तवायफ़, चंचला, तमाशबीन
ऋजु - सीधा, सुगम, सरल, सहज
ऋद्ध - अनोखा, समृद्ध, सम्पन्न, भरा हुआ

ए

एक - अनोखा, अद्वितीय अनुपम, प्रथम
एकता - समान, एकजैसा, एकरूप, समरूप, अभित्र, मेल
एकाग्र - एकमना, मनोयोगी, एक चित्त, स्थिर
एकसान - अनुग्रह, कृतज्ञता, आभार

ऐ

ऐंठ - अकड़, ठसक, घमण्ड, गर्व
ऐंठन - मरोड़, बल, तनाव, अकड़न, उमेठन, घुमाव
ऐक्य - एकत्व, मेल, एका, एकता
ऐबी - दुष्कर्मी, बुरा, खोटा, दुष्ट, शैतान
ऐश्वर्य - वैभव, सम्पदा, सम्पन्नता, समृद्धि, श्री, सम्पत्ति

ओ

ओठ - होंठ, अधर, ओष्ठ, दन्तच्छद, रदच्छद
ओछा - कमीना, छिछोर, टुच्चा, क्षुद्र, हलका
ओज - बल, ताक़त, जोर, दम, पराक्रम, वीर्य, शक्ति
ओझल - अन्तर्धान, अदृश्य, लुप्त, गायब, तिरोहित, विलुप्त
ओस - तुषार, हिमकण, हिमसीकर, हिमबिन्दु, तुहिनकण

औ

औंगा - गूंगा, वाक्विहीन, वाणीहीन
औघर - अनगढ़, अटपट, अण्डबण्ड, असुन्दर
औदात - श्वेत, गौर, शुक्ल, सफ़ेद, धौला
औदास्य - उदासीनता, वैराग्य, अनिच्छा, मनोमालिन्य

क

कंगाल - निर्धन, दरिद्र, अंकिंचन, गरीब
कंचन - सुवर्ण, सोना, स्वर्ण
कई - नाना, अनेक, विविध, एकाधिक, कई-एक
कटाक्ष - व्यंग्य, आक्षेप, छींटाकशी
कण्ठ - ग्रीवा, गला, शिरोधरा
कबूतर - कपोत, रक्तलोचन, पारावृत, परेवा
काक - कौआ, काग, काण, वायस, पिशुन, करठ
कुत्ता - श्वान, कुक्कुर, शुनक, सारमेय
कुबेर - यक्षराज, धनद, धनाधिप, राजराज, किन्नरेश, नृपराज

ख

खग - विहग, विंहग, पक्षी, चिड़िया, पंछी, शकुनि
खम्भा - थम्भ, स्तम्भ, स्तूप
खल - दुष्ट, अधम, पामर, नीच, शठ, दुर्जन, कुटिल

ग

गंगा - भगीरथी, सुरसरि, देवसरि, त्रिपथगा
गणेश - विनायक, एकदन्त, गजानन, गणाधि, लम्बोदर
गर्भाशय - गर्भ, पेट, बच्चेदानी, उदर, जठर
गरूण - खगेश, पन्नागारि, उरगारि, हरियान, वातनेय
गाय - गौरी, गऊ, गइया, धेनु, भद्रा, गो, सुरभी
गृह - घर, सदन, भवन, मन्दिर, धाम, आगार, आलय

घ

घड़ा - घट, कलश, कुम्भ, गगरा, मटका, गगरी
घिनौना - घृण्य, घृणास्पद, गर्हित, वीभत्स, गन्दा, घृणित
घुमक्कड़ - रमता, सैलानी, पर्यटक, विचरणशील

च

चक्षु - आंख, नयन, नेत्र दृग, लोचन, अक्षि
चन्दन - मलय, दिव्यगन्ध, हरिगन्ध, दारूसार, मलयज
चन्द्रमा - निशानाथ, इन्दु, शशि, शशांक, सुधाकर
चपला - विद्युत, बिजली, दामिनी, तड़ित
चांदी - रजत, रूपक, रूपा, रौप्य, गातरूप, चन्द्रहास

छ

छलांग - उछाल, फाँद, चौकड़ी, उछलकूद
छोह - ममता, स्नेह-प्रेम, प्यार, मोहब्बत, प्रेम, स्नेह, दुलार
छाती - उर, वक्ष, वक्षस्थल, सीना

ज

जगत् - विश्व, संसार, भव, जग, लोक
जमुना - सूर्यतनया, सूर्यसुता, कालिन्दी, अर्कजा, तरणिजा, कृष्णा
जल - तोय, पानी, वारि, नीर, सलिल, अम्बु, पय, जीवन
जानकी - सीता, वैदेही, जनकसुता, जनकतनया, जनकात्मजा
जीव - प्राणी, जीवधारी, जीवनधारी
जीभ - रसना, रसज्ञा, चञ्चलता

झ

झंझट - व्यर्थ का झगड़ा, टंटा, बखेड़ा, प्रपंच
झँपना - ढँकना, छुपना, आड़ में होना
झकोर - हवा का झोंका, झटका, झोंका
झरना - प्रताप, निर्झर, स्त्रोत, उत्स, प्रस्त्रवण
झल - दाह, जलन, आंच
झलक - चमक, दमक, आभा

ट		
टक्कर	–	ठोकर, भिड़न्त, संघट्ट, समाघात, धक्का
टीका	–	व्याख्या, भाष्य, वृत्ति, भाषान्तरण, विवृत्ति
टेढ़ा	–	वक्र, बलदारन, कुटिल, टेढ़ा-मेढ़ा, तिरछा
ठ		
ठग	–	वंचक, प्रतारक, अड़ीमार, प्रवंचक, जालसाज़
ठगी	–	प्रतारणा, वंचना, मायाजाल, फ़रेब, जालसाज़ी
ठिठोली	–	मज़ाक, उपहास, फबती, व्यंग्य व्यंग्योक्ति
ठौर	–	स्थान, जगह, स्थल, ठिकाना
ड		
डर	–	भय, ख़ौफ, त्रास, भीति, आतंक
डरावना	–	भंयकर, भयानक, भयावह, दहशतनाक
डाकू	–	दस्यु, लुटेरा, लुण्ठित, बटमारा डकैत
डोरी	–	जेवरी, सुतली, तनी, रस्सी, डोर
डीलडौल	–	रूप, आकृति, बनावट, रचना, गठन गढ़न
ढ		
ढंग	–	रीति, तरीका, विधि, मुक्ति, उपाय तदबीर
ढिठाई	–	धृष्टता, बेशरमी, अशिष्टता, गुस्ताखी, अविनय
ढेर	–	जमाव, अम्बार, राशि, ओघ
ढोंगी	–	पाखण्डी, बगुलाभगत, रंगासियार, कपटी, छली
त		
तत्पर	–	तैयार, उद्यत, मुस्तैद, कटिबद्ध, सन्नद्ध
तन्मय	–	लीन, मग्न, तल्लीन, ध्यानमग्न, लवलीन
तालाब	–	सर, जलाशय, कासार, ताल, सरसी, छद
तिरस्कार	–	उपेक्षा, अपमान, निरादर, बेइज़्जती, अवमानना, अवहेलना
तीख़ा	–	तीक्ष्ण, तेज़, पैना, प्रखर
तानाशाह	–	अधिनायक, निरंकुश, शासक
तरंग	–	लहर, हिलोर, उर्मि, वीचि, उल्लोल
थ		
थकान	–	थकावट, थकन, श्रान्ति, क्लान्ति
थपेड़ा	–	चपेटा, थप्पड़, झापड़, चांटा
थोथा	–	पोला, खाली, खोखला, रिक्त, छूछा
थल	–	अन्त, हद, छोर, सिरा, सीमा
द		
दंग	–	चकित, विस्मित, हक्का-बक्का, हैरान, आश्चर्यचकित
दंगा	–	उत्पात, उपद्रव, झगड़ा, फ़साद
दण्ड	–	हर्ज़ाना, जुर्माना, सज़ा, शासन, अर्थदण्ड
दरार	–	कटाव, चीर, फटाव, फटन, कटान
द्वेष	–	विरोध, दुश्मनी, खार, शत्रुता, बैर
न		
नदी	–	स्त्रोतस्विनी, लहरी, अपगा, निम्नगा, तरिणी
नमक	–	लवण, लान, समरस, नोन
नश्वर	–	विनाशी, नाशवान्, मरणशील, नाशाधीन, अनित्य
निजी	–	व्यक्तिगत, खुद का, स्वकीय, अपना
नित्य	–	शाश्वत्, अमर, अविनाशी, अमर्त्य, अनश्वर, सदा
निरर्थक	–	अर्थहीन, बेकार, बेमानी, बेमतलब, व्यर्थ
निराला	–	अनोखा, विलक्षण, अद्भुत, अनूठा, बेजोड़, अद्वितीय
निर्वासन	–	देश-निकाला, निष्कासन, जलावतनी
नैसर्गिक	–	प्राकृतिक, स्वाभाविक, वास्तविक
न्यारा	–	अनोखा, अजीब, विलक्षण, निराला, अद्भुत
प		
पंक	–	कीचड़, कीच, कर्दम
पंकिल	–	गन्दला गन्दा, मैला, मलिन
पकड़ना	–	कैद करना, बंदी बनाना, गिरफ्तार, करना
पक्षी	–	पंछी, द्विज़, अण्डज, विहग, खग, विहंग, शकुनि, पतंग
पटु	–	दक्ष, प्रवीण, निपुण, कुशल, होशियार, निष्णात, चतुर
पताका	–	झण्डा, ध्वजा, ध्वज, फरहरा, निशान, केतु
पति	–	वल्लभ, भतरि, आर्यपुत्र, ईश, स्वामी, बालम, जीवनधारा
फ		
फणीन्द्र	–	शेषनाग, वासुकि, उरगाधिपति, सर्पराज, नागराज
फणी	–	सर्प, सांप, फणिधर, नाग, उरग
फूल	–	कुसुम, सुमन, प्रसून, पुष्प, लतान्त, पुहुप
ब		
बगीचा	–	बाग, वाटिका, उद्यान, उपवन
बचपन	–	बालपन, लड़कपन, लड़कई, बाल्यावस्था, बचपना
बलात्कार	–	शीलभंग, सतीत्वहरण, बलात्सम्भोग, शीलहरण, शीलाघात
बाण	–	तीर, तोमर, विशिख, नाराच, शर, इषु, सायक
बालिका	–	बाला, कन्या, बच्ची, लड़की
बेसुध	–	बेहोश, अचेत, मूर्च्छित, संज्ञाहीन, निश्चेष्ट
भ		
भर्त्सना	–	कुत्सा, दुत्कार, झिड़की, डॉट-डपट, फटकार, निन्दा
भाल	–	ललाट, कपाल, माथा, मस्तक
भेदी	–	जासूस, भेदिया, गुप्तचर, दूत
भ्रमर	–	मधुकर, मधुप, अलि, भृंग, भौंरा, मधुराज
भ्रष्ट	–	दुष्ट, पाजी, लुच्चा, बदमाश लफंगा, लम्पट
म		
महादेव	–	शिव, शंकर, हर, महेश, गिरीश, त्रिलोचन, भूतनाथ
महिमा	–	गरिमा, माहात्म्य, गौरव, बड़ाई, महत्ता
मेघ	–	धराधर, घन, जलचर, वारिद, जीमुत, बादल
मोक्ष	–	मुक्ति, निर्वाण, कैवल्य, अपवर्ग, परमपद
मौलिक	–	वास्तविक, असली, आधारभुत, बुनियादी
मार्मिक	–	मर्मान्तक, मर्मभेदी, मर्मस्पर्शी, हदयस्पर्शी
य		
यम	–	सूर्यपुत्र, जीवनपति, अन्तक, धर्मराज, शमन, कीनास
यमुना	–	कालिन्दी, अर्कजा, रवितनया, कृष्णा, जमुना कालगंगा
याचना	–	निवेदन, प्रार्थना, विनय, अर्ज, विनजी
युक्त	–	संलग्न, संयुक्त, जुड़ाहुआ, लगा हुआ
युद्धभूमि	–	युद्धक्षेत्र, समरक्षेत्र, रणक्षेत्र रणस्थान, युद्ध का मैदान
युवावस्था	–	जवानी, तारूण्य, यौवन
र		
रंक	–	दरिद्र, कंगाल, अकिञ्चन, निर्धन, धनहीन
रक्त	–	लोहित, लोहू, शोणित, खून, रूधिर
रक्तपात	–	मार-काट, खून-खराबा, लड़ाई-झगड़ा
रश्मि	–	कर, अंशु, मयूख, मरीच, किरण
राजा	–	नृप, नृपति, भूप, महीप, नरेश, नरपति, भूपति
राधा	–	वृषभानुजा, राधिका, ब्रजरानी, हरिप्रिया
ल		
लक्ष्मण	–	सुमित्रापुत्र, लखन, शेषावतार, रामानुज, सौमित्र
लक्ष्मी	–	श्री, कमला, रमा, इन्दिरा, समुद्रजा हरिप्रिया
लज्जा	–	शर्म, हया, ब्रीड़ा, संकोच, लाज
लालसा	–	लोभ, अभिलाषा, लालच, लिप्सा, तृष्णा
लोहा	–	आयस, सार, लौह, फौलाद, अश्मसार
व		
वंश	–	कुल, घराना, खानदान
वक्ता	–	व्याख्याता, भाषणकर्ता, वाचक, प्रवक्ता
वन	–	अरण्य, कानन, अटवी, विपिन, जंगल, कान्तार

वर्षा - पावस, बरसात, वर्षाकाल, चौमासा, वर्षा, मेह, बारिश
विधवा - पतिहीना, अनाथा, राँड़, पतिविहीना, पतिरहिता
विफल - निष्फल, व्यर्थ, बेकार, निरर्थक, फलरहित

श

श्रृंगार - भूषा, साजसज्जा, रूपसज्जा, सिंगार, सजावट
श्रमिक - मेहनतकश, मज़दूर, कामगार, श्रमजीवी
श्रेष्ठ - मुख्य, प्रधान, उत्कृष्ट, सर्वोपरि, विशिष्ट
शैली - प्रणाली, ढंग, विधि, रीति, परिपाटि

ष

षण्ड - हिजड़ा, जनखा, नामर्द, नपुंसक
षट्कोण - षड्कोणीय, षड्कोण, छःकोना

स

एक - अनोखा, अद्वितीय अनुपम, प्रथम
संहार - बरबादी, समाप्ति, अन्त, नाश, ध्वंस, विध्वंस
समता - तुल्यता, बराबरी, समत्व, सादृश्य, साम्य, समानता
सान्त्वना - दिलासा, आश्वासन, ढाढस
साफ़ - स्वच्छ, उजला, निर्मल, उज्जवल, शुक्ल, श्वेत, पवित्र
संग्रह - संचय, संकलन, जमाव, एकत्र, एकट्ठा
समकालीन - समसामयिक, समकालिक, समवयस्क

ह

हंस - मराल, सरस्वतीवाहन, मुक्तभुक
हत्या - खून, कत्ल, वध, जीवघात
हिरण - मृग, सारंग, हरिण, सुरभी, कुरंग, चितल
हनुमान - पवनसुत, पवनकुमार, महावीर, रामदूत, मारूतिनन्दन, कपिश, पवनपुत्र

महत्वपूर्ण पर्यायवाची

राक्षस - दैव्य, दानव, रजनीचर, निशाचर, राक्षस, यातुधान
अक्षर - हरफ, वर्ण
अनार - दाडिम, शुकप्रिय, रामबीज
आँख - नेत्र नयन, चक्षु, दृग, अक्षि, लोचन
अमृत - हय, घोड़ा, वाजि, तुरंग, सैन्धव, घोटक
अमृत - अमिय, विष, पीयूष, सुधा, सोम
आय - रसाल, आम्र, सौरभ
आग - पावक, अनल, आग, वैश्वानर
अनाज - अन्न, शस्य, गल्ला, धान्य
किरण - रश्मि, कर, अंशु, मरीचि
कौआ - काग, कौआ, एकाक्ष, वायस
कपड़ा - वसन, पट, चीर, अम्बर, वस्त्र
कोयल - कोकिल, वसन्तदूत, कलकण्ड, वनप्रिय, पिक
कुबेर - यक्षराज, यक्षपति, किन्नरेश, धनाधिव
कलिका, मुकुल - कली
कामदेव - मदन, रतिपति, मनोज, कन्दर्प, अनंग
ईच्छा - मनोरथ, कामना, चाह, अभिलाषा, अकांक्षा, ईप्सा
ओंठ - ओठ, ओष्ठ, रदन छंद, रदपुट
गंगा - देवनदी, भागीरथी, मन्दाकिनी, सुरसरिता, जान्हवी
गाय - गौ, गैया, गऊ, धेनु
रक्त - रक्त, लहु, रूधिर, शोणित
चांदी - रजत, जातरूप
जीभ - जिह्वा, रसना
तालाब - सरोवर, सर, जलाशय, तड़ाग, पुष्कर
देवता - सुर, देव, अमर
नारी - महिला, स्त्री, औरत, वामा, आवँला, ललना
तोता - शुक, सुआ, कीर, सुग्गा, सुअटा
ब्राह्म्ण, दाँत, पक्षी, चन्द्रमा, अण्डज -
नदी - सरिता, नदिया, तरंगणी, तटनी
गधा - वैशाखनन्दन, गर्दभ, रासभ
सेना - चमू, कटक, सैन्य, अनी
बिजली - दामिनी सौदामिनी, तड़ित, चपला, चंचल
लक्ष्मी - रमा, कमला, इन्दिरा, श्री, पद्मा, सिन्धुसुता
मुर्गा - अरूणशिखा, ताम्रचूड़, तंमचूक
भौंरा - मधुप, मधुकर, अलि, षट्पद, भृंग
मटका - कलश, घड़ा, निप, कुम्भ

विलोम शब्द

अर्थ :- विलोम का अर्थ होता है विपरीत अर्थ का बोध कराने वाला विलोम शब्द दो प्रकार के होते हैं :-

पूर्ण विलोम :- दिशा और स्तर की दृष्टि से पूर्णतः सटीक होते है

दिशा - विलोम शब्द हमेशा सामने होता है
माँ - बाप
पितृ - मातृ
माता - पिता

अपूर्ण विलोम :- विपरीत अर्थ का बोध अवश्य कराते है शिव स्तर की दृष्टि से शुद्ध नही होते है। शब्द जिस स्तर का है विलोम भी उसी स्तर का होगा।

जैसे -

1. तत्सम का तत्सम
2. तदभव का तदभव
3. देशज का देशज
4. विदेशी का विदेशी
5. उपसर्ग का उपसर्ग
6. प्रत्यय का प्रत्यय

विलोम के दिशा के सम्बन्ध में दिशा सामने की और विपरीत और बोध कराती है-

बालक - वृद्ध
युवक - वृद्ध
वृद्ध - बालक

1. विलोम शब्द केवल विपरीत अर्थ तक सीमित नहीं होते है, वे ऐसे शब्द युग्म भी होते है जो अपना अस्त्वि भी लिए रहते है। अपने अस्तित्व के आधार पर, अपने महत्व के आधार पर एक दूसरे के विलोम होते है।

जैसे -

अग्नि - जल (विरोधी)
जल - वायु (आवश्यक)

शब्द		**विलोम**
अथ	-	इति
अस्त	-	उदय
अनाथ	-	सनाथ
अनिवार्य	-	ऐच्छिक
आहार	-	निराहार
आकाश	-	पाताल
अवनती	-	उन्नति
आम	-	खास
आकाल	-	सुकाल
अज्ञ	-	विज्ञ
निर्दोष	-	सदोष (दोष सहित)
आरोह	-	अवरोह
उदण्ड	-	विनीत
गृहस्थ	-	संन्यासी

खीझना	–	रीझना
जंगम	–	स्थावर
घरेलू	–	जंगली
गणतंत्र	–	राजतंत्र
जेय	–	अजेय
तिमिर	–	प्रकाश
दानी	–	कृपण
नूतन	–	पुरातन
जल	–	थल
चल	–	अचल
झीना (पतला)	–	गाढ़ा
चेतन	–	जड़
इहलोक	–	परलोक
उदयाचल	–	अस्ताचल
गरिमा	–	लघिमा
क्षर	–	अक्षर
जाति	–	विजाति
चोर	–	साधु
नश्वर	–	शाश्वत
नख	–	शिख
निर्माण	–	ध्वंश
कुरूप	–	सुन्दर
कोप	–	कृपा
उन्नत	–	अवनत
ऋजु	–	वक्र
कुलदीपक	–	कुलांगार
कृश	–	पीन
निंदा	–	स्तुति
निरक्षर	–	साक्षर
फूल	–	कांटा
भोगी	–	योगी
श्रव्य	–	दृश्य
मूक	–	वाचाल
विधवा	–	सधवा
श्यामा	–	गौरी
वैतनिक	–	अवैतनिक
नमक हलाल	–	नमक हराम
नेकी	–	बदी
राम	–	रावण
शिव	–	अशिव
लघु	–	गुरू
श्रीगणेश	–	इतिश्री
व्यास	–	समास
पराधीन	–	स्वाधीन
पण्डित	–	मूर्ख
पूर्णिमा	–	अमावस्या
प्रसाद/हर्ष	–	विषाद
बर्बर	–	सभ्य
श्वास	–	उच्छावास
विपन्न	–	संपन्न
मित	–	अमित
मुख्य	–	गौण
प्रेम	–	घृणा
पतिव्रता	–	कुल्टा
युक्त	–	मुक्त
विमुख	–	सम्मुख
संगठन	–	विघटन
हर्ष	–	शोक
प्रश्न	–	उत्तर
उग्र	–	सौम्य
संकीर्ण	–	विकीर्ण
शयन	–	जागरण
विजेता	–	विजित
मोक्ष	–	बंधन
परमार्थ	–	स्वार्थ
भूगोल	–	खगोल
आदि	–	अन्त
आलोक	–	अन्धकार
आदरणीय	–	अनादरणीय
आय	–	व्यय
उन्मीलन	–	निमीलन
उत्तर	–	दक्षिण
कनिष्ठ	–	वरिष्ठ
गम्भीर	–	अगम्भीर
चल	–	अचल
जल	–	निर्जल
जननी	–	जनक
जन्म	–	मरण
जीवित	–	मृत
जंगम	–	स्थावर
कुसंग	–	सुसंग
अथ	–	इति
अधम	–	श्रेष्ठ
आकाश	–	पाताल
आदर	–	निरादर
आशा	–	निराशा
उत्तरार्द्ध	–	पूर्वार्द्ध
कृतज्ञ	–	कृतघ्न
कर्षण	–	विकर्षण
घृणा	–	प्रेम
जल	–	थल
जड़	–	चेतन
जय	–	पराजय
दास	–	स्वामी
जाग्रत	–	सुषुप्त
आना	–	जाना
कदाचार	–	सदाचार
खण्ड	–	अखण्ड
आहार	–	निराहार
दुर्लभ	–	सुलभ
धनी	–	निर्धन
पण्डित	–	मुर्ख
पुण्य	–	पाप
पूर्ववर्ती	–	परवर्ती
भद्र	–	अभद्र
भाव	–	अभाव
मधुर	–	कटु
मिट	–	अमिट
योग	–	भोग
रिक्त	–	सिक्त

वरिष्ठ	–	कनिष्ठ
विनम्र	–	उच्छृंखल
विशेष	–	सामान्य
वृद्ध	–	बालक
शक्त	–	अशक्त
शीत	–	उष्ण
संकलन	–	व्यकलन
संस्कृति	–	विकृति
सर्द	–	गरम
सहित	–	रहित
सकाम	–	निष्काम
साकार	–	निराकार
सित	–	असित
सुगम	–	दुर्गम
सम्मुख	–	पृष्ठ
स्वीकार	–	अस्वीकार
स्वस्थ	–	अस्वस्थ
हानिप्रद	–	लाभप्रद
धर्म	–	अधर्म
न्याय	–	अन्याय
निर्भीक	–	भीरू
नीरस	–	सरस
पराजय	–	जय
पूर्व	–	पश्चिम
प्रकाश	–	अधंकार
प्रशंसक	–	निदंक
भला	–	बुरा
भेद	–	अभेद
महल	–	झोपड़ी
मान	–	अपमान
मित्र	–	शत्रु
मृत्यु	–	जीवन
रूचि	–	अरूचि
वाचाल	–	मूक
विधवा	–	साधवा
शंका	–	निशंका
शुभ	–	अशुभ
संयोग	–	वियोग
सज्जन	–	दुर्जन
सम्भव	–	असम्भव
सबल	–	निर्बल
सजीव	–	निर्जीव
सार्थक	–	निरर्थक
सुगन्ध	–	दुर्गन्ध
साधवा	–	विधवा
सपूत	–	कपूत
सृष्टि	–	प्रलय
स्त्री	–	पुरूष
स्वर्ग	–	नरक
हित	–	अहित
अभिसरण	–	उपसरण
अद्यतन	–	पुरातन
अनुदार	–	उदार, प्रति क्रियाशील
अनुययी	–	विरोधी
अंत	–	आदि

सावधान	–	लापरवाह
अनिवार्य	–	वैकिल्पक, ऐच्छिक
अगाध	–	छिछला
अनुराग	–	विराग
अविशेष	–	निः शेष
अर्वाचिन	–	प्राचीन
अमर	–	मर्त्य
अति	–	सुगम
अस्तेय	–	स्तेय
अनृत	–	ऋत
अवगुणी	–	गुणवान
अंवर	–	अवनि
अवसान	–	आविभवि
अनुग्रह	–	विग्रह, कोप
आक्रमण	–	प्रतिरक्षा
आयोजन	–	वियोजन
अशन	–	अनशन
अवाक्	–	सवाक्
अर्पण	–	गृहण
अमित	–	परिमित
अभिनन्दन	–	निन्दा
अपेक्षा	–	उपेक्षा
अवयव	–	समूचा
आकर्षण	–	प्रतिकर्षण/विकर्षण
आपत्ति	–	सम्मपति
आनंद	–	शोक/विषाद
आलोक	–	अधंकार
आर्द्र	–	शुष्क
आराम	–	तकलीफ
आकुंचन	–	प्रसरण
आजादी	–	गुलामी
आद्य	–	अंत्य
आविर्भाव	–	तिरोभाव
आलसी	–	कर्मठ
आडम्बर	–	सादगी
आदरणीय	–	निन्दनीय
आपदा	–	सम्पदा
उद्धत	–	विनत
उग्र	–	सौम्य
उल्लंघन	–	पालन
उज्ज्वल	–	धूमिल
उद्भव	–	पराभव
उद्धत	–	अनुद्धत
उत्सुक	–	उदासीन
उर्वर	–	ऊसर/बंजर
उद्घाटन	–	समापन
ऋजु	–	वक्र (तिरक्षा)
ऋण/ऋणी	–	उऋण
उपमा	–	व्यतिरेक
उपमान	–	उपमेय
उल्लास	–	अवसाद
उन्मूलन	–	निमीलन (खिलाना)
उष्ण	–	शीत/शीतल
ऋद्ध	–	दत्तक
कारण	–	कार्य

कुण्ठ	-	तीक्ष्ण
कल्पित	-	यथार्थ
कुटिल	-	सरल
क्रोध	-	क्षमा
कोलाहल	-	शांति
क्षणिक	-	शाश्वत
खण्डन	-	मण्डन
ऐहिक	-	पारलौकिक
कटु	-	मृदु
कर्कश	-	मधुर
लुप्त	-	व्यक्त
कड़ा	-	मुलायम
कृश	-	पीन
खरा	-	खोटा
खगोल	-	भूगोल
खग	-	मृग
गुप्त	-	प्रकट
ग्राम	-	नगर
गुरू	-	लघु
गरिमा	-	लघिमा
घृणा	-	प्रेम
चेतन	-	जड़
जंगली	-	घरेलु
गौण	-	मुख्य
गृहस्थ	-	संन्यासी
गरल	-	सुधा
गहन	-	पुलिन
व्यभिचारी	-	सदाचारी
गौरव	-	लाघव
सघन	-	बिरल
चोर	-	साधू
चंचल	-	स्थिर
मग्न	-	उद्विग्न
मूक	-	वाचाल
मुदित	-	खिन्न
याचक	-	दाता
लिखित	-	मौखिक
विशिष्ट	-	सामान्य
विश्लेषण	-	सश्लेषण
वियोग	-	सयोग
श्यामा	-	गौरी
वृद्धि	-	ह्रास
रचना	-	ध्वंस
राहत	-	प्रकोप
लुभावना	-	घिनौना
व्यष्टि	-	समष्टि
व्यापक	-	संकुचित
विजयी	-	परास्त
शारीरिक	-	मानसिक
शूर	-	भीरू
शालीन	-	धृष्ट
सापेक्ष	-	निरपेक्ष
समर्थन	-	विरोध
श्रृव्य	-	दृश्य
श्रोता	-	वक्ता
समास	-	व्यास
स्तुति	-	निंदा
स्वामी	-	दास/सेवक
सशस्त्र	-	निरहत्त/निशस्त्र
स्थूल	-	सूक्ष्म
संधि	-	विग्रह
सुडौल	-	वेडौल
सख्त	-	नर्म
सहयोगी	-	प्रतियोगी
सैद्धान्तिक	-	व्यावहारिक
सम्मानित	-	अपमानित/उपेक्षित
सार्वजनिक	-	निजी/वैयक्तिक
सुस्त	-	फुर्तीला
हास	-	रूदन
सुदूर	-	सन्निकट
तलवार	-	ढाल
अनुज	-	अग्रज
पापी	-	निष्पाप
पदोन्नति	-	पदावनति
अधोमुख	-	अभिमुख
वारिस	-	लावारिस
वन	-	मरू
मसृण	-	दक्ष
उपसर्ग	-	परसर्गृ
हमदर्द	-	बेदर्द
सटा	-	हटा
शीर्ष	-	तल
वफादर	-	बेईमान/बेवफा
रद्द	-	बहाल
भव्य	-	फूहड, साधारण
भग्न	-	साबुत
प्रगतिशील	-	रूढ़िवादी
दब्बू	-	दबंग
आराध्य	-	दुराध्य
आक्रमक	-	आक्रमिक
अनाजी	-	फलाहारी

उपसर्गो-द्वारा निर्मित विपरीतार्थक शब्द

अनुराग	-	विराग
असीम	-	ससीम
अनुकूल	-	प्रतिकूल
अकाम	-	निष्काम
अवकाश	-	अनवकाश
आहार	-	अनाहार
आदर	-	अनादर
आवर्तक	-	परावर्तक
आस्तिक	-	अनास्तिक
आहत	-	अनाहत
उचित	-	अनुचित
कपट	-	निष्कपट
कुली	-	अकुलीन
गमन	-	आगमन
घात	-	प्रतिघात
दूर	-	पास

नश्वर	-	अनश्वर
निर्लज्ज	-	सलज्ज
नैतिक	-	अनैतिक
पवित्र	-	अपवित्र
पेय	-	अपेय
प्रत्यक्ष	-	अप्रत्यक्ष
मानवीय	-	अमानवीय
योग	-	वियोग
शिव	-	अशिव
संकोच	-	असंकोच
अल्पज्ञ	-	अनल्पज्ञ
आकाल	-	सुकाल
अग्रज	-	अनुज
अभ्यस्त	-	अनभ्यस्त
आमिष	-	निरामिष
आरोहण	-	अवरोहण
आहूत	-	अनाहूत
आदरणीय	-	अनादरणीय
आशा	-	निराशा
उत्कर्ष	-	अपकर्ष
उपयोग	-	अनुपयोग
कर्म	-	निष्कर्म
कीर्ति	-	अपकीर्ति
गोचर	-	अगोचर
चल	-	अचल
जय	-	पराजय
दृश्य	-	अदृश्य
नित्य	-	अनित्य
नीरस	-	सरस
पक्ष	-	विपक्ष
पात्र	-	अपात्र
प्रकाश	-	अन्धकार
भिज्ञ	-	अनभिज्ञ
यश	-	अपयश
वाद	-	प्रतिवाद
श्वास	-	प्रश्वास
साधु	-	असाधु

एकसाथ आनेवाले विपरीतार्थक शब्द

अन्त	-	अनन्त
अमीर	-	ग़रीब
अनुरक्त	-	विरक्त
लाभ	-	हानि
धर्म	-	अधर्म
मरना	-	जीना
प्रशंसक	-	निन्दक
सन्त	-	असन्त
वरदान	-	अभिशाप
आकाश	-	पाताल
आहूत	-	अनाहूत
कल्पिक	-	वास्तविक
प्रशंसक	-	निन्दक
सहयोगी	-	विरोधी
आरोह	-	अवरोह
नर	-	नारी
सुख	-	दुःख
राजा	-	रंक
सार्थक	-	निरर्थक
यश	-	अपयश
कुपात्र	-	सुपात्र
भूषण	-	कुभूषण
आय	-	व्यय
उर्वर	-	अनुर्वर
कर्म	-	अकर्म
जय	-	पराजय
दीर्घ	-	ह्रस्व
क्षणिक	-	शाश्वत्
संघटन	-	विघटन
आबाल	-	वृद्ध
लौकिक	-	परलौकिक
सन्धि	-	विग्रह
अवर	-	प्रवर
अकाल	-	सुकाल
स्वर्ग	-	नरक
ऋजु	-	वक्र
कनिष्ठ	-	वरिष्ठ
गुरू	-	शिष्य
युद्ध	-	शान्ति
अल्पज्ञ	-	बहुज्ञ
सदाचार	-	दुराचार
रक्षा	-	अरक्षा
संकीर्णा	-	विस्तीर्ण
स्वर	-	व्यंजन
बहुमत	-	अल्पमत
आशा	-	निराशा
स्थूल	-	सूक्ष्म
मान	-	अपमान
अगम	-	गम
विषम	-	सम
आकर्षण	-	विकर्षण
जटिल	-	सरल
ऋणात्मक	-	धनात्मक
शब्द	-	विपरीत
अदोष	-	सदोष
उपसर्ग	-	प्रत्येक
विशेष	-	सामान्य
जागृति	-	सुषुप्ति
आस्था	-	अनास्था
शब्द	-	विपरीत
प्रकृति	-	पुरूष
तिमिर	-	आलोक
जन्म	-	मरण

तत्सम

तत्सम - तत्सम का शाब्दिक अर्थ है-उसी के समान अर्थात् संस्कृत समान होना अर्थात् सांस्कारिक होना। जो शब्द मूल भाषा संस्कृत से उत्पन्न है, वे शब्द तत्सम कहलाते है। उनका प्रयोग जैसे का तैसा किया जाता है। अतः संस्कृत के शुद्ध शब्दों को तत्सम कहते है।

उदा. **उज्ज्वल, अंगुष्ठ, अन्ध, अक्षि आदि।**

तद्भव – ये वे शब्द होते है, जो संस्कृत से निकलकर बाहर प्रयोग में आते है और परिवर्तित होकर बिगड़ जाते है। इन्हे साहित्यिक भाषा में अपभ्रंश कहते है।
जैसे :- उजला, हाथ, आँख, आँसू, इतवार

तद्भव		तत्सम
अँगरखा	–	अंगरक्षक
अखरोट	–	अक्षोट
अचरज	–	आश्चर्य
अदरक	–	आर्द्रक
अपना	–	आत्मनः
अमिय	–	अमृत
इतवार	–	आदित्यवार
आँत	–	आंत्र
उड़	–	उड्ड
आंसू	–	अश्रु
उल्लू	–	उलूक
आसरा	–	आश्रय
ईख	–	इक्षु
ईंट	–	इसिका
आप	–	आत्मा
आम	–	आम्र
ऊँट	–	उष्ट्र
कंगन	–	कंकण
कछुआ	–	कच्छप
कपड़ा	–	कर्पटक
कांटा	–	कण्टक
काठ	–	काष्ठ
कर्तब	–	कर्तव्य
कोयल	–	कोकिल
कौआ	–	काक
खंडहर	–	खंडगृह
खजूर	–	खर्जूर
घड़ा	–	घट
चकवा	–	चक्रवाक
चौखट	–	चतुष्काठ
छंद	–	छिद्र
छाता	–	छत्रक
घूंघट	–	गुठंन
घी	–	घृत
पाना	–	प्राप्त
पंगत	–	पंक्ति
पाती	–	पत्रिका
पत्थर	–	प्रस्तर
परख	–	परीक्षा
पीपल	–	पिप्पल
नींबू	–	निम्बक
पास	–	पार्श्व
कुँआ	–	कूप
बकरा	–	वर्कर
मक्खन	–	म्रक्षण
मक्खी	–	मक्षिका
महावत	–	महापात्र
बोना	–	वामन
भांजा	–	भागिनेय
माँ	–	माता
मदारी	–	मंत्रकारी
भीख	–	भिक्षा
भूख	–	बुभुक्षा
बिजली	–	विद्युत
बीच	–	बर्त्म
बूंद	–	बिन्दु
रस्सी	–	रश्मि
रानी	–	राज्ञी
राजपूत	–	राजपुत्र
लंगड़ा	–	लंग
मेह	–	मेघ
मिठाई	–	मिष्टि
मोर	–	मयूर
ससुर	–	श्वसुर
सनीचर	–	शनैश्चर
सताना	–	संतापन
सुअर	–	शुकर
सुआ	–	शुक
सीला	–	शीतल
सुन्न	–	शून्य
सुहाग	–	सौभाग्य
सिंगार	–	शृंगार
सींग	–	शृंग
सांड	–	षण्ड
सिक्ख	–	शिष्य
सावन	–	श्रावण
सिकड़ी	–	शृंखला
साड़ी	–	शाटी
सास	–	श्वश्री
ससुराल	–	श्वसुरालय
सूई	–	सूची
सूत	–	सूत्र
सोना	–	स्वर्ण
हीरा	–	हीरक
सेज	–	शय्या
हड्डी	–	अस्थि
हाथी	–	हस्ती
सौत	–	सपत्नी
मूँछ	–	श्मश्रु
लखपति	–	लक्षपति
लाज	–	लज्जा
मेढ़क	–	मंडूक
साला	–	श्याल
साई	–	स्वामी
साहू	–	साधू
साग	–	शाक
फाँसी	–	पाशिका
फागुन	–	फाल्गुन
बगुला	–	बक
बछड़ा	–	वत्स
बाजा	–	वाद्य
बहनोई	–	भगिनीपति
बिच्छू	–	वृश्चिक
बीघा	–	विग्रह
भाभी	–	भ्रातृभार्या

भालू	-	भल्लुक
भौंह	-	भ्रू
मंडुआ	-	मंडप
माँग	-	मार्ग
नंदोई	-	नंनादृपति
नारियल	-	नारिकेल
दामाद	-	जामाता
जनेऊ	-	यज्ञोपवीत
जम	-	यम
जम्हाई	-	जृम्भिका
जीभ	-	जिह्वा
घोड़ा	-	अश्व
इकतीस	-	एकत्रिंशत्
इतना	-	इयत
इमली	-	अमलीका
ईख	-	इक्षु
उछाह	-	उत्साह
उपरोक्त	-	उपर्युक्त
उलाहना	-	उपालम्भ
एँड़ी	-	अण्डी
एकता	-	ऐक्य
इतवार	-	आदित्यवार
इस	-	ऐतस्य
इस्थिति	-	स्थिति
ईंट	-	ईष्टिका
ईधन	-	ईंधन
उल्लू	-	उलूव
ऊखल	-	उद्खल
एवज	-	स्थानापन्न
कबूतर	-	कपोत
केल	-	कदली
कोढ़	-	कुष्ठ
कच्चा	-	कुपच
खम्भा	-	स्तम्भ
खपड़ा	-	खर्पर
गवैया	-	गायक
गाय	-	गो
गुन	-	गुण
घड़ा	-	घट
घड़ी	-	घटी
घी	-	घृत
कछुआ	-	कच्छप
करतब	-	कर्त्तव्य
काम	-	कर्म
कुदारी	-	कुद्धाल
कंगाल	-	कंकाल
खेत	-	क्षेत्र
खीर	-	क्षीर
खार	-	क्षार
गधा	-	गर्दभ
गल्त	-	ग़लत
गहरा	-	गम्भीर
गेहूँ	-	गोधूम
गोबर	-	गो-विष्ट
घर	-	गृह
घास	-	तृण
घोड़ा	-	घोटक
चख	-	चक्षु
चमड़ा	-	चर्म
चूना	-	चूर्ण
चौपाया	-	चतुष्पद
छाँह	-	छाया
छेद	-	छिद्र
जब	-	यदा
जमाई	-	जामाता
जुगति	-	युक्ति
जौ	-	यव
झरोखा	-	जालक
झनकार	-	झंकृत
टका	-	टंक
टकसाल	-	टंकशाला
टूटना	-	त्रुट्यते
ठण्डा	-	स्तब्ध
डाँड	-	दण्ड
ढीला	-	शिथिल
चुल्लू	-	चुल्लुक
चन्द्र	-	चाँद
चीता	-	चित्रक
चौराह	-	चतुष्पथ
छकड़ा	-	शकट
छत	-	छत्र
छाता	-	छत्रक
जीभ	-	जिहा
जोबन	-	यौवन
ठाँव	-	स्थान
डर	-	दर
डोरा	-	डोरक
ढौंचा	-	अर्द्धचतुर्थ
तव	-	तदा
तिली	-	तिल
तेल	-	तैल
दाँत	-	दन्त
धुँआ	-	धूम
नाई	-	नापित
नींद	-	निद्रा
पूरा	-	पूर्ण
पाख	-	पक्ष
फूल	-	पुष्प
बहू	-	वधू
बाघ	-	व्याघ्र
बुरा	-	विरूप
ताँबा	-	ताम्र
दही	-	दधि
दाद	-	दन्दु
धीरज	-	धैर्य
धुनि	-	ध्वनि
नीम	-	निम्ब
नाक	-	नासिका
प्रथवी	-	पृथ्वी
पात	-	पत्र

पाती	-	पत्रिका
बहन	-	भगिनी
बढ़ई	-	वर्द्धकि
बावली	-	वापी
बाग़	-	वाटिका
बटेर	-	वर्त्तक
भँवर	-	भ्रमर
भाई	-	भ्राता
भुवाल	-	भूपाल
भैंसा	-	महीष
माथा	-	मस्तक
मटका	-	घड़ा
मक्खी	-	मक्षिका
माला	-	मानिक
भगत	-	भक्त
भालू	-	भल्लुक
भौं	-	भ्रू
मानुस	-	मनुष्य
मसा	-	मशक
मिष्ठान	-	मिष्टान्न
लकड़ी	-	लगुड़
लाख	-	लक्ष
लोभ	-	लुब्ध
सन्यासी	-	संन्यासी
ससुराल	-	श्वसुराल
सवा	-	सपाद
रूठा	-	रूष्ट
रोआँ	-	रोम
रोटी	-	रोटिका
लँगोट	-	लिंगपट्ट
लोढ़ा	-	लोष्ठ
शाम	-	सन्ध्या, सांय
साहित्यक	-	साहित्यिक
सराध	-	श्राद्ध
सपना	-	स्वप्न

देशज् (देशी) एवं आगत

- भाषिक सन्दर्भ में इसका अर्थ होगा, 'देश की भाषा'।
- व्युत्पत्तिगत अर्थ की दृष्टि से देखें तो इसके अन्तर्गत संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं से लिये गये शब्द ही नहीं, द्रविड़ - परिवार की भाषाओं के शब्द भी समाहित हो जाते हैं।
- 'देशज् उन जीवन-काल में लोक व्यवहार में अज्ञात, सहसा अथवा किसी ध्वनि के अनुकरण के आधार पर निर्मित हो गये है।
- ये शब्द प्राकृतों और संस्कृत साहित्य में अप्रयुक्त हैं तथा आस्ट्रिक, द्रविड़ आदि अनार्य भाषाओं से गृहीत हो सकते हैं।
- हिन्दी में देशज् शब्द' शीर्षक से अपने शोध प्रबन्ध में डॉ. पूर्णसिंह डबास ने ऐसे 1, 167 शब्दों की सूची प्रस्तुत की है, जिनकी व्युत्पत्ति अज्ञात है। उनमें से कुछ शब्द यहाँ उद्धृत किये गये हैं।

अंगड़-खखड़	अंट-शंट	अक्खड़	अचकचाना
अचानक	अटपटा	अलबेला	अल्लम-गल्लम
आहट	इठलाना	उमंग	ऊटपटांग
ऊलूलजलूल	ओझल	ओढर	औचक
कंजर	कचारना	कचोटना	कटकना
कनकना	कनटक	करार	कराहना
किचर-पिचर	कीनर-मीनर	किलकिल	बिलबिलाना
कुचुकचा	कुरकुरी	कूड़ा	कोंपर
कौंधना	कौरा	खटना	खद्धर
खनक-खनक	खर्चा	खुरदरा	खुर्राट
खूँटी	खूसट	खोखला	गद्धा
गरेरी	गली	गिड़गिड़ाना	गिरगिट
बिलबिलाना	गुदड़ी	गुप-चुप	गेंदा
गोद	घमण्ड	घुमड़ना	घेघा
घोंसला	चकमा	चकल्लस	चट्टान
चप्पल	चराना	चिड़चिड़ा	चिन्दी
चींटी	चुड़ैल	चुनमुनाना	चुनरी
चुहल	चौका	छलाँग	छीछालेदर
जुगनू	झंझट	झकझोरना	झक्की
झरोखा	झिझक	झिड़की	झुमका
टटोलना	टपरा	टाप	टीमटास
टुकुर-मुकुर	टेसु	ठर्रा	ठूँसना
ठेस	डग	डहर	डाबर
डेरा	ढकोसला	ढिबरी	ढोर
ताँगा	तितर-बितर	थोथा	धब्बा
धमकाना	धाक	पचड़ा	फंदा
फफूँद	बकबक	बकर-बकर	बजबज
बहकाना	बिलबिलाना	बीहड़	बोरी
बौखलाना	बौड़म	भटकना	भौचक्का
मचलना	मसकना	माँद	मिचलना
रगड़ना	रेवड़ी	लचर लट्टू	लथपथ
लथेड़ना	लसर-पसर	सक-पकाना	सिलवट
सिट्टी-पिट्टी	हक्का-बक्का	हड़बड़	हेकड़ी

आगत शब्द

- आगत शब्द, वे शब्द होते है, जिन्हे उधार लिये हुए शब्द कहते हैं।
- 'आगत शब्द' किसी दूसरी भाषा से लिये हुए वे शब्द होते हैं, जो उस भाषा के भाषक के सम्भाषण से लिये जाते हैं और उन शब्दों को मूल रूप में अथवा बदले हुए रूप में से लिया जाता है।

आगत शब्द तीन प्रकार के होते हैं

1. पाचित आगत शब्द
2. शाब्दिक अनुवाद
3. संकर शब्द

1. पाचित आगत शब्द -

इसके अन्तर्गत वे शब्द आते हैं, जो पूर्णतः किसी भाषा में प्राप्त ध्वनियों के अनुकूल बना लिये जाते है; जैसे - रसीद टिकिट, इंजिन आदि।

अ. अरबी के शब्द

अदा	अजब	अमीर	अदावत	अक़्ल	असर
अहमक	अल्ला	आसार	आख़िर	आदमी	आदत
इनाम	इज़्ज़त	इमारत	इस्तीफ़ा	इलाज	ईमान
उम्दा	उम्र	एहसान	औरत	औलाद	कुसूर
क़दम	क़ब्र	क़सर	कमाल	क़र्ज	क़िस्सा
क़िस्मत	किला	क़सम	क़ीमत	कसरत	कुर्सी

किताब	क़ायदा	ख़बर	ख़त्म	ख़त	ख़राब
ख़ुतूत	ख़याल	ग़रीब	जुलूस	जिस्म	जलसा
जनाब	जवाहर	जवाब	जहाज़	जालिम	ज़िक्र
तमाम	तकाज़ा	तकाज़ा	तवारिख़	तक़िया	तमाशा
तरफ़	तरक्क़ी	तजुरबा	तादाद	दाखिल	दिमाग
दवा	दावा	दावत	दफ़्तर	दग़ा	दाग़
दुआ	दुक़ान	दिक	दुनिया	दौलत	दीन
नतीजा	नशा	नक़द	नक़्श	नहर	नाल
फ़क़ीर	फिक्र	फायद	बहस	बाक़ी	मुहावरः
मदद	मरजी	माल	मिसाल	मज़बूर	मालूम
मामूली	मुल्क़	मल्लाह	मौसम	मौक़ा	मुसाफिर
मशहूर	मतलब	मानी	राय	लिहाज	लिफाफ़ा
लायक	वकील	शराब	हिम्मत	हैज़ा	हिसाब
हरामी	हद	हक़	हुक्म	हाल	हाकिम
हमला	हवालात	जाज़िर	हाज़िर		

आ. फ़ारसी के शब्द

असोस	आबदार	आतिशबाज़ी	अदा	आमदनी	आवारा
औलिया	अंजीर	अनार	अंगूर	आईना	आफ़त
आवाज़	आइन्दा	उम्मीद	इत्र	ईमानदार	कबूतर
कुश्ती	किशमिश	किनारा	ख़ामोश	खरगोश	खुशगर्द
गल्ला	गोला	गवाह	गिरफ्तार	गरम	
गिरह	गुलाब	गोश्त	चश्मा	चाबुक	चादर
चालाक	चराग़	चेहरा	जंग	ज़हर	ज़िन्दगी
जादू	जागीर	जुरमाना	जोश	तरकश	तमाशा
तेज़	तनख़्वाह	ताज़ा	दीवार	देहान्त	दुकान
दंगल	दिल	दवा	नापसन्द	नापाक	नौजवान
पाजामा	पाक	परदा	परहेज	परवाह	पलंग
पैदावार	पुल	पेशा	पैमान	बहर	बेहूदा
बीमार	बेरहम	मलाई	मादा	मरहम	मुर्दा
मुफ़्त	मोर्चा	मुर्ग़ा	रंग	रोगन	लश्कर
लगाम	वर्ना	वापस	शादी	शोर	सरदार
सितारा	सरकार	सौदागर	हफ्ता	हज़ार	सवेरा

इ. तुर्की के शब्द

आगा	आका	उजबक	उर्दू	कालीन	क़ाबू
कैंची	कुली	कुर्की	चिक	चमचा	चेचक
चारपाई	चाकू	चुगल	चोगा	चकमक	जाजिम
तोप	तुरूक	तमगा	तलाश	बेग़म	बहादुर
बुलबुल	बीवी	दरोगा	लफंगा	लाश	मुग़ल
सुराग	सौगात	चुगद	चील	नागा	चाक

ई. पश्तों के शब्द

अखरोट	अटकल	गड़बड़	गुण्डा	जमालगोटा	भड़ास
नगाड़ा	पठान	पटाखा	मटरगश्ती	रूहेला	लुच्च

अँगरेज़ी के शब्द

आइस क्रीम	पैरासूट	जीन	मेकअप	ब्लाउस	जम्पर
अगस्त	अप्रैल	अक्टूबर	अपील	ऑफ़िसर	अर्दली
अस्पताल	ऑफिस	ऑर्डर	ओवरसियर	ऐलुमिनियम	अण्डरवियर
इंच	इंजिन	इंजीनियर	इनकमटैक्स	इनक्रीमेण्ट	एडवांस
एजेण्ट	कम्पनी	कमीशन	कमिश्नर	कॉलेज	पंक्चर

स्कूल	स्टेशन	मोटर	कैलेण्डर	कमेटी	काँग्रेस
कॉपी	कॉलर	स्कूटर	साइकिल	बस	टैक्सी
कार	टेबिल	इंजेक्शन	डॉक्टर	थर्मामीटर	मलेरिया
जज	डिग्री	जेलर	टिकट	टेनिस	डायरी
मास्टर	ड्राइवर	दिसम्बर	नर्स	नम्बर	पॉकेट
पार्क	पार्टी	पार्सल	पेन्सिल	पेट्रोल	प्लेग
पुलिस	प्रेस	फैक्टरी	मनीऑर्डर	फ़ीस	फ़ु
फ़ोटो	बटन	बिल	लॉटरी	मई	मैनेजर
रसीद	रिपोर्ट	रजिस्ट्री	टेरिलिन	लालटेन	साइंस
सर्विस	होटल	कोट	क्रिकेट	हॉकी	कर्नल
मेजर	क्रीम	पॉवडर	प्लेट	पेन	डक
कार्ड	चेक	गिलास	स्लेट	पम्प	ट्यूब
मशीन	रेडियो	सिगरेट	अप्	मीटर	लीटर
नट	बोल्ट	क्लास	बैटरी	डान	बिस्किट
टॉफी	टोस्ट	ब्रेक	चॉकलेट	बोनस	सैलरी

पुर्तगाली शब्द

अनानास	अचार	आलमारी	आलपीन	आया	कमीज
काजू	कनस्तर	सागौन	कमरा	गमला	गिरिजा
गोदाम	चाबी	तम्बाकू	नीलम	परात	पावरोटी
पादरी	पिस्तोल	फीता	बाल्टी	संतरा	इस्पात
इस्तिरी	फर्मा	मस्तूल	मेज	कोको	पपीता
गोभी	तौलिया	लबादा			

फ्रेंच - अँगरेज़ी, कूपन, कारतूस
डच - तुरूप, बम, ड्रिल, स्काउट
रोमन - अँगरेज़ी महीनों के नाम - जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर, नवम्बर, तथा दिसम्बर
चीनी - चाय, लीची, पटाखा, तूफ़ान
जापानी - रिक्सा
अफ्रीकी - वेंजो
लैटिन - इंच, एजेण्डा, कोटा, कोरम, जनवरी, अक्तूबर, नम्बवर, पेंशन, मशाल, स्कूल, इस्पताल, रेडियो, राशन
ब्राज़ील - तम्बाकू
मैक्सिको - टमाटर, कोको
यूनान - ज्योतिष का होड़ा-चक्र, एकेडेमी, ऐटम, एटलस, बाइबिल, टेलीग्राफ़

अन्य भारतीय भाषाओं - उपभाषाओं के शब्द

हिन्दी में कुछ अन्य भारतीय भाषाओं से भी शब्द आये है; जो नीचे दिये गये है

मुण्डा - कौड़ी
द्रविड़ - बिल्ला, मीन, नीर
मराठी - चलतू, टिकाऊ
बांग्ला - गल्प, उपन्यास

(2) शाब्दिक अनुवाद

जब किसी भावाभिव्यक्ति के यथारूप वर्णन के लिए कोई शब्द नहीं मिलता तब विदेशी अनुवाद कर लिया जाता है; जैसे - ''जहाँ चाह वहाँ राह।''

(3) संकर (मिश्रित) शब्द

जिस शब्द में किसी शब्द का एक भाग ही 'आगत' होता है तथा शेष भाग अपनी भाषा अथवा अन्य किसी भाषा देशी-विदेशी का हो सकता है, वह 'संकर' भाषा' है; जैसे - कपड़ामिल, लाठीचार्च, अग्निबोट आदि।

समध्वनिमूलक शब्द

शब्द		अर्थ
अंगद	-	वाजूवंध
अगद	-	रोग रहित
अंचल	-	किसी क्षेत्र का भाग
आंचल	-	कपडे का छोर
अंगना	-	स्त्री
अँगना	-	आँगन
अंत	-	समाप्त
अत्य	-	अंतिम
अंतर	-	फर्क
अनंतर	-	बाद में
अथक	-	जो थकता न हो
अकथ	-	जो कहा न जा सके।
अनल	-	आग
अनिल	-	हवा
अन्न	-	अनाज
अन्य	-	दूसरा
अंस	-	कंधा
अंश	-	हिस्सा
अमूल	-	जिसकी जड़ न हो
अमूल्य	-	जिसका मूल्य न हो (अनमोल)
अरथी	-	टिकटी (मृत्यु शैय्या)
अर्थी	-	चाहने वाला
अरबी	-	भाषा
अरवी	-	सब्जी कंद
अरि	-	शत्रु
अरी	-	सम्बोधन करना
अवधि	-	समय (काल)
अवधी	-	भाषा (क्षेत्र)
अर्ध्य	-	अजुली भर जल देना
अर्थ	-	बहु मूल्य
अवलंव	-	सहारा
अविलंव	-	शीघ्र
अलि	-	भौरा
अलि	-	सखी
असक्त	-	उदासीन
आसक्त	-	कामुक
असन	-	भोजन
आसन	-	बेठने का स्थान सीट
आसन्न	-	निकट
आदि	-	प्रारम्भ
आदी	-	बगैरह/अभ्यस्त
आधि	-	दुख/कष्ट
आधी	-	आधा होना
आभरण	-	गहना/जेवर
आवरण	-	पर्दा
आमरण	-	मरने तक
आयात	-	मंगाना
आयत	-	जिसकी आमने-सामने की भुजा समान हो।
आरती	-	पूजा/अर्चना/वंदना
आर्ति	-	दुख
आहुति	-	हवन में डालने वाली सामग्री
आहूति	-	बुलाना
इन्द्रा	-	इन्द्र की पत्नी
इन्दिरा	-	लक्ष्मी
इति	-	अन्त
ईति	-	पीडा/कष्ट
उदाहरण	-	मिसाल
उद्धरण	-	वाक्य के यथावत कथन
उन	-	वे का विकार
ऊन	-	भेड़ के बाल
उबारना	-	संकट से निकालना
उभारना	-	प्रोत्साहित करना।
ऋत	-	सत्य
ऋतु	-	मौसम
ओटना	-	कपास में से बीज अलग करना।
औटना	-	उबालना/खौलना
करकट	-	कूडा/कचरा
कर्कट	-	केकड़ा
कलि	-	कलियुग
कली	-	अद्ध खिला फूल
कांति	-	चमक
क्रांति	-	आंदोलन
क्लांति	-	थकावट
कृत्य	-	काम
कृत	-	किया हुआ
क्रीत	-	खरीदा हुआ

कटिबद्ध - कमर कसे तैयार
कटिबंध - पृथ्वी के काल्पनिक भाग

कड़ाई - सख्ती
कढ़ाई - सिलाई
कड़ाही - वर्तन

कपिश - मटमैला
कपीश - हनुमान

करोड - संख्या
क्रोड - गोद

कुंतल - केश
कुंडल - कान का आभूषण

कुल - वंश/योग
कूल - किनारा

कौड़ी - घोंघा
कोढ़ी - बीमारी/रोग/कोढ़ से ग्रसित
कोडी - 20 का गुणज

कोस - दूरी
कोश - शब्द का कोश (संग्रह)
कोष - खजाना

क्षति - हानि
क्षिति - पृथ्वी

कोर - किनारा/सिरा
कौर - निवाला

गाड़ी - वाहन
गाढी - पास-2

गूंथना - विखोना
गूंथ गूंथना- सानना

गड़ना - चुभना
गढ़ना - बनाना
गणना - गिनती

गृह - घर
ग्रह - नक्षत्र
चक्रवाक - चक्रवापक्षी
चक्रवात - तूफान
चपत - धोखा/चाटा देना
चंपत - भाग जाना
चिर - स्थाई/काल बोधक
चीर - कपड़ा
चीड़ - वृक्ष

चूड़ - चोटी
चूर - शिथिल

चेली - शिष्या
चैली - लकडी के टुकड़े (पतले)

चौंक - आश्चर्य का भाव
चौक - चौराहा

जगत - कुऐं के आस-पास का चबूतरा
जगत् - संसार

जघन्य - बहुत बुरा या भयानक (भीषण)
जघन - (कूल्हे)
जरठ - बूढ़ा
जठर - पेठ

जुआ - वैल के ऊपर की लकडी
जूआ - द्युत

जोंक - पानी का कीड़ा
झोंक - झोकना/झुबना

झक - सनक
झख - तुच्छ कार्य

टुक - थोडा
टूक - टुकड़ा

ढ़ीठ - नजर/दृष्टि
दीठ - घृष्ठ

तक्र - पतला छाछ
तर्क - दलील देना/किसी के विषय पर विचार

तड़ाक - जल्दी
तड़ाग - तलाव
तुरंग - घोड़ा
तरंग - लहर

दशन - दांत
दराग - दशगलब

तरणी - सूर्य
तरणि - नौका
तरूणी - युवती

दायी - देना वाला
दाई - बच्चो को पालने वाली दासी

द्वीप - टापू
दीप - दीपक
द्विप - हाथी

नाई - बाल काटने वाला, (नउआ)

नाई - तरह

नकल - प्रति लिपि
नकुल - नेवला

नंदी - शिवजी का बैला
नांदी - मंगलाचरण

नाहर - शेर
नागर - चतुर

नियत - निश्चित
नियति - भाग्य

निर्जर - जिसको बुढ़ापन आऐ
निर्झर - झरना

पथ - रास्ता
पथ्य - रोगी का भोजन

पानी - जल
पाणि - हाथ

परिणत - रूपान्तरित
परिणीत - विवाहित
परिणति - परिणाम निष्कर्ष

प्रणत - झुका हुआ
प्रणीत - वनाया हुआ

परिणाम - निष्कर्ष
परिमाण - मात्रा

नाड़ी - नब्ज या नस
नारी - स्त्री

नावक - छोटा वाण
नाविक - नाव चलाने वाला (केवट)

परिताप - दुख/संताप, पीड़ा
प्रताप - आपकी कृपा, ऐश्वर्य

परिवर्तन - बदलाव
प्रवर्तन - शुरू करना

पीक - पान की थूक
पिक - कोयल

मनुज - मानव
मनोज - कामदेव

भित्ति- दीवार
भीति - डर

मद - घमण्ड, अहंकार

मद्य - शराब

भट - योद्धा
भट्ट - पंडित (विद्ववान)

बहु - बहुत
बहू - पुत्र बधू

बालू - रेत
व्यालू - शाम का भोजन

बंदी - कैदी
वंदी - या प्रशंसक

फन - हुनर
फण - साँप का सिर
फड़ - विछावन

पुर - नगर
पूर - बाढ़

मेघ - बादल
मेध - यज्ञ
मेधा - बुद्धि

रेचक - दस्तावर
रोचक - दिलचस्प

वादय - तर्क/वितर्क
वाद्य - बाजा

विवरण - वृतांत
विवर्ण - रंगहीन

संकर - मिश्रित जाति का
संकर - शिव

शान - तडक भडक
सान - धार

बहिन - भगिनी
वहन - खर्चा

बलि - भेंट
बली - बलवान/वीर
प्राकार - चाहरदीवारी
प्रकार - तरह

प्रदीप - दीपक
प्रतीप - उल्टा

रिस - गुस्सा
रीस - ईर्ष्या

लवण - नमक

लवन	-	कटाई
वन	-	जंगल
वन्य	-	जंगली
व्यंग	-	विकलांग
व्यंग्य	-	कटाक्ष, उपहास
शुक	-	तोता
शूक	-	जौ
शूर	-	वीर
सूर	-	सूर्य
सत्	-	सत्य/सच्चाई
सत्त	-	सार
सत्व	-	एक गुण
सन	-	पटुआ, पटसन (रस्सीवाला)
सन्	-	वर्ष
सर	-	तालाब
शर	-	तीर
सुधि	-	होश
सुधी	-	बुद्धि
स्वेद	-	पसीना
श्वेत	-	सफेद
हट	-	परे होना/दूर हटाना
हठ	-	जिद
हरि	-	विष्णु भगवान
हरी	-	कलर/रंग
हल	-	समाधान/खेत जोतने वाला
हल्	-	हलन्तचिह्न
पट्ट	-	ब्लैक बोर्ड
पट	-	दरवाजा

समानार्थी शब्द

अतीन्द्रिय, अज्ञेय

जिसका अनुभव इन्द्रियों-द्वारा न हो सके, उसे 'अतीन्द्रिय' कहा जाता है। इसे 'अगोचर' भी कहा जाता है। जिसे जाना न जा सके, उसे 'अज्ञेय' कहा जाता है; अर्थात् ईश्वर।

अनुसन्धान, अन्वेषण, आविष्कार, शोध, गवेषणा

अनुसन्धान 'शोध' और 'गवेषणा' का विषय होता है। किसी वस्तु की गुप्त और सूक्ष्म बातों का सुनियोजित पद्धति से अध्ययन-अनुशीलन करने को 'अनुसन्धान' कहते हैं। 'अन्वेषण' में खोजी जानेवाली वस्तु अस्तित्व में रहती है किन्तु उसका ज्ञान नहीं रहता। 'आविष्कार' में किसी नयी वस्तु को अस्तित्व में लाया जाता है। जैसे - भारत की खोज की गयी थी किन्तु दुग्ध मापने के यन्त्र का आविष्कार किया गया था।

अभिमान, स्वाभिमान, अहं, अहंकार, अंहमन्यता, घमण्ड, अहंता

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता की एक पंक्ति है, ''दृष्टि हो अभिमान उठता बोल है।'' जब किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिष्ठा के अतिरिक्त रूप का ज्ञान होने लगता है तब वह 'अभिमान' से भर जाता है। 'स्वाभिमान' में व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा की मर्यादा में रहकर रक्षा करता रहता है। इसी के ठीक विपरीत अभिमान' की स्थिति रहती है। 'अंह' में 'हम किसी से कम नही'' रेखांकित होती है। दिनकर की एक पंक्ति है, ''हृदय-चतुष्ट में से एक या अंहकार अपहृत नृप का जलता है।'' अहंमन्यता' जबकि अभिमान का विकराल विग्रह 'घमण्ड' है। अहंता 'अहं' का ही भाववाचक संज्ञा शब्द है।

अलौकिक, असाधारण

जो इस संसार में प्राप्त नहीं होता, उसे 'अलौकिक' कहते हैं। यह दिव्य चमत्कार से युक्त होता है। हाँ, अपवाद के रूप में काव्य द्वारा अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती हैं जब किसी की साधना अथवा उपलब्धि सामान्य से 'विशिष्ट' तक पहुंचती है तब उसे 'असाधारण' की कोटि में रेखांकित करते हैं।

आँधी, झंझा, वात्याचक्र, तूफान, चक्रवात

जो हवा मिट्टी, धूल, घास-फूस आदि को अति तीव्र गति में उड़ाती है, वह हवा 'आँधी' कहलाती है। जब आँधी के साथ बरसात होती है तब उसे 'झंझा' कहते हैं। आँधी का उग्र रूप 'वात्याचक्र' और झंझा का उग्र रूप 'तूफ़ान' कहलाता है। गोलाकार चक्कर लगाते हुए जब प्रचण्ड आँधी-तूफान वृत्ताकार चक्कर लगाते हुए आता है तब उसे 'चक्रवात' अथवा 'बवण्डर' कहा जाता है।

आज्ञा, आदेश

बड़ों की ओर से प्राप्त होनेवाला आदेश 'आज्ञा' है। जैसे - पिता की आज्ञा से सुरभि ने विवाह-प्रस्ताव को स्वीकार लिया। वहीं 'आदेश' शासकीय होता है, जो अपरिहार्य होता है। जैसे - शासनादेश के चलते भ्रष्ट आई.ए.एस. अधिकारियों पर आयकर-विभाग की भकृटि टेढ़ी हो गयी है।

आधि, व्याधि

मानसिक पीड़ा को 'आधि' कहते हैं। शारीरिक कष्ट 'व्याधि' है।

आराधाना, उपासना, अर्चना, साधना, तप, कीर्तन, भजन

ईश्वर से दया की याचना करने को 'आराधना' कहते हैं। अपने इष्ट के समीप बैठकर जिस क्रिया से उसे प्रसन्न किया जाता है, उसे 'उपासना' कहते हैं। जब अपने इष्ट की धूप, दीप, चन्दन, पुष्प आदि नैवेद्य से पूजा की जाती है तब वह 'अर्चना' कहलाती है। एक दीर्घ अवधि तक मन को जब अपने इष्ट में केन्द्रित कर लिया जाता है तब वह 'साधना' कहलाती है। नियमपूर्वक साधना करने को 'तप' कहते है। मानसिक उपासना और वन्दना से सम्बन्धित गायन, भजन आदि की सामूहिक प्रस्तुत 'कीर्तन' है।

उदाहरण, दृष्टान्त, नज़ीर

जब किसी विचार अथवा तथ्य को प्रमाणित करने के लिए दृष्टान्त प्रस्तुत किया जाता है, वह 'उदाहरण' कहलाता है। जब किसी बात के समर्थन में उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है तब वह 'दृष्टान्त' बन जाता है। चरित्र, व्यवहार, शिक्षा, उपदेश आदि के सन्दर्भ में इसकी प्रस्तुति होती हैं यह प्रायः कथा के रूप में होता है। विनोबा भावे के दृष्टान्त द्वारा 'सर्वोदय' की सकंल्पना को स्थापित करना, उदाहरण न होकर, 'दृष्टान्त' होगा। दृष्टान्त को अरबी भाषा में 'नज़ीर' कहते हैं।

उपहास, व्यंग्य, चुटकी, कटाक्ष

जब किसी को अपमानित करने के उद्धेश्य से उसकी खिल्ली उड़ायी जाती है तब उसे 'उपहास' कहते हैं। जब किसी को प्रताड़ित चिढ़ाने तथा व्यथित करने के उद्धेश्य से लक्षणा और व्यंजना में कटाक्ष किया जाता है तब वह 'चुटकी' कहलाता है। इसमें किसी को दुखी करने अथवा क्षति पहुंचाने का उद्धेश्य नहीं रहता जिसमें किसी को नीचा दिखाने का उद्धेश्य निहित रहता है, वह 'कटाक्ष' कहलाता

है। 'कटाक्ष' चुटकी से कुछ अधिक अर्थ-बोध करानेवाला और मारक शब्द है।

ऋषि, मुनि, साधक

जो ब्रह्मज्ञानवेत्ता होता है, वही 'ऋषि' होता है। जो मौन रहकर धर्म, दर्शन आदि पर चिन्तन करता है, वह 'मुनि' कहलाता है। जो किसी विशेष कार्य के सम्पादन करने में अपनी पूरी क्षमता के साथ लीन रहता है, उसे 'साधक' कहते हैं।

काल, युग

निर्धारित समय को 'काल' कहते है; जैसे जीवनकाल। व्यापक अर्थ में प्रयुक्त काल को 'युग' कहते है; जैसे - आधुनिक युग, मध्यकालीन युग, प्राचीन युग। एक युग में कई कालों का समावेश हो सकता है। युग कई शताब्दियों तक फैला रहा सकता है।

कुशल, दक्ष, निपुण, पटु

किसी कार्य में अपनी क्षमता का विशेषज्ञतापूर्ण प्रयोग करना 'कुशल' का लक्षण है। 'दक्ष' में अनवरत अभ्यास और अनुभव के गुण समाहित हो जाते हैं। हर कार्य को दक्षतापूर्वक करने के गुण को 'निपुण' कहते हैं। व्यावहारिक दृष्टि से किसी भी क्षेत्र में अन्य व्यक्तियों से आगे बढ़ जाने के गुण को 'पटु' कहते हैं।

चेष्टा, प्रयत्न, श्रम, परिश्रम

जब किसी काम के लिए हाथ-पैर हिलाया जाता है तब उसे 'चेष्टा' कहा जाता है। जब किसी कार्य को अन्तिम रूप देने के लिए किसी व्यक्ति - द्वारा लगातार चेष्टा की जाती है तब वह 'प्रयत्न' कहलाता है। जब किसी प्रयत्न अथवा चेष्टा के कारण उत्पन्न शारीरिक थकान होती है तब उसे 'श्रम' कहा जाता है। जब शारीरिक थकान के साथ-साथ मानसिक थकान भी हो जाए तब उसे 'परिश्रम' कहते हैं।

जलज्, अरविन्द, इन्दीवर, कमल

सामान्य कमल को 'जलज्' कहते हैं। श्वेत कमल को 'अरविन्द' कहा जाता है। नील कमल 'इन्दीवर' कहलाता है। लाल कमल के अर्थ में 'कमल' शब्द का प्रयोग होता है।

जाँच, परीक्षा, पूछ-ताछ

जब किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के गुणों, योग्यताओं आदि से सम्बन्धित सामान्य ज्ञान का परिक्षण किया जाता है तब वह 'जाँच (परिक्षण) कहलाता है। एक निश्चित योग्यता के आधार पर प्रश्नपत्र देकर अथवा वैज्ञानिक यन्त्रों से किसी व्यक्ति अथवा वस्तु की व्यस्थित ढंग से की गयी 'जांच' 'परीक्षा' कहलाती है। ज्ञातव्य है कि परीक्षा वस्तु अथवा व्यक्ति-विशेष से ही सम्बन्धित होती है, जबकि पूछ-ताछ उस वस्तु अथवा व्यक्ति के सम्बन्ध में दूसरों से की जाती है।

तट, तीर, पुलिन, किनारा

जब जलाशयों के समीप का भूखण्ड सूख जाता है तब उसे 'तट' कहते हैं। वही भूखण्ड यदि गीला हो तो उसे 'पुलिन' कहा जाता है। जो भूखण्ड जल का स्पर्श करता हो, उसे 'तीर' कहते हैं। जल के ऊपर निकला हुआ भूखण्ड 'किनारा' कहलाता है।

दम्भ, दर्प, मद

जो व्यक्ति योग्यता और सामर्थ्य से अधिक अपनी शक्ति का मिथ्या प्रचार करता है, वह उसका 'दम्भ' कहलाता है। इसे मिथ्याभिमान के निकट समझना चाहिए। जब कोई व्यक्ति अनुशासनविहीन और उच्छृंखल होकर दूसरों को अपमानित करता है तब उसका वह कार्य 'दर्प' कहलाता है। जब व्यक्ति के भले-बुरे तथा उचित-अनुचित का ज्ञान गिर (सो) जाता है तब वह उसका 'मद' कहलाता है।

दया, कृपा, अनुकम्पा

जब किसी असहाय और निरीह प्राणी के प्रति सहायता और संवेदना की भावना जन्म लेती है तब उसे 'दया' कहते है। ज्ञातव्य है कि दया सामान्यतः अयाचित होती है, जो सहज ही उत्पन्न हो जाती है। जब दूसरों को सहायता के रूप में सुख-सन्तोष, सुविधाएँ आदि प्रदान की जाती हैं तब वह 'कृपा' कहलाती है। ज्ञातव्य है कि कृपा अयाचित भी हो सकती है। जब दूसरों के दुःख और कष्ट को देखकर, उसे दूर करने का सहज भाव उत्पन्न होता है, उसे 'अनुकम्पा' कहते हैं। बड़े लोगों के द्वारा छोटों पर कृपा और अनुकम्पा की जाती है।

दिल्लगी, हँसी, चुहल, परिहास, विनोद

जब एक-दूसरे के दिल को बहलाने के लिए बातें की जाती हैं तब उसे 'दिल्लगी' कहते हैं। इसमें कुछ क्षणों के लिए झूठी बातें भी शामिल कर ली जाती हैं। जब विशुद्ध मनोरंजन किया जाता है तब उसे 'हँसी' कहते हैं। जब उन्मुक्त भाव से हंसी-दिल्लगी की जाती है तब उसे 'चुहल' कहते हैं। हंसी की प्रतिक्रिया में उड़ायी जानेवाली हंसी 'परिहास का ही एक-दूसरा रूप' विनोद' कहलाता है।

दुःख, कष्ट, खेद, शोक, पीड़ा, दर्द, विषाद, संताप

प्रतिकूल और हानिकारक बातों के फलस्वरूप उत्पन्न मानसिक अनुभूति को 'दुःख' की संज्ञा दी गयी है। प्रतिकूल और कठिन परिस्थितियों के कारण जो शारीरिक अथवा मानसिक थकान उत्पन्न होती है, उसे 'कष्ट' कहते हैं। कष्ट को ही दुःख का व्यापक रूप कहा गया है। किसी भूल अथवा त्रुटि के चलते जो क्षणि दुःखानुभूति होती है, उसे 'खेद' कहते हैं। किसी व्यक्ति की मृत्यु अथवा किसी गहन क्षति के फलस्वरूप उत्पन्न दुःख को 'शोक' कहा गया है। अत्याधिक श्रम से होनेवाले कष्ट को 'पीड़ा' कहते हैं। यह भी कष्ट की तरह शारीरिक और मानसिक होती है। मानसिक पीड़ा के उग्र और अपेक्षाकृत स्थायी रूप को 'वेदना' कहा जाता है। वेदना का हल्का रूप है, 'व्यथा'। इसमें रह-रहकर मन में दुःख उठता है। जब इच्छाएँ अधूरी रह जाती है तब मन में जो निराशा की गहन भावना उत्पन्न होती है, उसे 'विषाद' कहा जाता है। जब इस प्रकार की व्यथा में कुछ स्थायित्व आ जाता है अथवा ऐसी भावना कुछ दिनों तक बराबर बनी रहती है तब उसे 'संताप' कहते हैं।

नारी, स्त्री, महिला, बाला (किशोरी), वामा

युवती अथवा वयस्क स्त्री 'नारी' कहलाती है। 'स्त्री' नारी-मात्र का पर्याय है। 'वृद्धा' स्त्री कहलाती है, नारी नहीं। कुलीन, शिष्ट, शिक्षिता 'महिला' कहलाती है। जो लड़की 12 से 16 वर्ष के अन्दर की अवस्थावाली होती है, उसे 'बाला 'अथवा 'किशोरी' कहते है। 21 वर्ष से 35 वर्ष की नारी 'युवती' की श्रेणी में आती है। पति के वाम-पक्ष (बायाँ भाग) में बैठने के कारण पत्नी को 'वामा' कहा जाता है।

पुरस्कार, पारितोषिक, पारिश्रमिक

किसी श्रेष्ठ कार्य अथवा उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए दी जानेवाली धनराशि अथवा कोई वस्तु 'पुरस्कार' कहलाती है। सामान्यतः, इसके लिए भी प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है, जो गुप्त रूप में होता है। व्यक्ति उनमें प्रत्यक्षः सम्मिलित नहीं रहता। 'पारितोषिक' के लिए खुली प्रतियोगिताएं आयोजित होती है, जिनमें प्रतियोगी की भागीदारी अनिवार्य रहती है। इन प्रतियोगिताओं में केवल विजेता-वर्ग को 'पारितोषिक' दिया जाता है। परिश्रय के परिणामस्वरूप जो धन दिया जाता है, उसे 'पारिश्रमिक' कहते हैं। उदाहरण के लिए - किसी लेखक को उसकी पुस्तक छपने पर प्रकाशक - द्वारा जो रूपये दिये जाते हैं, उसे 'पारिश्रमिक' कहते हैं, जो एकमुश्त नक्द (शुद्ध शब्द 'नक्द' होता है, न कि नक़द) धनराशि अथवा चेक़ के रूप में होता है।

प्रेम, स्नेह, अनुराग, वात्सल्य, प्रणय

रूप, गुण आदि के प्रभाव से उत्पन्न सुख - शांतिप्रदायिनी मानसिक अनुभूति को 'प्रेम' कहते हैं। अपने से कनिष्ठ के प्रति व्यक्त प्रेम को 'स्नेह' कहते हैं। माता-पिता जब अपनी सन्तान को स्नेह करते हैं तब वह 'वात्सल्य' कहलाता है। शुद्ध प्रेम-भावना की

अभिव्यक्ति 'अनुराग' है। जब दो युवा आपस में प्रेम का आदान - प्रदान करते हैं तब उसे 'प्रणय' कहते हैं।

बुद्धि, प्रज्ञा, परिज्ञा, ज्ञान

जब किसी काम को विवेकपूर्ण ढंग से किया जाता है तब उस काम करने की क्षमता 'बुद्धि' कहलाती है। बौद्धिक और आत्मिक उन्नयन का आधार 'प्रज्ञा' कहलाती है। विशेषज्ञतापूर्ण ढंग से किसी तात्विक विषय का बोध होना 'परिज्ञा' का द्योतक हैं दूसरे शब्दों में - ईश्वर, आत्मा, जीव, संसार, माया आदि के विषय का संज्ञान 'परिज्ञा' है। जब व्यक्ति धन, दौलत, संस्कृति, साहित्य, कलादि की जानकारी अर्जित करता है, तब उसे 'ज्ञान' कहते हैं।

मन, बुद्धि, प्रज्ञा

विचार अथवा मनन-शक्ति को 'मन' कहते हैं। निश्चयात्मक शक्ति को 'बुद्धि' कहते हैं। बुद्धि का विकसित और उन्नत रूप 'प्रज्ञा' है। ज्ञातव्य है कि प्रज्ञा का सम्बन्ध आत्मिक ज्ञान में रहता है और बुद्धि का भौतिक ज्ञान से।

मित्र, सखा, सुदृढ़, बन्धु

जब किसी समवयस्क में अपनत्व की भावना हो तब वह 'मित्र' कहलाता है। जब दो शरीर एक प्राण बन जाते हैं तब उसे 'सखा' कहते हैं। जो निःस्वार्थ भाव से उपकार करता है, वह 'सुहद' कहलाता है। एक ही माँ के गर्भ से उत्पन्न भाई 'बन्धु'; अर्थात् भाई अथवा सहोदर कहलाता है।

संस्कृति, सभ्यता

'सस्कृति' के द्वारा व्यक्ति का आत्मिक विकास होता है। 'सभ्यता' के द्वारा व्यक्ति का मौलिक विकास प्रकट किया जाता है। जैसे - यूनान की संस्कृति अति प्राचीन है। सिन्धु घाटी की सभ्यता इतिहास का प्राणतत्व है।

सतर्क, सावधान, जागरूक

जब प्राणी आसन्न संकट का सामना करने के लिए पूरी तरह से सावधान हो जाता है तब उसे 'सतर्क' कहते हैं। जब किसी प्राणी को सम्बन्ध कार्य से सम्बन्धित सारी आवश्यक बातों का ज्ञान हो जाता है और तदनुसार कार्य करना उसके लिए आपेक्षित हो जाता है तब उसे 'सावधान' कहते हैं। जाग्रत, सचेष्ट तथा सक्रिय रहने की अवस्था को 'जागरूक' कहते है।

सम्माननीय, श्रद्धेय, पूज्य (पूजनीय), आदरणीय

जो मनुष्य अपने किसी कार्य-विशेष अथवा गुण-विशेष के कारण सम्मान के पात्र होते हैं, वे 'सम्माननीय' कहलाते हैं। जब इन सम्मानीय व्यक्तियों के प्रति यदि सम्मान के साथ साथ 'श्रद्धा' का भाव भी उमड़ने लगे तब वे ही 'श्रद्धेय' बन जाते हैं। माता-पिता, ज्येष्ठ स्वजन, गुरू आदि 'पूज्य' अथवा 'पूजनीय' कहलाते हैं। ऐले लोग, जो अपने सम्बन्धी नहीं है, किन्तु ज्येष्ठ और गणमान्य है, 'आदरणीय' कहलाते हैं।

सम्मति (राय-सुझाव), अनुमति

जब कोई व्यक्ति किसी को तर्कसंगत सुझाव अथवा परामर्श है तब उसे 'सम्मति' कहते हैं। जब किसी को किसी कार्य को करने के लिए सम्मति दी जाती है तब वह 'अनुमति' कहलाती है। ज्ञातव्य है कि अनुमति में सम्मति का भाव निहित है। जैसे - तुम बैडमिण्टन खेलने के लिए कल से कोर्ट में आ सकते हो। ज्ञातव्य है कि अनुमति सदा बड़ों से ली जाती है।

अनेकार्थक शब्द

अ

अंक - अक्षर, गोद, शरी, पाप, बार भाग्य, धब्बा
अकुंश - नियन्त्रण, दबा, हाथी को चलाने - रोकने का अंकुश
अंग - भेद, पक्ष, टुकड़ा अंश, शाखा, शरीर
अक्ष - आत्मा, पहिया, धुरी, आंख, रथ, सूर्य, ज्ञान
अधर - ओष्ठ, अन्तरिक्ष, नीचे का तुच्छ, बिना आधार का
अन्न - पृथ्वी, प्राण, अनाज, खाद्य पदार्थ, दूसरा
अयन - काल, अंश, गति, आश्रम, स्थान

आ

आकर - खान, स्त्रोत, कोष, उत्पत्ति-स्थान, श्रेष्ठ
आत्मा - स्वरूप, सूर्यय, अग्नि, परमात्मा
आली - सखी, पंक्ति, गीला, मान्यवर
आपत्ति - एतराज, विपत्ति, व्यवधान, मुसीबत

इ

इड़ा - पृथ्वी, गाय, वाणी, स्तुती, अन्न, स्वर्ण, दुर्गा, नाड़ी - विशेष
इतर - अन्य, नीच, चरस, अन्त्यज
इन्द्र सूर्य, बिजली, स्वामी, ज्येष्ठा नक्षत्र, दायीं आखं की?
इन्दु - चन्द्रमा, कपूर, गणित में एक की संख्या

ई

ईडा - स्तुति, प्रशसां, 'इड़ा' नाम की नाड़ी
ईति - विघ्न-बाधा, पीड़ा, आपदा, अण्डा, प्रवास
ईशान - अधिपति, महादेव, ग्यारह की संख्या, पूर्व और उत्तर के बीच का

उ

उगना - उदय होना, निकल आना, पैदा होना, प्रकट होना
उत्तर - उत्तर दिशा, जवाब, बाद का
उच्च - श्रेष्ठ, बड़ा ज़ोर का उठा हुआ
उमा - पार्वती, दुर्गा, हल्दी, अलसी, कीर्ति, कान्ति

ऊ

ऊड़ा - घाटा, कमी, अकाल, तेज़ी, लोप, नाश
ऊना - न्यून, हीन, तुच्छ, सुस्त, दुःखी
ऊभ - उभरा हुआ, ऊँचा, घबराहट, उमंग, उत्साह, हौंसला

ऋ

ऋक्ष - भालू, नक्षत्र, तारा, रैवतक पर्वत का एक अंश, शौनाक वृक्ष
ऋजु - सीधा, सज्जा, अनुकूल, सरल
ऋद्धि - सम्पन्नता, सफलता, लक्ष्मी, गौरव, सिद्धि

ए

एक - इकाइयों में सबसे पहली और छोटी संख्या, अनोखा केवल, समान
ऐल - बाढ़, बहुतायत, कोलाहल, मंगलग्रह

ओ

ओक - घर, ठिकाना, नक्षत्रों, का समूह, ग्रहों का समूह
ओल - सूख, गीला, मनौती, आड़, गोंद
ओइ - बड़वानल, नमक, मुनि-विशेष

क

कक्षा - परिधि, गृह के घूमने का मार्ग, तुलना, श्रेणी
कर्ण - कान, कुन्ती का पुत्र, समकोण, त्रिभुज में समकोण के सामने की
कमल - एक फूल, एक मांसपिण्ड, जल, तांबा
कल - श्रेष्ठ, अस्फुट मधुर, ध्वनि, मशीन, आराम
कर्म - क्रिया, भाग्य, मृतक-संसार
कड़ा - कठोर, कठिन, कंकड़, कर्कश, तेज़
कमान - आदेश, प्राधिकारी, धनुष

ख

खग - पक्षी, बाण, तारा, गन्धर्व
खण्ड - भाग, देश, वर्षा, नौ की संख्या, समीकरण की एक क्रिया
खल - दुष्ट, तलछट, खरल, चुगलखोर, धतूरा, दवा कूटने का पात्र
खून - रक्त, मार-काट, हत्या
खोर - दोष, गली, तिलक

ग

गद्दी – महाजन की बैठकी, शिष्य, परम्परा, सिंहासन, छोटा गद्धा
गम्भीर – गहरा, घना, भारी, जटिल, चिन्ताजनक, शान्त
गुरू – भारी, शिक्षक, मन्त्रदाता, पूज्य, दो मात्राओं वाला
गाढ़ा – घनिष्ठ, दृढ़, घना, मोटा
गुलाबी – गुलाब की रंग का हलका, गुलाब का

घ

घट – शरीर, घड़ा, कम
घड़ी – समय बतानेवाला यन्त्र, 24 मिनट का समय, क्षण
घाट – किसी जलाशय या नदी का वह स्थान – जहां लोग पानी भरते और नहाते हैं, पहाड़, मार्ग, चाल-ढाल, तलवार की धार, धोखा
घोड़ा – एक पशु, बन्दूक का खटका, शतरंज का एक मोहरा

च

चक्र – पहिया, कुम्हार का चाक, चक्की, कोल्हू, काई गोल वस्तु, एक अस्त्र
चन्द्र – चन्द्रमा, एक की संख्या, मोर की पूंछ, चन्द्रिका, कपूर, जल, सोना
चरण – पैर, बड़ों का संग, किसी छन्द का एक पद, किसी चीज़ का चौथाई भाग
चश्मा – ऐनक, स्त्रोत
चूल – बाल – जोड़

छ

छन्द – काव्य का एक महत्वपूर्ण अंग, बहाना, छल
छादन – परदा, छप्पर, वस्त्र
छाप – अंगूठी, प्रभाव, छापे का चिन्ह
छोड़ना – तंग करना, चिढ़ाना, आरम्भ करना, बजाने के लिए

ज

जड़ – मूल, मूर्ख, हठी, अचेतन, चेष्टाहीन, शीतल, गूंगा, बहरा, नीवं
जन – प्रजा, गंवार, अनुचर, समूह, भवन, मज़दूरी
जरा – थोड़ा, बुढ़ापा, जल
जाली – छोटा जाल, नक़ली, झंझरी, तन्तुजाल
जुआ – एक प्रकार का खेल, बैलों को जोतने का साधन
जोड़ – योग, मेल, गांठ, योग-फल, पदार्थो का सन्धि-स्थान

झ

झंझरी – झरोखा, जाली, छन्नी
झाड़ – पौधों का झुरमुठ, एक आतिशबाज़ी, गुच्छा
झोंका – वर्षा का थपेड़ा, झटका, थोड़ी नींद, वायु लहरी

ट

टाँकना – सुई से कुछ जोड़ना, रकम लिख रखना चाकू-छुरी तेज़
टीका – तिलक, फलदान, व्याख्या, धब्बा, बदनामी का टीका
टेक – धूनी, ऊँचा टीला, सहारा, गीता का छोटा पद, आग्रह आदत
टांडा – कुटुम्ब, मचान, चौपायों का झुण्ड, बंजारों का सामान

ठ

ठस – बहुत कड़ा, भारी, घनी, बुनावटवाला, आलसी, झूठा, कंजूस, ठोस
ठाट – ढांचा, शृंगार, दिखावट, ढंग, आयोजन, सामग्री, युक्ति, समूह
ठहरना – टिकना, पक्का होना, शान्त हो जाना, रूकना

ड

डण्ड – डण्डा, बहुदण्ड, सज़ा, घड़ी, घाटा
डबका – मोटा, स्थूल, ताज़ा, कुएं का ताज़ा जल
डस – तराजू की रस्सी, सूत की डोरी, मदिरा-विशेष

ढ

ढर्रा – पद्धति, व्यवहार, रूप, चाल-चलन
ढलना – उछाला जाना, ह्रास की ओर बढ़ाना, ढलाना की ओर जाना
ढीला – नाप से बड़ा, आलसी, शिथिल, कम कसा हुआ

त

तंग – सँकरा, परेशान, पहनने में छोटा, तंग
तक्षक – विश्वकर्मा, बढ़ई, सूत्रधार, सर्प-विशेष
तुषार – समूह, पत्ता, पार्टी
तुहिन – पाला, बर्फ़, चांदनी, शीतलता
तेज़ – पैना, शीघ्रगामी, तीख़ा, प्रचण्ड
तलब – चाह, आवश्यकता, बुलावा, वेनत, खोज
ताप – ज्वर, आंच, कष्ट, उष्णता, मानसिक कष्ट
तोड़ना – नष्ट करना, भंग करना, टुकड़े करना, अलग कर देना
तिलक – टीका, राज्याभिषेक, एक गहना, श्रेष्ठ व्यक्ति

थ

थल – स्थान – भूमि, वह जमीन जिस पर पानी न हो, ऊची धरती,
थान – ठिकाना, निवास-स्थान, किसी देवी-देवता का स्थान, कपड़े का पूरा गट्ठा
थोथा – जिसके भीतर कुछ सार न हो, खाली, पोला, जिसकी धार तेज़ न हो
थामना – सहारा देना, रोकना, संभालना

द

दक्ष – कुशल, ब्रह्म के पुत्र का नाम
दण्ड – डण्डा, सज़ा, समय का विभेद, यम-अस्त्र
दल – समूह, पत्ता, पार्टी
द्वार – दरवाज़ा, अंश, साधन, शरीरके छेदवाले अंग
दारू – दवा, शराब, बारुद
देन – देने का काम, वह जो दिया, भार, अशंदान
दोष – कमी, विकार, अपराध, बुराई, ऐब

ध

धन – सम्पत्ति, चौपायों का झुण्ड, स्नेहपात्र, गणित में जोड़ का चिन्ह
धर्मराज – न्यायाधी, यमराज, युधिष्ठिर
धार – धारा, प्रवाह, पैना, किनारा
धौल – श्वेत, थप्पड़

न

नक़ली – बनावटी, काल्पनिक, झूठा, नक़ल में बना
नक्शा – मानचित्र, रूपरेखा, आकृति, लच्छन, नखरा
नाग – सांप, कश्यप, की सन्तान, एक देश का नाम, शक-जाति की शाखा-विशेष
नागर – चतुर, नागर, मोथा, नागरिक, सोंठ
नायक – सेनापति, छोटा, सेनाधिकारी, मुखिया, नाटक का मुख्य पात्र
निकलना – बाहर आना या जाना, सामने आना, प्रकाशित होना
निकासी – निकलने का ढंग, माल बिकना चुंगी
नीलकण्ड – शिव, मोर, एक पक्षी-विशेष
न्यास – धरोहर, भेंट, उपस्थित करना, त्याग

प

पक्का – ईंटों का बना, पुष्ट, निश्चित, स्थिर
पट – कपड़ा, परदा, किवाड़, कपास, छप्पर, पलक
पटना – भरा जाना, छाजना, सौजन्यपूर्ण सम्बन्ध होना, ऋण चुकता होना
पद – पैर, ओहदा, वाक्यांश, छन्द का चरण, पात्र किरण
पक्ष – पंख, दख, ओर, पन्द्रह दिन की अवधि
पटरी – काठ का छोटा प्टरा, लिखने की तख़्ती, पैदलपथ
पति – ईश्वर, प्रतिष्ठा, स्वामी, दूल्हा
पय – दूध, पनी, अन्न, स्तर, बादल

फ

फटकारना – झटके से हिलाना, पटककर धोना, डॉटना
फल – मेवा, परिमाण, लाभ, शस्त्र का अग्रभाग, कर्मभोग
फूट – एक प्रकार का फल, बिलगाव

फूटना - छेद होना, प्रकट होना, मवाद निकलना, अंकुर निकलना

ब

बंशी - बांसुरी, मछली फंसाने का कांटा
बचाना - रक्षा करना, खर्च से बचाना, सामने न आने देना
बड़ा - छोटा - का विपरीतार्थक, एक प्रकार का खाद्य पदार्थ
बढ़ना - उन्नत होना, बुझना, अधिक होना, आगे चलना
बल - शक्ति, सेना, सहारा चक्कर, मरोड़
बाबा - केश, बच्चा, अन्न का लट, गेंद

भ

भगवान् - ईश्वर, एश्वर्यशाली, महापुरूष, पूज्य, ज्ञान और वैराग्य से सम्पन्न
भरम - भ्रम, इज्ज़त, सन्देह, रहस्य, भेद
भव - शिव, उत्पत्ति, संसार, कामदेव, मेघ
भूत - रहस्य, अन्तर, फूट, छेदन
भोग - कर्मो का फल, क़ब्जा, विलास, देवता का खाद्य-पदार्थ
भोर - प्रातः, भूल, भ्रम, धोखा, स्तम्भित, सीधा

म

मत - मतवाला, राय, सम्प्रदाय, नहीं
मर्त्य - मरनेवाला, मनुष्य, शरीर
मद - हर्ष, कस्तूरी, नशा, गर्व, मतवाला
महावीर - हनुमान, बहुत बलवान, 24वें जैन तीर्थंकर
माया - भ्रम, दौलत, इन्द्रजाल, भगवान्
मार - चोट, कामदेव, धतूरा, विष

य

यति - साधु, विराम, विरागी,
युक्त - जुड़ा हुआ, मिश्रित, नियुक्त, उचित
युग - दो, समय का एक मान
युक्ति - तरक़ीब, दलील, मिलन
योग - मेल, लगाव, ध्यान, कुल, जोड़, शुभ काल, मन की साधना

र

रंग - वर्ण, शोभा, मनोविनोद, रोब, नाच-गाना, ढंग, युद्धक्षेत्र
रक्त - लाल खून, केसर, लाल चन्दन
रश्मि - किरण, डोरी, घोड़े की लगाम
रास - लगाम, रस्सी, एक प्रकार का नृत्य

ल

लंक - कमर, लंका
लंगर - लोहे का कांटा, ज़ंजीर, कच्ची, सिलाई, भारी, नटखट
लक्ष - लाख की संख्या, लाख या चमड़ा, निशान
लटका - टंगा, झंझट, गाने का एक अंश
लाटा - बेटा, छोटा, प्रिय बालक, लाड-प्यार, चाह, रक्तवर्ण
लौ - दीपशिखा - लगन

व

वंश - बांस, कुल, बांसुरी, गोत्र
वर्ग - श्रेणी, चौकोर
वर्ण - अक्षर, रंग, जाति, शब्द, सोना, रूप, चतुर्वर्ण
वरण - चुनाव
वार - आक्रमण, दिन, बाण, शिव, बारी, रोक
वर - दूल्हा, श्रेष्ठ, वरण करने योग्य, वरदान
व्यवहार - काम, बरताव, महाजनी, दीवानी, मामला, मुक़दमा

श

शक्ति - ताक़त, अर्थवत्ता, अधिकार, प्रकृति, माया, दुर्गा
शाल - ऊनी, चादर, एक वृक्ष
शूर - वीर, योद्धा, सूर्य, सिंह, विष्णु
शेर - उर्दू का एक छन्द, सिंह
शान - घमण्ड, ऐंठ, मान, ठाट, धार
शिलीमुख - बाण, भौंरा

स

संकोच - सिकुड़ना, लज्जा, हिचकिचाहट
संग - साथ, आसक्ति, पत्थर (उर्दू)
संज्ञा - संकेत, ज्ञान, नाम, चेतना
सम, समान, जोड़ा, संगीत का एक स्वर
सन्धि - जोड़, व्याकरणों में अक्षरों का मेल, युगों का मिलन, पारस्परिक
सर - तालाब, सिर, पराजित
सरल - ईमानदार, सीधा, आसान, खरा
सवारी - सवार होने का काम, सवार होने का साधन, सवार होनेवाला व्यक्ति
साधना - सिद्ध करना, मनोयोगपूर्वक, आराधना, सम्पन्न करना
सारस - एक पक्षी, कमल

ह

हर - प्रत्येक, शिव, हरण करनेवाला, भिन्न के अंक के नीचे की संख्या
हस्ती - हाथी, अस्तित्व, हैसियत
हार - पराजय, थकावट, हानि, विरह, माला, सुन्दर, भाजक
हिलाना - हिलने में प्रवृत्त करना, खिसकाना, आदी बनाना, कंपाना
हेम - बर्फ़, स्वर्ण, इज़्जत, पीला रंग
हरकत - गति, चेष्टा, नटखटपन
हरि - विष्णु, इन्द्र, सूर्य, घोड़ा, चांद, किरण, हंस, आग, हाथी

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

जिसके पास कुछ न हो	**अकिञ्चन**
आगे बढ़कर स्वागत करना	**अगवानी**
पहले जन्म लेनेवाला	**अग्रज**
जो वस्तु चलने वाली न हो	**अचर**
जो कुछ नहीं जानता हो	**अज्ञानी**
जिसके समान कोई दूसरा न हो	**अद्वितीय**
जिसके आने की कोई तिथि निश्चित न हो	**अतिथि**
जिसका शत्रु जन्मा न हो	**आजातशतु**
जो अभी तक न आया हो	**अनागत**
जो पीछे चलता हो	**अनुचर**
जो लाया न जा सके	**अपरिमेय**
जिसका कोई अर्थ न हो	**अर्थहीन**
जिसके माता-पिता न हो	**अनाथ**
प्रथ्वी और आकाश के बीच का स्थल	**अन्तरिक्ष**
जो बीत चुका हो	**अतीत**
जो प्रमाण से सिद्ध न हो सके	**अप्रमेय**
जो पहले कभी न हुआ हो	**अभूतपूर्व**
जो कभी न मरे	**अमर**
पहाड़ का ऊपरी भाग	**अधित्यका**
जो चिन्ता के योग्य न हो	**अचिन्तनीय**
जो दिया जा सके	**अदेय**
जिसके समान कोई दूसरा न हो	**अद्वितीय**
छोटा भाई और छोटी बहन	**अनुज और अनुजा**
व्यर्थ खर्च करने वाला	**अपव्ययी**
जो इन्द्रियों द्वारा जाना न जा सके	**अगोचर**
आश्रय देनेवाला	**आश्रयदाता**
जिसका आदि और अन्त न हो	**शाश्वत्**
जो प्राप्त न हो सके	**अप्राप्त**
जिसकी आशा न की गयी हो	**अप्रत्याशित**

जिस स्त्री की शादी न हुई हो	**अविवाहिता**
उपकार करने वाला	**उपकारी**
एक ही व्यक्ति का अधिकार	**एकाधिकार**
जो कलपना से परे हो	**कल्पनातीत**
जो पथ कांटों से भरा हो	**कण्टकाकीर्ण**
अच्छे कुल में जन्म लेनेवाला	**कुलीन**
दुराचारिणी स्त्री	**कुलटा**
किये हुए को माननेवाला	**कृतज्ञ**
किये हुए को न मानेवाला	**कृतघ्न**
जो मोल लिया हुआ हो	**क्रीत**
जिसके हाथ में चक्र हो	**चक्रपाणि**
सारी पृथ्वी का राज	**चक्रवर्ती**
जो वस्तु एक ही स्थान पर न हो	**चल**
जिसके चार पैर हों	**चौपाया**
जहाँ से अनेक मार्ग चारों ओर जाते हों	**चौराह**
जिसका जन्म जल में हुआ हो	**जलज्**
जानने की इच्छा रखने वाला	**जिज्ञासु**
जो इन्द्रियों को वश में कर ले	**जितेन्द्रिय**
जो तर्क करता हो	**तार्किक**
गोद लिया हुआ	**दत्तक**
पति-पत्नी का युगल (जोड़ा)	**दम्पत्ति**
जो दोबारा जन्म लेता हो	**द्विज्**
जीने की इच्छा रखने वाला	**जिजीविषु**
जो पूछने योग्य हो	**जिज्ञास्य**
जो देवताओं के योग्य हो	**दिव्य**
जिसका दमन करना बहुत कठिन हो	**दुर्दम्य**
कठिनाई से जानने योग्य	**दुर्बोधगम्य**
धन देनेवाली	**धनदा**
जो नाश को प्राप्त करनेवाला हो	**नश्वर**
जो किसी से न डरे	**निडर**
जिसके मन में दया न हो	**निर्दय**
जो निन्दा के योग्य हो	**निन्दनीय**
जो भयभीत न होता हो	**निर्भीक**
जिस स्त्री के पुत्र न पैदा होता हो	**निपूती**
जिसका आकार न हो	**निराकार**
देश से बाहर माल भेजना	**निर्यात**
जिसका कोई अर्थ न हो	**निरर्थक**
जिसे अक्षर ज्ञान न हो	**निरक्षर**
जिसका कोई आधार न हो	**निराधार**
जो चिन्ता से रहित हो	**निशीथ**
जिस शिक्षा के लिए कोई शुल्क न दिया जाए	**निः शुल्क**
जिसको किसी प्रकार का लोभ न हो	**निःर्लोभी**
पास में निवास करनेवाला	**पड़ोसी**
जो दुःख सुख से परे हो	**परमहंस**
दूसरे की बुराई खोजनेवाला	**परछिद्रान्वेषी**
जिसके पार देखा जा सके	**पारदर्शी**
दोपहार के पहले का समय	**पूर्वान्ह**
उपकार के बदले किया गया कार्य	**प्रत्युपकार**
जिसके विषय में मतभेद न हो	**मतैक्य**
जो शराब पीता हो	**मद्यप**
मन पसन्द अथवा नामांकित	**मनोनीत**
जो मर्यादा के अनुरूप हो	**मर्यादित**
जो मृत्यु के समीप हो	**मरणासन्न**
शीत ऋतु की वर्षा	**महावट**
जो मांस खाता हो	**मांसाहारी**
जो अपने मार्ग से भट गया हो	**मार्गभ्रमित**
मान करनेवाली स्त्री	**मानिनी**
झूठ बोलनेवाला	**मितहारी**
मछली के समान जिसकी आँखें हों	**मीनाक्षी**
मरने की इच्छा रखनेवाला	**मुमुक्ष**
जो मृत्यु को जीत ले	**मृणाल**
जिसने यश प्राप्त किया हो	**यशस्वी**
खून से रँगा हुआ	**रक्तरञ्जित**
जो बहुत अधिक बोलता हो	**वाचाल**
जिसके पास विद्या हो	**विद्वान्**
तारों भरी रात	**विभावरी**
जिसका विश्वास किया जा सके	**विश्वसनीय**
जो विश्व में प्रसिद्ध हो	**विश्वविश्रुत**
जो इन्द्रियों का दमन न कर सके	**विषयासक्त**
जो शक्तिशाली हो	**शक्तिमान्**
चाँदनी रात	**शर्वरी**
सौ वस्तुओं का संग्रह	**शतक**
जिसके सिर पर चन्द्रमा हो	**शशिधर**
एक ही जाति का पुरूष	**सजातीय**
अच्छा आचरण करनेवाला	**सदाचारी**
जो असत्य न बोले	**सत्यवादी**
एक ही समय में होनेवाला	**समसामयिक**
जो सबको एक-सा देखता हो	**समदर्शी**
जो सर्वत्र व्याप्त हो	**सर्वव्यापी**
जो सब कुछ जानता हो	**सर्वज्ञ**
जो सबके उपयोग के लिए हो	**सार्वजनिक**
जो हमेशा रहने वाला हो	**स्थायी**
जो अपने ही नाम से प्रसिद्ध हो	**स्वनामधन्य**
स्वयं का हित चाहने वाला	**स्वार्थी**
जो अपने से उत्पन्न हो	**स्वयंभू**
हरण कराया हुआ	**हरित**
मिठाई बनाकर बेचनेवाला व्यक्ति	**हलवाई**
किसी काम में हाथ की निपुणता	**हस्तकौशल**
हरण कनरे बाला	**हारक**
भलाई चाहने की इच्छा	**हितैषिता**
जो क्षमा पाने योग्य है	**क्षम्य**
जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते दिखायी पड़ें	**क्षितिज्**
भोजन करने की इच्छा	**क्षुधा**
भूख से पीड़ित	**क्षुधातुर**
जो खेत से पैदा हो	**क्षेत्रज्**
खेत की रखवाली करनेवाला	**क्षेत्रपाल**
तीन का समूह	**त्रिक्**
जिसमें तीन मात्राएँ हों	**त्रिमात्रिक**
जो तीन लोकों का स्वामी हो	**त्रिवेणी**
जो जाना जा सके	**ज्ञेय**
जो जानता हो	**ज्ञाता**
जो कल्पना से परे हो	**कल्पनातीत**
इतिहास जाननेवाला	**इतिहासविद्**
जिस पर मुक़द्दमा चल रहा हो	**अभियुक्त**
महामूर्ख व्यक्ति	**जड़**
आकाश में उड़ने वाला	**खग**
आकाश चुमने वाला	**गगनचुम्बी**
जो कानून के विरूद्ध हो	**अवैध**
जो वन्दना के योग्य न हो	**अवन्दनीय**
जो पहले कभी न हुआ हो	**अपरिमेय**

जिसकी कोई सीमा न हो	**असीमित**
जिसकी परिभाषा देना असम्भव हो	**अपरिभाषित**
अन्य भाषा में परिणति	**अनुवाद, रूपान्तरण**
बिना वेतन काम करनेवाला	**अवैतनिक**
मूल्य घटाने का कार्य	**अवमूल्यन**
उपहास के योग्य	**उपहासास्पद्**
जो अवश्य होनेवाला हो	**अवश्यम्भावी**
जो शीघ्र नष्ट होनेवाला हो	**क्षणभंगुर**
टुकड़े-टुकड़े किया हुआ	**क्षुण्ण**
मन को आकृष्ट करनेवाला	**हदयग्राही**
तीन वेदों को जानेवाला	**त्रिवेदी**
तीन कोनेवाली वस्तु	**त्रिकोण**
भूत, वर्तमान तथा भविष्य	**त्रिकाल**
जो सभी युगों के अनुकूल हो	**सर्वयुगानुकूल**
जहाँ नदियाँ मिलती हों	**संगम**
एक ही समय में होनेवाला	**समदर्शी**
जो आसानी से मिल सके	**सुलभ**
जो स्त्री दुश्चारिणी हो	**स्वैरिणी**
किसी काम में दूसरे से बढ़ जाने की प्रबल इच्छा रखना	**स्पर्द्धा**
दूसरे देश में अपने राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करनेवाला	**राजदूत**
झूठ बोलनेवाला	**मिथ्यावादी**
सम्पूर्ण समाज से सम्बन्धित	**समष्टिमूलक**
फूलों का मधु	**मकरन्द**
उपकार के बदले किया गया कार्य	**प्रत्युपकार**
आँखों के आगे	**प्रत्यक्ष**
जो पिया जा सके	**पेय**
जिस स्त्री के पुत्र और पति, दोनों हो	**पुरन्ध्री**
जो पृथ्वी से बना हुआ पदार्थ हो	**पार्थिव**
जो उत्तर न दे सके	**निरूत्तर**

मुहावरे

प्रचलित मुहावरे और उनके अर्थ

अ

मुहावरा : अंक भरना
अर्थ : प्यार से गोद में लेना

मुहावरा : अंक लगाना
अर्थ : आलिंगन करना

मुहावरा : अंग नहीं समाना
अर्थ : नहीं सँभाल पाना

मुहावरा : अंग गिराना
अर्थ : उत्साह न दिखाना

मुहावरा : अंग-अंग ढीला होना
अर्थ : शरीर में फुर्ती न रहना

मुहावरा : अंग उभरना
अर्थ : जवानी के लक्षण दिखायी देना

आ

मुहावरा : आँख की किरकिरी होना
अर्थ : आँखों को चुभनेवाला/अच्छा न लगना

मुहावरा : आँख खुलना
अर्थ : सतर्क हो जाना

मुहावरा : आँख बचाना
अर्थ : कतराना

मुहावरा : आँखे तरसना
अर्थ : देखने की इच्छा होना

मुहावरा : आँखे मैली करना
अर्थ : नीयत ख़राब करना

इ

मुहावरा : इज़्ज़त अपने हाथ होना
अर्थ : मर्यादा का वश में होना

मुहावरा : इधर का न उधर का होना?
अर्थ : बे-आबरू होना, स्थिति स्पष्ट न होना

मुहावरा : इधर की दुनिया उधर होना
अर्थ : अनहोनी होना

मुहावरा : इतिश्री करना
अर्थ : समाप्त करना
मुहावरा : इज़्ज़त बिगाड़ना
अर्थ : किसी की मर्यादा भंग करना

ई

मुहावरा : ईंट-से-ईंट बजाना
अर्थ : बर्बाद कर देना/नष्ट-भ्रष्ट कर देना

मुहावरा : ईंद का चाँद होना
अर्थ : बहुत समय बाद दिखायी देना

मुहावरा : ईमान बह जाना
अर्थ : धर्म नष्ट हो जाना

मुहावरा : ईंट के पीछे टर होना?
अर्थ : टाल देना, समय पर काम न होना

उ

मुहावरा : उँगली उठाना
अर्थ : आलोचना करना

मुहावरा : उँगली पर नचाना
अर्थ : वश में रखना

मुहावरा : उगल देना
अर्थ : भेद प्रकट कर देना

मुहावरा : उड़ती चिड़िया पहचानना
अर्थ : मन की बात जानना

ऊ

मुहावरा : ऊँच-नीच
अर्थ : भला-बुरा

मुहावरा : ऊँचा सुनना
अर्थ : कम सुनना

मुहावरा : ऊँची सांस लेना
अर्थ : शोक में डूब जाना

मुहावरा : ऊँट का सुई की नोक से निकलना
अर्थ : असम्भ कार्य होना

ऋ

मुहावरा : ऋण उतारना (चुकाना)
अर्थ : लिया हुआ ऋण वापस करना **या** उपकार के प्रति उपकार करना

मुहावरा : ऋण चढ़ाना
अर्थ : कर्ज़ बढ़ाना

मुहावरा : ऋद्धि-सिद्धि पाना
अर्थ : समृद्धि और सफलता पाना

ए

मुहावरा : एक अनार सौ बीमार
अर्थ : आवश्यकता से अधिक मांग

मुहावरा : एक के तीन बनाना
अर्थ : अत्यधिक लाभ प्राप्त करना

मुहावरा : एक आवाज़
अर्थ : संगठित माँग, विचारों में एकरूपता

मुहावरा : एक खून
अर्थ : जातीय पहचान

ऐ

मुहावरा : ऐंचतानी करना
अर्थ : खींचतान करना

मुहावरा : ऐंठकर चलना
अर्थ : गर्व से चलना

मुहावरा : ऐंठ निकालना
अर्थ : घमण्ड चूर होना

मुहावरा : ऐब निकालना
अर्थ : दोष निकालना

मुहावरा : ऐसी-तैसी करना
अर्थ : इज़्ज़त नष्ट करना
मुहावरा : ऐतबार उठना
अर्थ : विश्वास समाप्त होना

ओ

मुहावरा : ओखली में सिर देना
अर्थ : जानबूझकर संकट मोल लेना

मुहावरा : ओझाई करना
अर्थ : भूत-प्रेत झाड़ना
मुहावरा : ओंठ चिपकना
अर्थ : खूब मीठा होना

मुहावरा : ओछे की प्रीति बालू की भीति
अर्थ : दुष्ट व्यक्ति की मित्रता स्थायी नहीं रहती

औ

मुहावरा : औंधी खोपड़ी होना
अर्थ : निरा मूर्ख/वज्र मूर्ख

मुहावरा : औंधे मुंह गिरना
अर्थ : पराजित होना

मुहावरा : औघर की झोली
अर्थ : अनेक करामाती वस्तुओं का संग्रह

मुहावरा : औचट में पड़ना
अर्थ : संकट में पड़ना

क

मुहावरा : कंचन बरसना
अर्थ : बहुत अच्छा लाभ होना

मुहावरा : ककड़ी-खीरा समझना
अर्थ : तुच्छ या नगण्य समझना

मुहावरा : कच्चा चिट्ठा खोलना
अर्थ : सब भेद खोल देना

मुहावरा : कच्ची गोटी खेलना
अर्थ : असफल प्रयास करना

मुहावरा : कटकर रह जाना
अर्थ : शर्मिन्दा होना

मुहावरा : कटे पर नमक छिड़कना
अर्थ : कष्ट-पर-कष्ट देना

ख

मुहावरा : खटपट होना
अर्थ : झगड़ा होना

मुहावरा : खप जाना
अर्थ : सब काम में आ जाना

मुहावरा : खरा-खोटा परखना
अर्थ : भले-बुरे की पहचान करना

मुहावरा : ख़ाक छानना
अर्थ : भटकते फिरना

मुहावरा : ख़ाक में मिलाना
अर्थ : नष्ट कर देना

मुहावरा : ख़बर लेना
अर्थ : सज़ा देना, जानकारी लेते रहना

ग

मुहावरा : गंगा नहाना
अर्थ : कठिन कार्य पूरा करके छुट्टी पाना

मुहावरा : गज़ब ढाना
अर्थ : आश्चर्यजनक काम करना; आशातीत कार्य करना

मुहावरा : गड्ढे में गिरना
अर्थ : पतित होना

मुहावरा : गड़े मुर्दे उखाड़ना
अर्थ : पुरानी बातों पर प्रकाश डालना

मुहावरा : गन्ध तक न आना
अर्थ : प्रकट न होना

मुहावरा : गठरी काटना
अर्थ : अनैतिक ढंग से कमाई करना

मुहावरा : गप्पें लड़ाना
अर्थ : बेकार की बातें करना

मुहावरा : गर्दन उठाना
अर्थ : प्रतिवाद करना, विरोध करना

घ

मुहावरा : घड़ियाँ गिनना
अर्थ : बेचैनी से इन्तज़ार करना

मुहावरा : घड़ों पानी पड़ना
अर्थ : अत्यन्त लज्जित होना

मुहावरा : घर काटने को दौड़ना
अर्थ : दिल न लगना; सूनापन अखरना/लगना

मुहावरा : घर-घर पूजा होना
अर्थ : सर्वत्र सम्मान मिलना

मुहावरा : घर बैठे गंगा आना/घर में गंगा बहना
अर्थ : अनायास लाभ

मुहावरा : घर की खेती
अर्थ : अपनी चीज़

च

मुहावरा : चक्कर में डालना
अर्थ : भ्रम पैदा कर देना

मुहावरा : चक्की में पिसना
अर्थ : बहुत अधिक कष्ट उठाना

मुहावरा : चण्डाल-चौकड़ी
अर्थ : निकम्मे और बदमाश क़िस्म के लोग

मुहावरा : चप्पा-चप्पा छान मारना
अर्थ : ख़ूब अच्छी तरह तलाशी लेना

मुहावरा : चन्द्रमा में कलंक होना
अर्थ : उत्तम वस्तु में भी दोष लगना

मुहावरा : चन्द्रमा के समान सुन्दर होना
अर्थ : अत्यधिक सुन्दर होना

छ

मुहावरा : छक्का-पंजा करना
अर्थ : ओछी हरकतें करना

मुहावरा : छक्के छूटना
अर्थ : हिम्मत हारना

मुहावरा : छक्के छुड़ाना
अर्थ : पूरी तरह से परास्त कर देना

मुहावरा : छठी का दूध याद आना
अर्थ : बहुत कष्ट होना

ज

मुहावरा : जंगल में मंगल होना
अर्थ : निर्जन स्थान में भी आनन्द का मिलना

मुहावरा : जड़ खोदना/काटना
अर्थ : समूल नष्ट करना

मुहावरा : ज़बान कैंची की तरह चलाना
अर्थ : बढ़-चढ़कर तीखी बातें करना

मुहावरा : ज़बान में लगाम न होना
अर्थ : बिना नियन्त्रण के बोलना

मुहावरा : ज़मीन आसमान का फ़र्क़
अर्थ : बहुत भारी अन्तर

झ

मुहावरा : झक मारना
अर्थ : व्यर्थ में समय नष्ट होना

मुहावरा : झख सवार होना
अर्थ : ज़िद में आ जाना

मुहावरा : झण्डा गाड़ना
अर्थ : अधिकार जमाना, आधिपत्य स्थापित करना

मुहावरा : झगड़ा मोल लेना
अर्थ : जान-बूझकर झगड़ा में पड़ना

ट

मुहावरा : टका-सा जवाब देना
अर्थ : तुरन्त अस्वीकार कर देना

मुहावरा : टपक पड़ना

अर्थ : अकस्मात् आ जाना

मुहावरा : टरका देना
अर्थ : बहाना बनाकर लौटा देना

मुहावरा : टट्टू पार होना
अर्थ : काम निकल जाना

ठ

मुहावरा : ठगी-विद्या खेलना
अर्थ : छल-कपट करना

मुहावरा : ठण्डा करना
अर्थ : शान्त करना, आग बुझाना

मुहावरा : ठन्-ठन् गोपाल
अर्थ : खोखला

मुहावरा : ठौर रहना
अर्थ : मारा जाना
मुहावरा : ठण्डी साँस लेना
अर्थ : सोच में उदास होना

मुहावरा : ठिकाने लगाना
अर्थ : भार डालना

ड

मुहावरा : डंक मारना
अर्थ : बिच्छु का काटना, कटु वचन कहना

मुहावरा : डंके की चोट पर कहना
अर्थ : स्पष्ट घोषणा करना

मुहावरा : डकार जाना
अर्थ : माल पचा जाना

मुहावरा : डग भरना
अर्थ : क़दम बढ़ाना

मुहावरा : डण्डा बजाते फिरना
अर्थ : बेकार घूमना-फिरना

ढ

मुहावरा : ढंग पर आना
अर्थ : सुधर जाना

मुहावरा : ढकोसला होना
अर्थ : ऊपरी बनावट होना

मुहावरा : ढिंढोरा पीटना
अर्थ : प्रचार कर देना

मुहावरा : ढेर करना
अर्थ : मारकर गिरा देना

मुहावरा : ढाई दिन की बादशाहत होना
अर्थ : थोड़े समय के लिए अधिकार मिलना

त

मुहावरा : तंग आना
अर्थ : परेशान होना

मुहावरा : तक़दीर जगना/तक़दीर खुल जाना/क़िस्मत खुल जाना
अर्थ : सुख के दिन आना

मुहावरा : तन-बदन में आग लगना
अर्थ : बहुत अधिक क्रोध आना
मुहावरा : तन पर एक सूत न होना
अर्थ : वस्त्र न रहना, निर्वस्त्र

मुहावरा : तलवार की छाया
अर्थ : युद्ध की सम्भावना

मुहावरा : तलवार की धार
अर्थ : सतर्कतापूर्ण जोख़िमभरा कार्य

थ

मुहावरा : थई-थई करना
अर्थ : नाचना

मुहावरा : थर्रा जाना
अर्थ : डर जाना

मुहावरा : थाने पवाने लगना
अर्थ : उचित स्थान पर लगना

द

मुहावरा : दन्तकथा
अर्थ : निराधार बात

मुहावरा : दम साधना
अर्थ : चुप रहना

मुहावरा : दम फूलना
अर्थ : परिश्रम के कारण श्वास का जल्दी-जल्दी चलना/थकना

मुहावरा : दमड़ी के लिए चमड़ी उधेड़ना
अर्थ : छोटी ग़लती के लिए बड़ी सज़ा देना

मुहावरा : दया-दृष्टि रखना
अर्थ : कृपा रखना

ध

मुहावरा : धज्जियाँ उड़ाना
अर्थ : बुरी तरह परास्त करना

मुहावरा : धब्बा लगना
अर्थ : कलंक लगना

मुहावरा : धर्मराज होना

अर्थ : सत्यभाषी होना

मुहावरा : धाक जमाना
अर्थ : प्रभुत्व स्थापित करना

मुहावरा : धुन सवार होना
अर्थ : किसी काम की लगन होना

न

मुहावरा : नंगा नाच दिखाना
अर्थ : अमर्यादित काम करना/ओछा काम करना

मुहावरा : न घर का न घाट का
अर्थ : जो कहीं का न हो; जिसका कहीं सम्मान न हो।

मुहावरा : न तीन में, न तेरह में
अर्थ : जो किसी गिनती में न हो

मुहावरा : नकेल हाथ में रखना
अर्थ : वश में रखना

मुहावरा : नज़र रखना
अर्थ : सावधानी रखना

मुहावरा : नज़र दौड़ाना
अर्थ : चारों तरफ़ देखना

मुहावरा : नज़रों में चढ़ना
अर्थ : खटकना, सन्देह हो जाना

मुहावरा : नदी-नाव संयोग
अर्थ : संयोग से मिलना

मुहावरा : नज़र करना
अर्थ : भेंट देना

प

मुहावरा : पंख न मारना
अर्थ : पहुंच न होना

मुहावरा : पगड़ी उछालना
अर्थ : बेइ़ज़्ज़त करना/प्रतिष्ठा नष्ट करना

मुहावरा : पगड़ी रखना
अर्थ : इ़ज़्ज़त रखना

मुहावरा : पत्थर की लकीर
अर्थ : अपनी बात पर अटल/अकाट्य बात

फ

मुहावरा : फ़क़ीर हो जाना
अर्थ : ग़रीब हो जाना, साधु हो जाना

मुहावरा : फन्दा लगना
अर्थ : धोखा हो जाना

मुहावरा : फ़ब जाना
अर्थ : आकर्षक लगना

मुहावरा : फट पड़ना
अर्थ : असहाय हो जाना

ब

मुहावरा : बंजारे का डेरा
अर्थ : घरबार न होना, घुमक्कड़

मुहावरा : बखिया उधेड़ना
अर्थ : भेद खोलना/इ़ज़्जत उतारना

मुहावरा : बग़लें झाँकना
अर्थ : निरूत्तर होना

मुहावरा : बड़े घर की हवा खाना
अर्थ : क़ैद भुगतना; कारावास में रहना

भ

मुहावरा : भंग के भाड़ में जाना
अर्थ : बेकार जाना

मुहावरा : भंग खा लेना
अर्थ : विवेकहीन होना

मुहावरा : भँवर में पड़ना
अर्थ : विपत्ति में पड़ना

मुहावरा : भरत का त्याग
अर्थ : असीम त्याग

मुहावरा : भाड़े का टट्टू
अर्थ : भाड़े पर काम करनेवाला

मुहावरा : भाड़े में जी होना
अर्थ : किसी पर दिल लगा रहना

मुहावरा : भांडा फूटना
अर्थ : गुप्त बात प्रकट होना

मुहावरा : भद्रा लगाना
अर्थ : अड़चन पैदा करना

म

मुहावरा : मक्खी मारना
अर्थ : बेकार बैठना

मुहावरा : मक्खी नाक पर न बैठने देना
अर्थ : इ़ज़्ज़त ख़राब न होने देना/बहुत गुस्से वाला

मुहावरा : मज़ा किरकिरा होना
अर्थ : आनन्द में विघ्न पड़ना

मुहावरा : मतलब गाँठना
अर्थ : काम निकालना

मुहावरा : मन की प्यास
अर्थ : अभिलाषा

मुहावरा : मन के लड्डू खाना
अर्थ : हवा में कल्पना करना

मुहावरा : मन-की-मन में रखना
अर्थ : इच्छाएँ पूरी न होना, या इच्छाएँ दबा लेना

मुहावरा : मन में चोर बैठना
अर्थ : मन में कपट होना

य

मुहावरा : यम की यातना
अर्थ : बहुत कष्ट

मुहावरा : यमपुर पहुंचाना
अर्थ : मार डालना

मुहावरा : यमराज का बुलावा आना
अर्थ : जीवन का अन्तिम क्षण, मृत्यु का निकट आना

मुहावरा : युग-युगान्तर से
अर्थ : प्राचीन काल से

र

मुहावरा : रंगरलियाँ मनाना
अर्थ : आमोद-प्रमोद में समय बिताना

मुहावरा : रंग जमाना
अर्थ : प्रभाव बढ़ना
मुहावरा : रंग बदलना?
अर्थ : परिवर्तन होना
मुहावरा : रंग लाना?
अर्थ : हालत पैदा करना
मुहावरा : रंग उड़ना
अर्थ : डर या शर्म के मारे मुख पर कान्ति का न रहना शर्मिन्दा होना/डर जाना

ल

मुहावरा : लंगर जारी करना
अर्थ : भोजन-दान करना
मुहावरा : लंगर-लँगोट कसना
अर्थ : लड़ने को तैयार रहना
मुहावरा : लँगड़े की लकड़ी होना
अर्थ : सहारा होना
मुहावरा : लँगोटिया यार
अर्थ : बहुत नज़दीक का साथी/पुराना मित्र

व

मुहावरा : वकूल में आना
अर्थ : प्रकट होना
मुहावरा : वक़्त ताकना
अर्थ : मौक़ा अथवा अवसर देखना
मुहावरा : वक़्त पर काम आना
अर्थ : कष्ट काल में सहायता करना/मुसीबत में काम आना
मुहावरा : वज्र बेशरम होना
अर्थ : निर्लज्ज होना

कहावते लोकोक्तियाँ

1. लोक (जनसाधारण) की उक्ति 'लोकोक्ति' कहलाती है।
2. जिस पद-समूह में अनुभव की कोई बात संक्षेप में चमत्कारिक ढंग से कही जाती है, उसे 'कहावत' कहते है।

प्रचलिति कहावतें और उनके अर्थ

कहावत : अकेला हँसता भला, न रोता भला।
अर्थ दुःख सुख में साथी होने चाहिए।
कहावत : अक़्ल बड़ी या भैंस?
अर्थ शारीरिक शक्ति से बुद्धि श्रेष्ठ है।
कहावत : अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।
अर्थ ईश्वर सबकी आवश्यकताएँ पूरी करता है।
कहावत : अटका बनिया देय उधार।
अर्थ दबाव पड़ने पर सब कुछ करना पड़ता है।
कहावत : अटकेगा सो भटकेगा।
अर्थ दुविधा या सोच-विचार में पड़ने से काम नहीं होता।
कहावत : अढ़ाई हाथ की ककड़ी, नौ हाथ का बीज।
अर्थ अनहोनी बात।
कहावत : अण्डे सेवे कोई, बच्चे लेवे कोई।
अर्थ किसी के परिश्रम का लाभ किसी को मिलना।
कहावत : अधजल गगरी छलकत जाय।
अर्थ कम ज्ञान, धन और सम्मानवाले व्यक्ति अधिक प्रदर्शन करते हैं।
कहावत : आँख का अन्धा गाँठ का पूरा।
अर्थ धनी किन्तु मूर्ख।
कहावत : आँख बची और माल यारों का।
अर्थ अपनी असावधानी से किसी की कोई वस्तु चोरी हो जाना।
कहावत : आँख के अन्धे नाम नयनसुख।
अर्थ गुण के विपरीत नाम।
कहावत : आँख सुख कलेजा ठण्डक।
अर्थ दुःख सुख में साथी होने चाहिए।
कहावत : आँख एक नहीं, कजरौटा दस-दस।
अर्थ व्यर्थ का आडम्बर।
कहावत : आँख और कान में चार अँगुल का फ़र्क़।
अर्थ आँखों-देखी विश्वसनीय है, कानों सुनी नहीं
कहावत : आँख के आगे नाक सूझे क्या खाक।
अर्थ आँख पर परदा पड़ने पर कुछ नहीं सूझता।
कहावत : आ पड़ोसिन! लड़ें।
अर्थ बिना कारण झगड़ा करना।
कहावत : एक नागिन अरू पंख लगायी।
अर्थ एक दोष के साथ दूसरा दोष भी।

कहावत : इतना खाये जितना पचे।
अर्थ सामर्थ्य के अन्दर कार्य करना चाहिए।

कहावत : इतनी-सी जान, गज़-भर ज़बान।
अर्थ अपनी उम्र के हिसाब से बड़ी बातें करना।

कहावत : इधर कुआँ उधर खाई।
अर्थ दोनों तरफ मुसीबत।

कहावत : इधर न उधर यह बला किधर

अर्थ विपत्ति का आ जाना।

कहावत : इन तिलों में तेल नहीं।
अर्थ यहाँ से कुछ भी हासिल होने को नहीं।

कहावत : ईंट का जवाब पत्थर से देना।
अर्थ दुष्टों के प्रति कड़ा रूख़ अपनाना। / जबरदस्त प्रत्यत्तुर देना।

कहावत : ईश्वर की माया : कहीं धूप - कहीं छाया।
अर्थ ईश्वर की माया विचित्र है, कहीं दुःख कहीं सुख।

कहावत : उतर गयी लोई तो क्या करेगा कोई?
अर्थ प्रतिष्ठा के नष्ट होने पर कोई क्या बिगाड़ सकता है?

कहावत : ऊँची दुकान फीके पकवान।
अर्थ दिखावा-ही-दिखावा/आडम्बर-ही-आडम्बर।

कहावत : ऊँट के मुँह में जीरा।
अर्थ अपर्याप्त वस्तु।/आवश्यता से कम होना

कहावत : ऊँट के गले में बिल्ली।
अर्थ अनमेल संयोग।

कहावत : एक अण्डा वह भी गन्दा।
अर्थ थोड़ी वस्तु और वह भी किसी काम की नहीं।

कहावत : एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है।
अर्थ एक बुरा मनुष्य समस्त समाज को कलंकित कर देता है।

कहावत : एक आवें का बरतन।
अर्थ एकसमान।

कहावत : ऐरे-गैरे नत्थू खैरे।
अर्थ व्यर्थ के व्यक्ति।

कहावत : ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना।
अर्थ कठिन काम प्रारम्भ करने पर कठिनाइयों से डरना नहीं चाहिए।

कहावत : ओछे की प्रीति बालू की भीति।
अर्थ नीच की मित्रता क्षणभंगुर अथवा अस्थायी होती है।

कहावत : औसर चूकी डोमिनी गावे ताल-बेताल।
अर्थ समय के चूक जाने पर उत्तेजना के वशीभूत होकर उलटा-सीधा बकना।

कहावत : कंगाली में आटा गीला।
अर्थ विपत्ति पर विपत्ति आना।

कहावत : खग जाने खग ही की भाषा (भाखा)।
अर्थ जो जिस संगति में रहता है, वह उसका पूरा भेद जानता है।

कहावत : खरी मजूरी चोखा काम।
अर्थ नकद और उचित पारिश्रमिक देने से काम अच्छा होता हैं

कहावत : खाई खोदे और को ताको कूप तैयार
अर्थ दूसरों का बुरा चाहनेवाले का खुद बुरा होता है।

कहावत : खाक डाले चाँद नहीं छुपता।
अर्थ अच्छे व्यक्ति की निन्दा से उसका कुछ नहीं बिगड़ता।

कहावत : गंगा गये गंगादास : जमुना गये जमुनादास।
अर्थ अवसरवादिता।

कहावत : ऐरे-गैरे नत्थू खैरे।
अर्थ व्यर्थ के व्यक्ति।

कहावत : ऐसे बूढ़े बैल को कौन बाँध भुस देय।
अर्थ बूढ़ा और बेकार आदमी दूसरे पर बोझ बन जाता है।

कहावत : एक हाथ से ताली नहीं बजती।
अर्थ अकेले झगड़ा नहीं होता।

कहावत : गँवार गन्ना न दे भेली दे।
अर्थ गँवार आसानी से कम मूल्य की वस्तु नहीं देता पर अधिक मूल्य की वस्तु दे देता है।

कहावत : गयी माँगने पूत खो आई भतार।
अर्थ थोड़े लाभ के चक्कर में अधिक नुकसान कर बैठना।

कहावत : ग़रीब की जोरू सब गाँव की भौजाई
अर्थ कमज़ोर से सब लाभ उठाते हैं।

कहावत : घड़ी में घर जले अढ़ाई घड़ी मन्दा
अर्थ विषम परिस्थिति में बुद्धि का प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

कहावत : घर का जोगी जोगणा आन गाँव का सिद्ध।
अर्थ घर का मनुष्य चाहे कितना ही योग्य क्यों न हो, उसकी प्रतिष्ठा नहीं होती; अपने लोगों का आदर न करके, दूसरों को श्रद्धास्पद समझना।

कहावत : घर का भेदी लंका ढाहे।
अर्थ आपसी फूट अत्यधिक हानिकारक होती है।

कहावत : घर खीर तो बाहर भी खीर।
अर्थ धनवान की इज़्जत सब करते हैं।

कहावत : चक्की में कौर डालोगे तो चून पाओगे।
अर्थ कुछ प्रयत्न से ही फल मिलेगा।

कहावत : चढ़ जा बेटा सूली पर, भगवान् भला करेंगे।
अर्थ दूसरों के चढ़ाने या बहकाने से विपत्ति में पड़ना।

कहावत : चने के साथ कहीं घुन न पिस जाय।
अर्थ दोषी के साथ कहीं निर्दोष न फँसे।

कहावत : छटाक चून चौबारे रसोई
अर्थ केवल दिखावा।

कहावत : छछूँदर के सिर पर चमेली का तेल।
अर्थ अयोग्य अथवा अपात्र को अच्छी वस्तु की प्राप्ति।

कहावत : छप्पर पर फूस नहीं, ड्योढ़ी पर नाच।
अर्थ दिखावटी ठाटबाट किन्तु सार कुछ नहीं।

कहावत : छुरी खरबूजे पर गिरे या खरबूजा छुरी पर, बात एक ही है।
अर्थ दोनों तरह से ही हानि होना।

कहावत : छींके कोई, नाक कटावे कोई।
अर्थ दोष किसी का, फल कोई और भोगे।

कहावत : छोटा मुँह बड़ी बात।
अर्थ छोटे लोगों का बढ़-चढ़कर बोलना।

कहावत : जंगल में मोर नाचा, किसने देखा?
अर्थ अनुपयुक्त स्थान में गुण दिखाना।

कहावत : जड़ काटते जाएँ, पानी देते जाएँ।
अर्थ भीतर से दुश्मनी, ऊपर से दोस्ती।

कहावत : जब तक साँसा तब तक आसा।
अर्थ अन्तिम क्षण तक आशान्वित रहना।

कहावत : जब तक जीना तब तक सीना।
अर्थ जब तक जीवन है तब तक कोई-न-कोई काम-धन्धा करना ही पड़ता है।

कहावत : जबरा मारै रोवन न दे।
अर्थ ताक़तवर व्यक्ति का अत्याचार चुपचाप सहना पड़ता है।

कहावत : झूठ के पाँव नहीं होते है।
अर्थ झूठा एक बात पर स्थिर नहीं रह पाता।

कहावत : झोपड़ी में रह, महलों का ख़्वाब देखे।
अर्थ सामर्थ्य से बढ़कर चाह रखना।

कहावत : टके का सब खेल।
अर्थ धन-दौलत से ही सब कार्य सिद्ध होते हैं।

कहावत : टके की मुर्ग़ी नौ टके महसूल।
अर्थ कम क़ीमती वस्तु अधिक मूल्य पर देना।

कहावत : ठठेरे ठठेरे बदलौअल।
अर्थ धर्त का धूर्त के साथ चाल चलना।

कहावत : ठण्डा करके खाओ।
अर्थ धैर्य से काम करो।

कहावत : ठोक बजा ले चीज़, ठोक बजा दे दाम
अर्थ अच्छी चीज़ का अच्छा दाम पहचानकर देना।

कहावत : ठोकर लगे तब आँख खुले।
अर्थ कुछ गँवाकर ही अक़्ल आती है।

कहावत : डण्ड़ा हरै सबका पीर।
अर्थ सख़्ती करने से लोग नियन्त्रित होते हैं।

कहावत : डायन को भी दामाद प्यारा।
अर्थ अपना सबको प्यारा होता है।

कहावत : ढाक के तीन पात।
अर्थ सुख अथवा दुःख में सदैव एक - सी स्थिति में रहनेवाला।

कहावत : तन को कपड़ा न पेट को रोटी।
अर्थ अत्यधिक दरिद्रता।

कहावत : तलवार का घाव भरता है पर बात का घाव नहीं भरता
अर्थ कटु व्यंग्योक्ति हृदय पर घाव करती है।

कहावत : तिरिया तेल हमीर-हठ चढ़ै न दूजो बार?
अर्थ प्रतिज्ञा पूरी करना, दृढ़प्रतिज्ञ अपनी बात से नहीं हटते।

कहावत : थका ऊँट सराय ताकता।
अर्थ थकने पर विश्राम चाहिए।

कहावत : थूककर चाटना
अर्थ कही बात से मुकर जाना।

कहावत : धन-का-धन गया, मीत-की-मीत गयी।
अर्थ उधार देने में पैसा तो जाता ही है, मित्रता भी नहीं रहती।

कहावत : नंगा क्या नहाएगा, क्या निचोड़ेगा ?
अर्थ निर्धन से आर्थिक मदद की आशा नहीं रखनी चाहिए।

कहावत : नंगा बड़ा परमेश्वर से/नंगा खुद से बड़ा।
अर्थ निर्लज्ज से सब डरते हैं।

कहावत : न इधर के रहे, न उधर के।
अर्थ दुविधा में हानि हो जाती है।

कहावत : नकटा बूचा सबसे ऊँचा।
अर्थ निर्लज्ज सबसे बड़ा है।

कहावत : नक्कारखाने में तूती की आवाज़।
अर्थ बड़े लोगों के बीच छोटों की बातों को कौन सुनता है।

कहावत : पकायी खीर पर हो गयी दलिया।
अर्थ दुर्भाग्य, विडम्बना।

कहावत : पगड़ी रख, घी चख।
अर्थ मान-सम्मान से ही जीवन का असली सुख है।

कहावत : पढ़े तो है, गुने नहीं।
अर्थ पढ़-लिखकर भी अनुभवहीन।

कहावत : पत्थर को जोंक नहीं लगती/पत्थर मोम नहीं होता।
अर्थ निर्दय व्यक्ति में दया नहीं होती।

कहावत : पराया घर, थूकने का भी डर।
अर्थ दूसरे के यहाँ हर तरह का संकोच बना रहता है।

कहावत : पहले घर में फिर मस्जिद में।
अर्थ पहले अपने को फिर दूसरों को देखना।

कहावत : फ़कीर की सूरत ही सवाल है।
अर्थ फ़कीर को देखकर ही समझ लेना चाहिए कि वह कुछ माँगने ही आया है।

कहावत : फलेगा सो झड़ेगा।
अर्थ उन्नति के पश्चात् अवनति अवश्यम्भावी है।

कहावत : फिसल पड़े तो हर-हर गंगे।
अर्थ विवश होकर कोई काम करना।

कहावत : फलूदा खाते, दांत टूटें तो टूटें।
अर्थ स्वाद के लिए घाटा भी मंजूर।

कहावत : बकरे की माँ कब तक ख़ैर मनायेगी?
अर्थ किसी-न-किसी दिन विपत्ति अवश्य आयेगी?

कहावत : बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है।
अर्थ सबल निर्बल को प्रताड़ित करता है।

कहावत : बड़ो से ज्यादा छोटों का गुणी होना।
अर्थ जब बड़े से बढ़कर छोटे कोई कार्य करते हैं तब ऐसा ही कहा जता है।

कहावत : बड़े बोल का सिर नीचा।
अर्थ घमण्डी का सिर नीचा होता है।

कहावत : बद अच्छा, बदनाम बुरा।
अर्थ झूटी अपकीर्ति बुरी होती है।

कहावत : भई गति साँप छछूँदर केरी।
अर्थ कश्मकश में पड़ना, द्विविधा में पड़ना, बहुत विषम स्थिति में होना।

कहावत : भले का भला।
अर्थ भलाई का बदला भलाई से मिलता है।

कहावत : भागे भूत की लँगोटी भली। भागते चोर की लँगोटी ही सही / लूट में चरख नफा।
अर्थ आशा के विपरीत कुछ मिलना / जहाँ से कुछ मिलने की आशा न हो, वहाँ से जो कुछ भी मिले, वही बहुत है।

कहावत : मछली के बच्चे को तैरना कौन सिखाता है?
अर्थ कुछ गुण आनुवंशिक होते हैं।

कहावत : मर्ज़ बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की।
अर्थ सुधार के बजाय बिगाड़ होता गया।

कहावत : मरता क्या न करता।
अर्थ मज़बूरी में इंसान सब कुछ करता है।

कहावत : मरे को मारे शाहमदार।
अर्थ दुखी को और दुखी करना।

कहावत : माँगे हर्रे, दे बहेड़ा।
अर्थ माँगे कुछ, दे कुछ और।

कहावत : यह मुहँ और मसूर की दाल।
अर्थ अपनी औक़ात से बढ़कर बात करना।

कहावत : योगी था सो उठ गया, आसन रही भभूत?
अर्थ पुराना गौरव समाप्त।

कहावत : रस्सी जल गयी पर ऐंठ न गयी।
अर्थ सर्वस्व नष्ट हो जाने पर भी ऐंठ का न जाना।

कहावत : रानी रूठेगी अपना सुहाग ही लेगी।
अर्थ (मालकिन नाराज़ होकर नौकरी से निकालने के अलावा और क्या करेगी) / गुस्से में अपना नुकसान होता है।

कहावत : लंका में सब बावन गज़ के।
अर्थ सभी एक से बढ़कर एक।

कहावत : लड़े सिपाही नाम सरदार का।
अर्थ काम किसी का, नाम किसी और का।

कहावत : लहू लगाकर शहीदों में मिलना।
अर्थ झूठी प्रशंसा चाहना।

कहावत : वह गुड़ नहीं, जो चींटें खायें।
अर्थ कुछ भी प्राप्त नहीं होनेवाला, आत्मविश्वासी होना। / व्यक्ति/वस्तु में अपेक्षित का अभाव

कहावत : वही मन, वही चालीस सेर।
अर्थ बात एक ही है। दोनों बातों में कोई अन्तर नहीं है।

कहावत : विधि का लिखा को मेटनहारा?
अर्थ जो भाग्य में लिखा है, वह अवश्य होता है।

कहावत : विष का वृक्ष भी लगाकर नहीं काटा जाता।
अर्थ पालन-पोषण करने के बाद दुष्ट से दुष्ट को भी हानि नहीं पहुंचायी जाती/अपनों से प्रेम

कहावत : शक़्ल चुड़ैल की, मिज़ाज परियों का।
अर्थ बेकार का नखरा।

कहावत : शर्म की बहू नित भूखी मरे।
अर्थ शर्म करने से कष्ट उठाना पड़ता है।

कहावत : शेरों का मूँह किसने धोया?
अर्थ सामर्थ्यवान के लिए कोई उपाय नहीं

कहावत : शौकीन बुढ़िया मलमल का लहँगा।
अर्थ अवस्था के अनुसार आचरण का न होना।

कहावत : सखी न सहेली, भली अकेली।
अर्थ अकेली रहना अच्छा।

कहावत : सच्चा जाए रोता आये, झूठा जाए हँसता आये।
अर्थ (सच्चा दुखी और झूठा सुखी होता है)
/सत्य की पहचान न होना

कहावत : साँप मर जाए और लाठी भी न टूटे।
अर्थ काम निकल जाए और हानि भी न हो।
कहावत : हथेली पर सरसों जमाना।
अर्थ बात कहते ही कार्य सम्पन्न होने की इच्छा करना।

कहावत : हज्जाम के आगे सबका सिर झुकता है।
अर्थ अपनी जगह पर सबका महत्व है।
समय सबको महत्वपूर्ण बना देता है।

भीली कहावतें

1. भूखला तो भूखला सूकला खरी - भूखा ही सही पर सुखी तो हूँ।
2. भील भोला ने चेला - भील भोले होते हैं।
3. खारड़ा माँ काँटो भील माँ आटो - भील में बदले की भावना रहती है।
4. पाली पपोली मनाव राखवूँ घणो मसकल है - भील को खुशामद से मनाना बहुत मुश्किल है।
5. ढोली नौ सौरो गाद्यो नीं परे न भीलनुं सौरो रोद्यो नीं मरे - ढोली का लड़का गाने से और भील का लड़का रोने से नहीं मरता - वे अभावों से जूझते रहते हैं।
6. भील भाई ने डगले दीवो - भील भले ही अभावग्रस्त रहे, वह सदा निश्चिन्त रहता है।

कुछ बुन्देली बोली की कहावतें

1. खीर सों सौजं, महेरी को न्यारे।
2. पराई पातर को बरा बड़ो।
3. पराये बघार में जिया मगन।
4. देवी फिरै बिपत की मारी पण्डा कहै करो सहाय।
5. रौन कुमरई की कुतिया (लोककथन)।
6. नौनी के नौ मायके, गली-गली सुसरार।
7. जौन डुकरिया के मारे न्यारे भए बई हिस्सा में परी।
8. माँगे को मठा मोल पर गऔ।
9. कानी अपने टेण्ट तो निहरत नईया दूसरे की फुली पर पर कै देखत।
10. कनबेरी देवा।

पहेलियाँ

1.	**भीली भाषा**	**उत्तर**
1.	गाय वाकड़ी ने बेटी डाकणी	**तीर-कमान**
2.	धवलया बुकड़ा ने बारेह खाल	**प्याज**
3.	औंधे बाटके ने दही लटके	**कपास**
4.	भूत्या हेलग्या ने पेटा में दाँत	**कद्दू**
5.	छोटी-सी दड़ी, दगड़-सी लड़ी	**सुपारी**

2. बुन्देली

1.	थोड़ो सो सोनो, घर भर नोनो	**दीपक**
2.	दीवार पर धरो टका, ऊको तुम उठा पाओ न बाप न कका	**चन्द्रमा**
3.	ठाड़े हैं तो ठाड़े हैं, बैठे हैं तो ठाड़े है।	**सींग**

3. निमाड़ी

1.	एक बाई असा कि सरकजड़ नी	**दीवाल**
2.	काली गाय काँटा खाय, पाणी देखे बिचकी जाय	**जूता**

4. बघेली

अड़ी हयन, खड़ी हयन, लाख मोती जड़ी हयन
बाबा करें बाग में दुशाला ओढ़े पड़ी हयन **भुट्टा (मक्के का)**

5. छत्तीसगढ़ी

पेट चिरहा, पीठ कुबरा **कौड़ी**

6. मालवी

नानो सो चुन्नू भाय, लम्बी सारी पूँछ
नी चाल्या चुन्नू भाया, पकड़ी लाओ पूँछ **सूई धागा**

प्रमुख पहेलियाँ

01 गोश्त क्यों न खाया ?
डोम क्यों न गाया ?
उत्तर-गला न था

02 जूता पहना नहीं
समोसा खाया नहीं
उत्तर-तला न था

03 अनार क्यों न चखा ?
वज़ीर क्यों न रखा?
उत्तर-दाना न था

(अनार का दाना ओर दाना = बुद्धिमान)

04 सौदागर चे में बायाद? (सौदागर को क्या चाहिए)
बूचे(बहारे) को क्यो चाहिए?

उत्तर (दो कान भी, दुकान भी)

05 मिश्रांरा चे में बायद? (प्यासे को क्याा चाहिए)
मिलाप को क्यो चाहिए

उत्तर-चाह (कुआँ भी और प्यार भी)

06 शिकार ब चे मे बायद करद ? (शिकार किस चीज़ से करना चाहिए)
कुव्वते मग़्ज़ को क्या चाहिए? (दिमाग़ी ताक़त को बढ़ाने के लिए क्या चाहिए)

उत्तर-बा-दाम (जाल के साथ) और बादाम

07 रोटी जली क्यों? घोडा अडा क्यों? पान सडा क्यों ?

उत्तर- फेरा न था

08 पंडित प्यासा क्यों? गधा उदास क्यों?

उत्तर - लोटा न था

09 उज्जवल बरन अधीन तन, एक चित्त दो ध्यान ।
देखत मैं तो साधु है, पर निपट पार की खान।।

उत्तर -बगुला (पक्षी)

10 एक नारी के हैं दो बालक, दोनों एकहि रंग। एक फिर एक ठाढ़ा रहे, फिर भी दोनों संग।

उत्तर- चक्की।

11 आगे-आगे बहिना आई, पीछे-पीछे भइया।

दाँत निकाले बाबा आए, बुरका ओढ़े मइया।।
उत्तर- भट्टा
12 चार अंगुल का पेड़, सवा मन का फ्ता।
फल लागे अलग अलग, पक जाए इकट्ठा।।
उत्तर- कुम्हार की चाक
13 अचरज बंगला एक बनाया, बाँस न बल्ला बंधन धने।
ऊपर नींव तरे घर छाया, कहे खुसरो घर कैसे बने।।
उत्तर- बयाँ पंछी का घोंसला
14 माटी रौदूँ चक धरूँ फेरूँ बारम्बर ।
चातुर हो तो जान ले मेरी जात गँवार ।।
उत्तर-कुम्हार
15 गोरी सुन्दर पातली, केहर काले रंग।
ग्यारह देवर छोड़ कर चली जेठ के संग।।
उत्तर- अहरह की दाल ।
16 ऊपर से एक रंग हो और भीतर चित्तीदार।
से प्यारी बातें करे फिकर अनोखी नार।।
उत्तर-सुपारी
17 बाल नुचे कपड़े फटे मोती लिए उतार। यह बिपदा कैसी बनी जो नंगी कर दई नार।।
उत्तर- भुट्टा (छल्ली)

चुटकुले

1. **न्यायाधीश** - तुम चार साल पूर्व भी एक ओवर कोट चुराने के अपराध में इस अदालत में आ चुके हो।
   अपराधी - आप ठीक कहते हैं। लेकिन ओवर कोट इससे अधिक चलता भी कहाँ है।
2. **मजदूर** - क्या मालिक ! गधे के समान काम कराया और एक रूपया दे रहे हो। कुछ तो न्याय करना चाहिए।
   मालिक - न्याय ! हाँ तुम ठीक कहते हो। मुनीम जी, इसका रूपया छीन लो और बाँध कर इसके सामने थोड़ी-सी घास डाल दो।
3. **पिता** - हमारा लड़का आजकल बहुत तरक्की कर रहा है।
   पड़ौसी - अच्छा, कैसे?
   पिता - पुलिस ने उस पर घोषित इनाम की रकम पाँच हजार से बढ़ाकर दस हजार कर दी है।

लोकगीत

निमाड़ी कवाड़ा

बड़ा-बड़ा तो वई गया
ढोली कय कि पार उतार
वई का वई गया ना
उतरई की उतरई लगी

एकली कुतरी कई भुख
न कई कंसुरया ले
फट्या कपड़ा बुड्डा ढोर
इनका दाम लई गया चोर
ऊँट थारो कई थाको
ऊँच कय सब वाको
थारी बइगण म्हारी छाछ
भली बघार म्हारी माय

प्रस्तुति : हरीश दुबे

सूपड़ो-साफ

वी साच्छरता के
अंसे अद्यर उठई रिया रे,
आगे-आगे भनाता जावे
पाछे-पाछे भूता जई रिया है।

लोगाँ की सोच

वी देश के नेटू जू
हथियार हुण का खेत में
बदली देगा,
ने नेता चुप रई के
ने पुलिस पैसा खई के
सब दबई देगा।

बसन्त बधावो

आयो ऋतुराज बसन्त,
सब हिलमिले के आवो
डाल-डाल पर भँवरा गुँजे,
कामणी करत बधावो
जुही फुली, चमेली फुली,
टेसु लाल बरसावो
अम्बुवा का मोर हार फुलन का,
मंगल कलस सजावो
कंचन थाल अबीर गुलाल की
भर-भर मुट्ठियाँ उड़ावो
मरदंग ताल झाँझ डफ बाजे,
राग बसन्त सुनावो
पीलो अँगरखो पीलो पोमचो,
पीला साज सजावो
दे-दे ताली नाचो उमंग में,
सब ही सबन्त बधावो।

प्रकाश अग्रवाल

कसा भनई रिया हो?

मास्टर बातम
असा-कसा भनइ रिया हो,
छातरवत्तती दई ने
अँगूठा लगवई रिया हो।

दिनेश दर्पण

'महँगई'

एको राज ओको राज
हुया मँहगा अनाज।
काँ छे घोटालो,
समझ मज आव नी
उनकी वात।
हम, पाँ बरस तक
देखाँ, रामराज की वाट

अखिलेश जोशी

विश्वास

आस बाँधी ने
दो कदम
चाल्यो थो
कि
टाँग षैची लिदी।
पाछै
फरीने दैख्यो आपणा वारा पे भी
विश्वास नी करनो कदी।।

जगदीश सरगरा

वात कई कयणुं

बैल गाड़ी की वात कई कयणुं

खेत वाड़ी की वात कई कयणुं
मीठाा लागज जुवार का रोटा
नऽ अमाड़ी की वात कई कयणुं
जे खड़ बुनकर वणा व मयसर का
उनी साड़ी की वात कई कयणुं
दुध-घी की कमी निहोणऽ दे
भेस-पाड़ी की वात कई कयणुं
घर क राखज चगन-मगन केतरो
छोटी लाड़ी की वात कई कयणुं
गाँव मऽ उनको बड़ो नाव बजज
माय माता की वात कई कयणुं
बोली न अपनी 'जगा सब छे 'हरिश'
पण निमाड़ी की वात कई कयणुं **हरीश दुबे**

गज़ल

हुण रे भाया म्हारी वात।
हद की दी मनखाँ की जात।।
जणी जण्या पारया पोस्या,
अबे लगावे वण वे घात।
वा, दर-दर की माँगे भीख
जण के जीवे बेटा हात।
लाड्या की होरयां बारी,
मंगता अशो करयो उत्पाद।
मनखाँ तो वंची ने रो-
झूँठी कोनी या केवात। **-प्रमोद रामावत**

फागुण का दोहा

फागुण का पगल्या पड्या, बदल्या सारा रंग।
ढोलक बजी चौपाल पऽ खड़क्या खड़-खड़ चंग।।
सरसों पीली हुई गई, महुवो वारऽ गन्ध।
फूल-फूल पऽ भैरा दौड़ऽ, पीणऽख मकरन्द।।
अम्बा भी बोरइ गया, फूल्या घणा पलास।
कोयलिया की कूक की, प्यारी लाग मिठास।।
अबीर गुलाल का साथ मँऽ, रग की उड़ी फुहार।
हिली-मिली न मनवाँ, आवो यो तेव्हार।। **सन्दर्भ : होली**

चन्द्रकान्त सेन

एल्याँग.....वोल्याँग

एल्यांग गुरूजी
पकावणऽ लग्या
दलिया न दाल
वोल्याँग हुई
शिक्षा-बे-हाल
शेर की सी उनकी नियति
एकाजऽणलेण
जिन्दगी अकेलीज बीती
वोटर सी पूछो
ईज सरकार रखोगा
कि बदलोगा?
बोल्या अगला
को काई भरोसा?
ऊ एतरी धाँधली
चलऽन दे कि नई? **ललित नारायण उपाध्याय**

ऊँचो मोल को है तमारो पसीनो

साथे लइलाँ हिम्मत ने हेली-मेली ताकत,
तमारा आगे माथो टेकी ऊँबी रेगा आफत,
काय को डर धरती रो घर अन से भरया चालो।
चालो भरयां चालो, मरदाँ चालो।
घणो ऊँचों मोल को है तमारो पसीनो
आलसी के समझावो के कसो होय है जीनो
स्वास्थ छोड़ी मजदूरी री पूजा करदाँ चालो।
चलो मरदाँ, चालो, चालो मरदाँ चालो।
गाँवो में कबीर पंथ आज भी तो गावे है
परेम से तो मारा भाई दुनिया जीती जावे है
लड़ता-मरता आदमी ने आपण वरजाँ चालो
चालो मरदाँ चालो, चालो मरदाँ चालो
आदिवासी भाई मारा धणो दुःख पायो
नीचे को यो आदमी भी अपणी माँ को जायो
तो छापर वाली टापरी ने पक्की करदाँ चालो
चालो मरदाँ चालो, चालो मरदाँ चालो। **मोहन अम्बर**

कई हँसो बाबूजी !

यूँ दूर ऊबा
नाक सिकोड़ी के
कई हँसो ओ बाबूजी,
हमारे
कीचड़ का अबीर गुलाल से
होली खेलता देखि के।
हमारा तो
योज बड़ो तीवार है
यो
कीचड़ को जरूर है, बाबूजी
पणे
तमारी जग-मग दीवाली से
घणों अच्छो है,
देखिलो
दोल्यो/धुल्यो
दोड़ी-दोड़ी के
खाँकरा की केशूड़ी को
सन्तरिया रंग के
एक-दुसरा का ऊपर ढोलिरिया
मन का बन्द किमाड़
खोलीरिया
आत्मा से घीरणा को
कीचड़ धुइरिया है
काल तक जो प्यासा था
एक दूसरा का खून का
बाबूजी
आज ऊई पाछा
एक हुइरिया है। **-बंशीधर 'बन्धु'**

अजगर से बड़ा साँप्जी

थोड़ी-घणी लिखी या पाती,
आखी समजो बाज जी।
यो कई हुई रियो इनी दुनियाँ में,
कई करूँ इको जाप जी।
तम भी पड्या हो ईका चक्कर में

घणा ईमानदार था साबजी।
भेती गंगा में जो हाथ नी धोया तो
जनम भर होयगो भोत संतापजी।
तूज अकेली जेरीलो नी है धरती पे,
बेट्या हे, अजगर से बड़ा साँपजी।
घणी देर से सोया हो, अब तो जागो,
जगावा को कद से करि रियो हूँ अलापजी।
कई लाया था ने कई ली जावगा,
आता-जाता को मत करो विलापजी। **हुकुमचन्द मालवीय**

खोटो नरियाल होली में!

मन में आदर भाव नी रियो, राम नी रियो बोली में,
नकद माल सब जेब हवाले, खोटो नरियल होली में।
स्वारथ आगे सब कई भूल्या, कितरा कड़ावा हुईग्या हो,
फिर भी थोड़ी तो मिठास है पाकी लीम लिम्बोड़ी में।
कई गावाँ कई ढोल बजावाँ, कई स्वागत सत्कार करावाँ,
डण्डा-झण्डा साते लइनें, नेता निकले टोली में।
कुरसी मिली तो मोटरगाड़ी से, तम नीचे नी उतरो,
नेताजी वी इन भूलीग्या, रेता था जद खोली में।
खून, पसीना, साँते बईग्यो, पेट पीठ से चोंटीग्यों,
सपनो हुईग्यो धान ने दलियो, टाबर रोवे झोली में।
कुल की लाज बहू ने बेटी, भूल्या सगली मरयादा,
बहू की जगे दहेज बठीग्यो, अब दुल्हन की डोली में।
नारी को सम्मान घणों है, भाषण लम्बा-चौड़ा दो,
पण मोका पे चूको नी तम, भावज बणाओ ठिठोली में।

ओमप्रकार पंड्या

तम देखी लेजो

बन्द कोठड़ी म
गरम गोदड़ी ओढ़ेल
सोचतो मनख;
कम लिखी सकग
ठण्ड न क कड़ायलां गीत,
फटेल चादरा का दरदं
अन टूटेल झोपड़ा की वारता?
कसा कई सक़ग
फटेल हाथ-पाँव की
बिवई न में
खोयेल नरमई,
अन सियालां म
बगलेलो
डोलची दाजी को दम।
भई,
तम कोशिश करी न
देखी ले जो;
पन असली वात न क
कभी नी कई सकगज।। **शरद क्षीरसागर**

जीवन कई हे?

जीवन एक मेंकतो
हुवो फूल है
हवेरा, खिले अरू हाँजे
मुरजई जावे
समजी नी जिने
जीवन की परिभाषा
ऊ केदी रोवे
कदी खिलखिलावे
जीवन पाणी को
ऊठतो हुवो बुलबुलो हे,
देखतां-देखता
जिको नामो निसान मिटी जावे
फिर बी हम
जीवन को अरथ नी जाणां
तपतो हुवो सूरज बी
हाँजे ठण्डो वई जावे। **कन्हैयालाल गौड़**

मुकरियाँ

जिस कविता में प्रश्न के साथ उत्तर भी दिया होता है ऐसे काव्य को मुकरियाँ कहते है। मुकरियों के लिये मुख्य रूप से **अमीर खुसरो** को जाना जाता है मुकरियों के लिए विकास का कार्य सर्वाधिक अमीर खुसरो के द्वारा किया गया है

अमीर खुसरो द्वारा रचीत प्रमीख मुकरियाँ इस प्रकार है :-

1. रात समय वह मेरे आवे। भोर भये वह घर उठि जावे।।
   यह अचरज है सबसे न्यारा। ऐ सखि साजन? ना सखि तारा।।

2. नंगे पाँव फिरन नहिं देत। पाँव से मिट्टी लगन नहिं देत।।
   पाँव का चूमा लेत निपूता। ऐ सखि साजन? ना सखि जूता।।

3. वह आवे तब शादी होय। उस बिन दूजा और न कोय।।
   मीठे लागें वाके बोल। ऐ सखि साजन? ना सखि ढोल।।

4. जब माँगू तब जल भरि लावे। मेरे मन की तपन बुझावे।।
   मन का भारी तन का छोटा। ऐ सखि साजन? ना सखि लोटा।।

5. बेर-बेर सोवतहिं जगावे। ना जागूँ तो काटे खावे।।
   व्याकुल हुई मैं हक्की बक्की। ऐ सखि साजन? ना सखि मक्ख।।

6. अति सुरंग है रंग रंगीलो। है गुणवंत बहुत चटकीलो।।
   राम भजन बिन कभी न सोता। क्यों सखि साजन? ना सखि तोता।।
7. अर्ध निशा वह आया भौन। सुंदरता बरने कवि कौन।।
   निरखत ही मन भयो अनंद। क्यों सखि साजन? ना सखि चंद।।
8. शोभा सदा बढ़ावन हारा। आँखिन से छिन होत न न्यारा।।
   आठ पहर मेरो मनरंजन। क्यों सखि साजन? ना सखि अंजन।।

9. जीवन सब जग जासों कहै। वा बिनु नेक न धीरज रहै।।
   हरै छिनक में हिय की पीर। क्यों सखि साजन? ना सखि नीर।।

10. बिन आये सबहीं सुख भूले। आये ते अँग-अँग सब फूले।।
    सीरी भई लगावत छाती। क्यों सखि साजन? ना सखि पाति।।

अमीर खुसरो

प्रमुख मुकरियाँ

01 खा गया पी गया दे गया बुत्ता ऐ सखि साजन? ना सखि कुत्ता !

02 लिपट लिपट के वा के सोई छाती से छाती लगा के रोई
दांत से दांत बजे तो ताड़ा ऐ सखि साजन? ना सखि जाड़ा !

03 रात समय वह मेरे आवे भोर भये वह घर उठि जावे यह अचरज है सबसे न्यारा ऐ सखि साजन? ना सखि तारा !

04 नंगे पाँव फिरन नहिं देत पाँव से मिट्टी लगन नहिं देत पाँव का चूमा लेत निपूता ऐ सखि साजन? ना सखि जूता!

05 ऊंची अटारी पलंग बिछायो मैं सोई मेरे सिर पर आयो खुल गई अंखियां भयी आनंद ऐ सखि साजन? ना सखि चांद!

06 जब माँगू तब जल भरि लावे मेरे मन की तपन बुझावे मन का भारी तन का छोटा ऐ सखि साजन ? ना सखि लोटा!

07 वो आवे तो ृादी होय उस बिन दूजा और न कोय मीठे लागें वा के बोल ऐ सखि साजन? ना सखि ढोल!

08 बरे-बरे सोवतहिं जगावे ना जागूँ तो काटे खावे व्याकुल हुई मैं हक्की बक्की ऐ सखि साजन? ना सखि मक्खी!

09 अति सुरंग है रंग रंगीले है गुणवंत बहुत चटकीलो राम भजन बिन कभी न सोता ऐ सखि साजन? ना सखि तोता!

10 आप हिले और मोहे हिलाए वा का हिलना मोए मन भाए हिल हिल के वो हुआ निसंखा ऐ सखि साजन? ना सखि पंखा!

11 अर्ध निशा वह आया भौन सुंदरता बरने कवि कौन निरखत ही मन भयो अनंद ऐ सखि साजन? ना सखि चंद!

12 शोभा सदा बढ़ावन हारा आँखिन से छिन होत न न्यारा आठ पहर मेरो मनरंजन ऐ सखि सजन? ना सखि अंजन!

13 जीवन सब जग जासों कहै वा बिनु नेक न धीरज रहै हरै छिनक में हिय की पीर ऐ सखि साजन? ना सखि नीर!

14 बिन आये सबहीं सुख भूले आये ते अँगे-अँग सब फूल सीरी भई लगावत छाती ऐ सखि साजन ? ना सखि पाती!

15 सगरी रैन छतियां पर राख रू रंग सब वा का चाख भोर भई जब दिया उतार ऐ सखि साजन? ना सखि हार!

16 पड़ी थी मैं अचानक चढ़ आयो जब उतरयो तो पसीनो आयो सहम गई नहीं सकी पुकार ऐ सखि साजन? ना सखि बुखार!

17 सेज पड़ी मोरे आंखों आए डाल सेज मोहे मजा दिखा ए किस से कहूं अब मजा में अपना ऐ सखि साजन? ना सखि अपना!

18 बखत बखत मोए वा की आस रात दिना ऊ रह त मो पास मेरे मन को सब करत है काम ऐ सखि साजन? ना सखि राम!

19 सरब सलोना सब गुन नीका वा बिन सब जग लागे फीका वा के सर पर होवे कोन ऐ सखि 'साजन' ना सखि! लोन (नमक)

20 सगरी रैन मिही संग जागा भोर भई तब बिछुडन लागा उसके बिछुडत फाटे हिया' ए सखि 'साजन' ना, सखि! दिया (दीपक)

21 राह चलत मोरा अंचरा गहे। मेरी सुने न अपनी कहे ना कुछ मोसे झगडा-टंटा ऐ सखि साजन ना सखि कांटा!

22 बरसा-बारस वह देस में आवे, मुँह से मुँह लाग रस प्यावे, वा खातिर मैं खरचे दाम, ऐ सखि साजन न सखि! आम।।

23 नित मेरे घर आवत है, रात गए फिर जावत है। मानस फसत काऊ के फंदा,ऐ सखि साजन न सखि ! चंदा।।

24 आठ आहर मेरे संग रहे, मीठी प्यारी बातें करे। ृाम बरन और राती नैंना, ऐ सखि साजन न सखि! मैंना।।

25 श्याम बरन और दाँत अनेक लचकत जैसे नारी।
छोनों हाथ से खुसरो खींचे और कहे तू आ री ।।
उत्तर - आरी

26 हाड़ की देही उज् रंग, लिपटा रहे नारी के संग।
चेरी की ना खून किया वाका सर क्यों काट लिया।
उत्तर - नाखून ।

27 बाला था जब सबको भाया, बड़ा हुआ कछ काम न आया ।
खुसरो कह दिया उसका नाव, अर्थ करो नहीं छोड़ो गाँव।।
उत्तर - दिया।

28 नारी से तू नर भई और ृाम बरन भई सोय।
गली-गली कूकत फिरे कोइलो-कोइलो लोय।।
उत्तर-कोयल।

29 एक नार तरवर से उतरी, सर पर वाके पांव ।
ऐसी नार कुनार को, मैं ना देखन जाँव ।।
उत्तर - मैंना।

30 सावन भादों बहुत चलत है माघ पूस में थोरी।
अमीर खुसरो यूँ कहें तू बुझ पहेली मोरी।
उत्तर - मोरी (नाली)

31 तरवर से इक तिरिया उतरी उसने बहुत रिझाया बाप का उससे नाम जो पूछा आधा नाम बताया ।
आधा नाम पिता पर प्यारा बूझ पहेली मोरी
अमीर खुसरो यूँ कहें अपना नाम नबोली

32 श्याम बरन की है एक नारी, माथे ऊपर लागै प्यारी ।
जे मानुस इस अरथ को खोले, कुत्ते की वह बोली बोले।।
उत्तर- भौं (भौंए आँख के ऊपर होती हैं।)

33 एक गुनी ने यह गुन कीना, हरियल पिंजरे में दे दीना।
देखा जादूगर का हाल, डाले हरा निकाले लाल।
उत्तर- पान

34 एक थाल मोतियाँ से भरा, सबके सर पर औंधा धरा।
चरों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।
उत्तर - आसमान

35 गोली मटोल और छोटा-मोटा, हर दम वह तो जमीं पर लोटा।
खुसरो कहे नहीं है झूठा, जो न बूझे अकिल को खोटा।।
उत्तर- लोटा।

36 एक नार कुँए में रहे,
वका नीर खेत में बहे।
जे कोई वाके नीर को चाखे,
फिर जीवन की आस न राखे ।।
उत्तर - तलवार

37 एक जानवर रंग रंगीला, बिना मारे वह रोवे।
डस के सिर पर तीन तिलाके, बिन बताए सोवे।।
उत्तर - मोर।

38 चाम मांस वाके नहीं नेक, हाड़ मास में वाके छेद।
मेहि अचंभो आवत ऐसे, वामे जीव बसत है कैसे।।
उत्तर-पिंजड़ा।

39 कभू करत है मीठे बैन,
कभी करत है रूखे नैंन।
ऐसा जग में कोऊ होता,
ऐ सखि साजन न सखि !
उत्तर- तोता।।

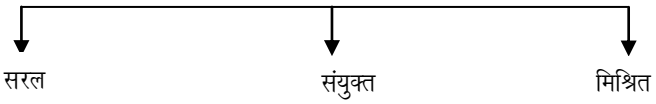
वाक्य रचना

वाक्य :- दो या दो से अधिक शब्दों का व्यवस्थित मेल जिससे सार्थक अर्थ प्रकट हो, वाक्य कहलाता है। वाक्य निर्माण में वाक्य के अंग महत्वपूर्ण होते है। जिनसे वाक्य निर्माण संभव हो पाता है। ये निम्न है -

वाक्य के निम्न 6 अंग होते है

1. सार्थकता - वाक्य का कोई न कोई अर्थ अवश्य होना चाहिए।
2. योग्यता - वाक्य का प्रसंग के अनुसार अपेक्षित अर्थ होना चाहिए।
3. आकांक्षा - वाक्य अधूरा नहीं, अपने आप में पूर्ण होना चाहिए।
4. निकटता - वाक्य को बोलते तथा लिखते समय उसके शब्दों में निकटता होनी चाहिए।
5. पदक्रम - वाक्य के पदों का एक निर्धारित क्रम होना चाहिए। हिन्दी के अनुसार वाक्य में पहले कर्ता फिर कर्म और उसके बाद क्रिया व सहायक क्रिया आनी चाहियें।
6. अन्वय - वाक्य में मुख्यतः क्रिया का कर्ता, कर्म, लिंग, वचन कारक आदि के साथ ठीक-ठीक मेल होना चाहिए।

वाक्य के भेद



विषय/उद्धेय :- इसमें कर्ता व कर्ता का विस्तार आता है।
विधेय :- इसमें कर्ता जिस कार्य को करता है। उसे विधेय कहते है। विधेय में उद्धेश्य को हटाकर सभी सम्मिलित होता है।
उदा. 1. राम खेलता है।
उद्धेश्य विधेय
2. इस कक्षा का

सर्वश्रेष्ठ धावक धमेन्द्र प्रतियोगिता में प्रथम आया।
उद्धेश्य विधेय

भाषा में वाक्य का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। जो शब्द समूह किसी भाषा का समग्र रूप से आभास देते है। उन्हें वाक्य कहा जाता है। वाक्य का उद्धेश्य किसी कथन की स्पष्ट अभिव्यक्ति करना होता है वक्ता जो कुछ कहना चाहता है। वाक्य रचना सही होने पर श्रोता भी वही अर्थ लगाता है।

वाक्य निर्माण के समय निम्न तथ्यों पर ध्यान देना चाहिए।

1. शब्दों का उचित प्रयोग होना चाहिए।
2. एक वाक्य में एक भाव प्रकट होना चाहिए।
3. वाक्यों को अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए।
4. कहावतों और मुहावरों का सही उपयोग होना चाहिए।
5. अर्थ की दृष्टि से वाक्य भ्रामक नहीं होना चाहिए।
6. पुनर्युक्ति दोष से बचना चाहिए।
7. ध्वनि और अर्थ की संगति पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
8. अप्रचलित शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।
9. निरर्थक शब्दों को वाक्यों से निकाल देना चाहिए।
10. व्याकरण संबंधी नियमों का पालन होना चाहिए।

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एवं विद्वानों ने सुन्दर वाक्य निर्माण के लिए कुछ नियम निर्धारित किए है। पद क्रम तथा अनवय का इस नियमों में प्रमुख स्थान है।

पद क्रम -

पद से तात्पर्य प्रयुक्त शब्दों से है। वाक्य को सुव्यवस्थित रूप देने के लिए व्याकरण के नियमों का पालन करते हुए सार्थक शब्दों को यथा स्थान रखने के कार्य को पदक्रम कहते है।

पदक्रम के मुख्य नियम निम्न प्रकार है।

1. अंग्रेजी वाक्य के पहले कर्ता, क्रिया और बाद में कर्म रखने का नियम है। परन्तु हिन्दी वाक्य में पहले कर्ता, फिर कर्म और बाद में क्रिया का क्रम रहता है।
2. कर्ता कर्म और क्रिया की विशेषता बताने वाले विशेषण और क्रिया विशेषण कर्ता, कर्म और क्रिया से पहले आते है।
जैसे -
1. महाबली भीम ने दैत्य राज हिडिम्ब को जमीन पर जोर से पटक दिया।
3. वाक्य में दो कर्म के आने पर गौण कर्म को पहले तथा मुख्य कर्म को बाद में रखते है?
जैसे -
4. सर्वनाम में विशेषण का प्रयोग बाद में करते है।
जैसे - ?
5. यदि प्रश्न का उत्तर हाँ या नही में हो तो क्या शब्द वाक्य के पहले आता है।
जैसे - क्या तुम आज घर जाओगे?
6. प्रश्नवाचक सर्वनाम या क्रिया विशेषण का प्रयोग क्रिया के पूर्व किया जाता है।
जैसे - तुम उसके घर क्यों गए थे?
7. निषेधवाचक क्रिया विशेषण का प्रयोग क्रिया के पूर्व किया जाता है।
जैसे - तुम पुस्तकें लेकर नहीं जा सकते हो।
8. प्रश्न वाचक सर्वनाम का प्रयोग जब विशेषण के रूप में किया जाता है। तो वह संज्ञा से पहले आता है।
जैसे - यह किसकी कलम है?

अन्वय -

अन्वय का अर्थ हैं परस्पर सम्बन्ध। वाक्य में प्रयुक्त पदों संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया की लिंग, वचन, काल और पुरूष के साथ परस्पर संबंध स्थापित करने को अन्वय कहते है।

उपवाक्य -

1. **संज्ञा उपवाक्य** - जिस आश्रित उपवाक्य का संज्ञा की तरह प्रयोग किया जाता है। उसे संज्ञा उपवाक्य कहते है। इस का कर्म अथवा पूरक के रूप में प्रयोग किया जाता है।
उपवाक्य अधिकांशतः 'कि' या 'जो' से प्रारम्भ होता है।
उदा. राम ने कहा, कि मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।

2. जब संज्ञा उपवाक्य प्रधान उपवाक्य से प्रथम आता है। तब 'कि' का लोप हो जाता है और प्रधान उपवाक्य पहले यह जुड़ जाता है।
उदा. मैं वहां नहीं जाऊँगा, राम ने कहा।
3. **विशेषण उपवाक्य** - जिस आश्रित उपवाक्य का विशेषण की तरह प्रयोग किया जाता है। उसे विशेषण उपवाक्य कहते है।
जैसे - जिस भूरे कुत्ते को मैने कल देखा था। वह आज भी दिखा है।
पहचान - इसमें जो, जितना, जैसे, जिसे, जिस इत्यादि शब्द प्रयुक्त होते हैं।
4. **क्रिया-विशेषण उपवाक्य** :- जिस उपवाक्य का क्रिया विशेषण की तरह से प्रयोग किया जाता है। उसे क्रिया विशेषण उपवाक्य कहते है।
जैसे - सामान्यतः जब परीक्षा की तिथि घोषित हो जाती है। तब विद्यार्थी अपने अध्ययन के प्रति गम्भीर होने लगते है।
जब परीक्षा की तिथि घोषित हो जाती है। क्रिया + विशेषण उपवाक्य कहलाता है। इसमें 'जब' 'जहाँ' जिधर' 'ज्यों' इत्यादि का प्रयोग किया जाता है।

साधारण, संयुक्त व मिश्रित वाक्य

रचना के आधार पर वाक्य :- 3 प्रकार के होते है।

1. साधारण वाक्य - जब किसी वाक्य में एक क्रिया होती है। और एक कर्ता होता है। तब वह साधारण वाक्य कहलाता है।

उदा.

1. वह सहस्त्र सैनिकों का सेनापति चुना गया।
2. मैं यहाँ आकर बीमार पड़ गया।

2. **संयुक्त वाक्य** :- जिस वाक्य में दो या दो से अधिक सरल या मिश्र वाक्य किसी अवयव द्वारा जुड़े हो उसे संयुक्त वाक्य कहते है। इसके वाक्य लम्बे और जटिल होते है।

उदा.

1. मजदूर मेहनत करता है किन्तु उसके लागत से वंचित रह जाता है।
2. सम्पूर्ण प्रजा शान्ति पूर्वक एक दूसरे से व्यवहार करती है और जाति द्वेष क्रमशः घटता जाता है।

3. **मिश्रित वाक्य** :- इसे 'संयुक्त' या 'जटिल' वाक्य कहते है जिस वाक्य में साधारण वाक्य के अलावा एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य हो। उसे मिश्र वाक्य कहते है।

'इसमें प्रायः' 'ज्यों', 'जिसका', 'जिसकीं', क्योंकि, चूंकि' इसलिए, यद्यपि जो-सो, जहाँ-वहाँ, जिधर-उधर, जिस प्रकार, उस प्रकार, जैसे - वैसे जैसे- जैसे, अतः फलस्वरूप आदि योजक शब्दों का प्रयोग होता है।

उदा.

1. राजनीति अब एक व्यवसाय बनती जा रही है, जो गुण्डागिरी के बल पर चलती है।
2. वह कौन सा मनुष्य है जिसने महाराणा प्रताप का नाम न सुना हो।

अर्थ के अनुसार वाक्य के भेद :-

इसके आधार पर 8 भेद माने गए है।

1. विधानवाचक वाक्य
2. निषेध वाचक वाक्य
3. आज्ञा वाचक वाक्य
4. प्रश्न वाचक वाक्य
5. संदेह वाचक वाक्य
6. इच्छा वाचक वाक्य
7. विस्मयादि बोधक वाक्य
8. संकेत वाचक वाक्य

1. **विधि वाचक वाक्य** :- जिसमें किसी वाक्य के होने का बोध हो उसे विधि वाचक वाक्य कहते है।

जैसे -

1. राजा नगर में आए।
2. नदी बह रही है।

2. **निषेधवाचक वाक्य** :- जिस वाक्य से किसी कार्य के न होने का बोध हो उसे निषेध वाचक वाक्य कहते है।

जैसे -

1. राजा नगर में नही आए।

3. **आज्ञा वाचक वाक्य** :- जिस वाक्य से आज्ञा, अनुरोध, आदेश, आदि का बोध हो। उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते है।

जैसे -

1. अपना काम करो।
2. सदा सत्य बोलो।

4. **प्रश्न वाचक वाक्य** :- जिसके किसी तरह के प्रश्न किए जाने का बोध हो उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते है।

जैसे -

1. क्या वह पढ़ता है?
2. वह क्या खेलता है?

5. **संदेह वाचक वाक्य** :- जिस वाक्य से किसी प्रकार के संदेह का बोध हो। उसे संदेह वाचक वाक्य कहते है।

जैसे -

1. शायद माताजी आयी होंगी।
2. राम पढ़ रहा होगा।

6. **इच्छा वाचक वाक्य** - जिस वाक्य से किसी इच्छा या शुभकामना या आशीर्वाद का बोध हो। उसे इच्छा वाचक वाक्य कहते है।

जैसे -

1. ईश्वर आपकी यात्रा सफल करे।
2. तुम्हे कामयाबी मिले।

7. **विस्मयादिबोधक वाक्य** :- जिस वाक्य से आश्चर्य, सुख, दुःख, हर्ष, शोक आदि का बोध हो। उसे विस्मयादि बोधक वाक्य कहते है।

जैसे -

1. वाह ! हम जीत गए।
2. ओह ! यह कितनी वीभत्स सड़क दुर्घटना है।

8. **संकेत वाचक वाक्य** - जिस वाक्य से किसी संकेत या एक वाक्य दूसरे वाक्य की सम्भावना पर निर्भर करता है। उसे संकेत वाचक वाक्य कहते है।

जैसे-

1. यदि वह जीतेगा तो इनाम मिलेगा।
2. यदि मैं आपको पहले जानती तो आप पर विश्वास नहीं करती।

क्रिया के आधार पर वाच्य के भेद :- 3 भेद

1. कर्तृ वाक्य
2. कर्म वाक्य
3. भाव वाचक वाक्य

इस आधार पर वाक्य के 3 भेद है।

1. **कर्तृवाक्य** :- जिस वाक्य में कर्ता के अनुसार क्रिया के लिंग, पुरूष और वचन हो। उसे कर्तृ वाक्य कहते हैं।

उदा.

1. राम कचौड़ी खाता है।
2. सीता भात खाती है।

2. **कर्म वाक्य** - जिस वाक्य में कर्म के अनुसार लिंग, वचन और पुरूष हो। उसे कर्मवाच्य वाक्य कहते है।

उदा.

1. राम ने कचौड़ी खायीं।
2. सीता ने भात खाया।

3. **भाव वाक्य** :- जिस अकर्मक क्रिया वाले वाक्य में कर्ता, करण कारण की विभक्ति से मुक्त हो तथा सदैव अन्य पुरूष, पुल्लिंग एक वचन की हो। उस वाक्य को भाव वाचक वाक्य कहते है।

जैसे -

1. मुझसे झूठ नहीं बोला जाता।
2. हमसे अब और दोड़ा नहीं जाता।

निपात :-

वे सहायक शब्द जो अपने वाक्यार्थ में बिल्कुल नवीन अर्थ होते है। निपात कहलाते हैं। निपात सहायक शब्द होते हुए भी वाक्य के अंग नहीं होते है। पर वाक्य में भी इनके प्रयोग से उस बात का सम्पूर्ण अर्थ प्रभावित होता है।

जैसे -

1. दीपक ने ही मुझे मारा।
2. दीपक ने मुझे ही मारा है।
3. काश मेरा चयन हो जाता है।

विराम-चिन्ह्

हिन्दी-विराम चिन्ह - एक दृष्टि में

अर्थ :- ठहराव या रुकना

पढ़ते या लिखते समय कहाँ पर कितना रुकना है और किन भावों को प्रदर्शित करना है ताकि वक्ता या श्रोता उसके सही अर्थ को ग्रहण कर सकें ये बताने वाले चिह्न विराम चिन्ह कहलाते हैं।

जैसे -

1. रोको मत, जाने दो।
2. रोको, मत जाने दो।

विशेष :- विराम चिह्नों की संख्या 17 है-

	विराम चिह्न	चिह्न
1ण	1. पूर्ण विराम	।
2ण	अर्द्ध विराम	;
3ण	अल्प विराम	,
4ण	अपूर्ण विराम/न्यून विराम/विवरण-चिन्ह	:
5ण	प्रश्न विराम	?
6ण	विस्मय विराम	!
7ण	निर्देशक	——
8ण	विवरण - चिह्नः——	
9ण	योजक/सम्बन्ध-चिह्न	-
10ण	अवतरण विराम/उद्धरण- चिह्न	‘ ’ / “ ”
11ण	लोप विराम/वर्जन-चिह्न	.....
12ण	लाघव विराम/संक्षेपसूचक	•
13ण	त्रुटि विराम/संक्षेपसूचक/हंस पद	^
14ण	कोष्ठक	[ ] { } ( )
15ण	तुल्यतासूचक-चिह्न	=
16ण	तारक-चिन्ह/पाद टिप्पण	+ / = / ! / × / . / *
17ण	समाप्ति सूचक	-:×:-

अर्द्ध विराम (;)

इसका प्रयोग स्पष्ट विरामवाले स्थलों में आता है और किसी वाक्य में कोई स्वतन्त्र वाक्य होने पर उन्हें अलग-अलग रखने के लिए भी उसका प्रयोग किया जाता है। अर्द्ध विराम की जगह पर अल्प विराम की अपेक्षा कुछ अधिक समय तक ठहरना चाहिए।

जैसे - सूर्यास्त हुआ; आकाश लाल हुआ; वराह पोखरों से उठकर घूमने लगे; मोर अपने रहने के झाड़ों पर जा बैठे; हरि हरियाली पर सोने लगे।

अल्प विराम (,)

पढ़ते और लिखते समय अल्प विराम पर क्षण-भर ठहरना चाहिए। यह विराम- चिह्न वाक्य की प्रवाह-गति को अविच्छित रखने के लिए बहुत ही उपयोगी है। सम्बोध के परे, अर्थ में बाधा पड़ने की जगह पर, एक ही दशा में कई पदों और वाक्यांशों के अन्तिम पद को छोड़कर शेष के आगे, प्रधान वाक्य से आश्रित वाक्यों को पृथक् करने के लिए मुख्य क्रिया के कई कर्ता होने पर अन्तिम से पहले प्रत्येक कर्ता वाले पद, दो परस्पर अन्वित पदों अथवा वाक्यांशों के बीच के खण्ड-वाक्य के दोनों ओर, ‘वह’, ‘यह’ लुप्त रहने के स्थान पर और वरन्, किन्तु, परन्तु, लेकिन, इसलिए, क्योंकि आदि से प्रारम्भ होने वाले खण्ड-वाक्य के पहले अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - ब्रह्मा ने दुःख और सुख, पाप और पुण्य, रात और दिन - ये सब बनाये हैं।

अपूर्ण विराम (:)

इसे न्यून विराम और विवरण-चिह्न भी कहा जाता है। इस विराम की आवश्यकता अत्यन्त आकस्मिक होने पर अथवा किसी कथन से एक से अधिक उदाहरण देने पर अथवा किसी उद्धरण-द्वारा कोई अभिप्राय व्यक्त करने की दशा में उद्धरण के पहले ‘अपूर्ण विराम’ का प्रयोग किया जाता है। ‘अपूर्ण विराम’ पर अर्द्ध विराम की अपेक्षा कुछ अधिक ठहरना पड़ता है। अंग्रेजी में उदाहरण अथवा किसी वक्तव्य के पृथक्करण में इसका अत्यधिक प्रयोग किया जाता है।

जैसे - गांधी जी ने कहा था : “करो या मरो”।

प्रश्न विराम (?)

इसका प्रयोग प्रश्नबोधक वाक्य के अन्त में किया जाता है। एक ही वाक्य में एक से अधिक प्रश्न होने पर ‘प्रश्न विराम’ या तो अन्तिम प्रश्न के आगे लगाते हैं या प्रत्येक के आगे। कभी-कभी जब प्रश्न विराम से शंका, संकेत अथवा व्यंग्य के प्रश्न का भी काम लिया जाता है तब यह किसी शब्द के आगे कोष्ठक के भीतर रखा जाता है। ‘प्रश्न ‘ विराम’ ऐसे वाक्यों में प्रयुक्त नहीं होता, जिनमें प्रश्न आज्ञा के रूप में हो।

जैसे - ‘विराम-चिह्न’ की परिभाषा बताओ।

जिन वाक्यों में प्रश्नबोधक वाक्यों का अर्थ सम्बन्धसूचक शब्दों के साथ होता है, उनमें प्रश्न विराम का चिह्न प्रयुक्त नहीं होता।

जैसे - तुम्हें नहीं मालूम कि क्या चाहता हूँ।

विस्मय विराम (!)

विस्मय विराम का प्रयोग आश्चर्य, हर्ष, भय तथा तीव्र मनोवेग प्रदर्शित करने के लिए होता है और वाक्य का अभिप्राय उत्तर पाने का न होकर, भावोद्वेग प्रकटीकरण होने पर प्रश्न विराम के स्थान पर इसी का प्रयोग किया जाता हैं सम्बोधन करने में भी लोग इसका प्रयोग करते हैं यद्यपि इसका विशेष सम्बन्ध मनोवेगाधिक्य से है, केवल सम्बोधन से नहीं।

जैसे - वाह! वाह!! कितना अच्छा गाते हो।

निर्देशक (——)

उद्धरण अथवा भाव-प्रकाशन अथवा व्याख्यात्मक पदों के पहले अपूर्ण विराम के आगे ‘निर्देशांक’ (——) लगाते हैं विचार - श्रृंखला गत्यावरोध अथवा परिवर्तन होने पर कभी-कभी समानपदीय वाक्यांशों के आगे और पीछे भी तथा अपूर्ण विराम और कोष्ठक के स्थान पर अथवा वाक्यों के बीच कुछ देर तक ठहरने के लिए निर्देशक प्रयुक्त होता है।

जैसे -

1. **दुनिया में नयापन - नूतनत्व ऐसी चीज़ नहीं, जो गली-गली मारी-मारी फिरती हो।**
2. **सबको सांत्वना देना, बिखरी हुई सेना को इकट्ठा करना और-और क्या?**
3. **इसी सोच में सवेरा हो गया कि हाय! इस वीरान में अब कैसे प्राण बचेंगे- न जाने मैं कौन-सी मौत मरूँगा।**

विवरण (:-)

किसी कथन की व्याख्या करने तथा किसी विषय वस्तु का विवरण देने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। कुछ लोग जानकारी के अभाव में विवरण-चिन्ह के स्थान पर निर्देशक - चिह्न का प्रयोग कर देते हैं। इस चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित वाक्यों में होता है।

1. निम्नलिखित का परिचय दीजिए :- कौटिल्य, याज्ञवल्क्य।
2. हिन्दी में दो वचन होते है :- एकवचन, बहुवचन।

योजक (-)

इसे सम्बन्ध-चिन्ह भी कहते हैं। योजक सम्बन्ध को बताता हैं किसी पंक्ति के अन्त में कोई शब्द पूरा नहीं होने पर, लिखने में वहाँ योजक (-) देकर शेष खण्ड को दूसरी पंक्ति में लिखते हैं। समस्त पदों के मूल खण्ड को अलग-अलग लिखने में भी प्रयोग किया जाता है और एक ही वाक्य में कई पदों के एकसाथ व्यवहार किये जाने पर भी उनके नाम गिनाने में अल्प विराम के साथ पर 'योजक' लगाते हैं क्योंकि योजक के ऐसे प्रयोग से वाक्य के बीच में अल्प विरामों के कारण उत्पन्न होने वाला भ्रम दूर हो जाता है।

जैसे - बहुत-सा धन लेकर राम-श्याम अपने गाँव लौटे।

' ' अवतरण विराम " "

अवतरण विराम को 'उद्धरण-चिन्ह' भी कहा जाता है। यह चिन्ह दो प्रकार का होता है- (1) एकल (' ') और युगल (" ")। एकल अवतरण विराम का प्रयोग किसी वाक्य के एक अंश अथवा शब्द के लिए होता है। युगल अवतरण विराम का प्रयोग किसी के कथन को यथावत् रूप में उद्धृत करने पर होता है।

जैसे -

1. 'प्रजातन्त्र' का अर्थ क्या है, मैं जानती हूँ।

2. सन्ध्या ने कहा, "मनुष्य नश्वर है।"

लोप विराम (-----)

इसे 'वर्जन-चिह्न' भी कहते है। लोप विराम से कुछ अंश के लुप्त रहने का बोध होता है और किसी अवतरण का कोई अंश अप्रकाशित रहने में अथवा कुछ ही अंश लिखकर सम्पूर्ण का बोध कराने में इस विराम का प्रयोग करते है।

जैसे - मैं तो जितना कहता हूँ, उतना करता भी हूँ। तू तो..... .....

लाघव विराम (•)

इसे 'संक्षेप सूचक' भी कहते है। संक्षिप्त शब्दों के बाद 'लाघव विराम' के चिन्ह का प्रयोग होता है।

जैसे - पी.टी.आई./ पं. रमानन्द पाण्डेय।

त्रुटि विराम/हंस पद (^)

इसे 'हंसपद' भी कहते हैं। जब किसी शब्द अथवा अक्षर वाक्य का प्रकाशन किया जाता है और लेख में जहाँ छूटा हुआ भाग दिखाना होता है, वहाँ त्रुटि विराम (^) देकर वाक्य के ऊपर अथवा पृष्ठों के किनारे हाशिये पर उसे लिख देते हैं।

जैसे - मैं कल ही बाज़ार जाऊँगी।

सबेरे

मैं कल ही ^ बाज़ार जाऊँगी।

कोष्ठक ( )

किसी वाक्य में किसी शब्द-विशेष अथवा पद-विशेष से सुस्पष्ट करने के लिए 'कोष्ठक' का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त विषय-विभाग में क्रम सूचक अक्षरों अथवा अंकों के साथ, समानार्थी शब्द अथवा वाक्यांश के साथ, मूल वाक्य के साथ आकर उससे रचना का कोई सम्बन्ध न हो, ऐसे वाक्य के साथ, किसी रचना का रूपान्तर करने में बाहर से लगाये गये शब्दों के साथ, नाटकादि संवादमय लेखों में हावभाव सूचित करने के लिए, भूल के संशोधन अथवा सन्देह में 'कोष्ठक' का प्रयोग होता है।

जैसे -

1. (क) काल (ख) स्थान (1) स्वरसन्धि (2) यमक अंलकर
2. अफ्रीका के नीग्रो लोग (हब्शी) अधिकतर उन्हीं की सन्तान हैं।
3. मेनका अप्सरा का सौन्दर्य अद्वितीय था (जैसी वह स्वरूपा थी, वैसी ही सुपर्णखा कुरूपा)।
4. ईशा (व्यग्रता से) : **"नाथ! तुम्हें क्या हो गया?"**
5. यह चिन्ह अकार शब्द (वर्ण?) का निभ्रान्ति रूप है।"
6.

तुल्यतासूचक चिह्न (=)

समानता के अर्थ में यह चिन्ह प्रयुक्त होता है।

जेसे - **दिन = दिवस, रात्रि = निशा, अचला = पृथ्वी**

तारक पाद टिप्पणी चिह्न (+ * 1, 2, 3)

तारक चिह्न फुटनोट अथवा पाद - टिप्पणी देने में लगाये जाते हैं और उन्हें रख कर ऊपर के शब्द अथवा वाक्यांश अथवा वाक्य से सम्बन्ध रखने वालो अंश को पृष्ठ के नीचे लिखते हैं।

वाक्य शुद्धि

भाषा के प्रति लापरवाही वाक्य अशुद्धि का प्रमुख कारण बनी है। प्रायः लोग बोलने या लिखने के कारण शब्दों का असंतुलित प्रयोग कर वाक्य के सम्पूर्ण क्रम को बिगाड़ देते है।

वाक्य रचना में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, वचन, लिंग, विभक्ति संबंधी अशुद्धियाँ हो सकती हैं।

शुद्ध वाक्य रचना में निम्नलिखित 4 बातों का विशेष ध्यान देना चाहिए।

1. वाक्य, वक्ता के हृदयत्व भावों को व्यक्त करने में सक्षम हो।
2. वाक्य में प्रयुक्त शब्द सार्थक हों।
3. वाक्य व्याकरण की दृष्टि से पूर्णता लिए हुए हो।
4. वह अन्वय एवं पदक्रम की दृष्टि से पूर्ण हो।

- दो वर्णों से निर्मित शब्द का एक ही उच्चारण खण्ड होता है।
  जैसे - पल, कल, चल, नल, कल, क्षेत्र, नेत्र आदि।
- तीन वर्णों के संयोग से निर्मित शब्द के दो उच्चारण खण्ड होते हैं।
- प्रथम उच्चारण खण्ड प्रथम दो वर्णों का तथा द्वितीय अन्तिम अक्षर का।
  जैसे -

पायल	-	पाय + ल
पावक	-	पाव + क
गायक	-	गाय + क
सरोवर	-	सरो + वर

- 4 वर्णों से निर्मित शब्द के तीन उच्चारण खण्ड होते है।
  जैसे - विफलता - वि + फल + ता
  आकुलता - आ + कुल + ता
- 5 वर्णो से निर्मित शब्द के तीन उच्चारण खण्ड होते है।
  जैसे - उत्सुकता - उत् + सक + ता अपवाद
  इहलौकिक - इह + लौ + किक
  मध्य का वर्ण दीर्घ व अकेला होगा।
- स्वर के पश्चात् आने वाली नासिका ध्वनि को अनुस्वार कहते है।
- य, र, ल के पूर्व अनुस्वार का उच्चारण न होता है।
  जैसे - संयंत्र, संरक्षक, संलयन, संलाप आदि।
- प तथा व के पूर्व अनुस्वार का उच्चारण म होता है।
  जैसे - सम्पादक, संवाद, सम्पर्क।
- ऊष्म व्यंजनों के पूर्व अनुस्वार का उच्चारण न होता है।
  जैसे - संस्कार, संस्कृति, संसार, संसद्।
- र, ष, ऋ अक्षरों के बाद आने वाला **'न'** व्यंजन सदा **'ण'** में बदल जाता है।

जैसे - मरण, जागरण, हरण, शरण

- क, ख, ट, ठ, प, फ सदैव '(ष)' आता है।
  जैसे - निष्पक्ष, निष्पाप, निष्कलंक, निष्ठुर।
- च, छ के पूर्व 'श' आता है।
  जैसे - निश्चित, निश्छल।
- क्ष अक्षर के प्रयोग की बहुलता तत्सम शब्दो में होती है।
- हिन्दी में ऋ के प्रयोग का अभाव देखा गया है तत्सम शब्दों में ही ऋ का प्रयोग मिलता है।
  जैसे - ऋचा, ऋषि, पृथ्वी, भ्रातृत्व आदि।
- अनुस्वार में 'पूर्ण बिन्दु' और अनुनासिक में चद्र बिन्दू का प्रयोग किया जाता है।
- अनुस्वार का प्रयोग वहां करना चाहिए। जहां उच्चारण में ? स्पष्ट सुनाई दे।
  जैसे - सतंरो , संत , संन्यासी।
- अनुनासिक का प्रयोग तब हो। जब ध्वनि का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से हो।
  जैसे - चाँदनी, आँख, सँभलना।

अनुनासिक का चिन्ह् - ँ

स्वर और व्यंजन से संबंधित अशुद्धियाँ

शुद्ध	**अशुद्ध**
अपथ्य	अपथ
अध्ययन	अध्यन
आलू	आलु
इष्ट	इष्ठ
ऋद्धि	रिदि
इकट्ठा	इकठ्ठा
अन्त्याक्षरी	अन्ताक्षरी
उज्ज्वल	उज्जवल
अँधेरा	अंधेरा
उन्हीं	उन्ही
कुआँ	कूआ
गुरू	गुरू
चाबी	चाभी
पंखा	पन्खा
अंधा	अँधा
नीरोग	निरोग
स्त्रोत	स्त्रोत
निश्चित	निशचित
इनाम	ईनाम
मेढक	मेंढक
घण्टा	घन्टा
क्यों	क्यूँ
शृंगार	श्रृंगार
सहस्त्र	सहस्त्र
कैकेयी	कैकयी
ऋक्ष	रीछ

रस

कविता को पढ़ने से कहानी को सुनने से और नाटक को देखने से अर्थात् साहित्य के सम्पर्क से जो सहृदय को अनुभूति होती है, उसे रस कहते है।

रस का शाब्दिक अर्थ है 'आनन्द'। रस को काव्य की आत्मा माना जाता है।

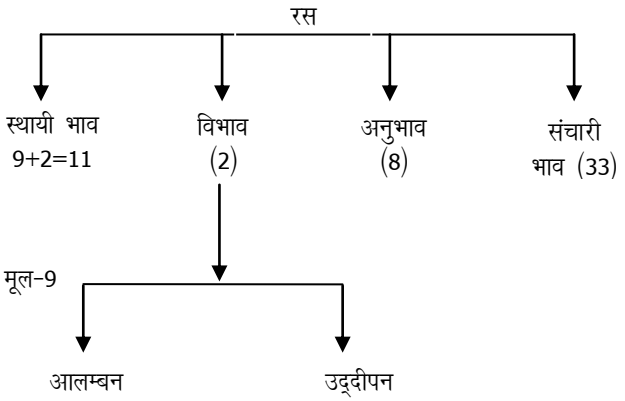
आचार्य विश्वनाथ - लिखते है। **'रसात्मकं वाक्यं काव्यं'**

★ रस की निष्पति के सम्बन्ध में भरतमुनि ने नाट्य शास्त्र में लिखा है।

'विभावानुभावतयभिचारिसंयोगद्रसनिष्पत्ति'

अर्थात् विभाव अनुभाव और व्याभिचारी या संचारी भावों के संयोग से रस की निष्पति होती है। इस आधार पर रस निष्पति के नि.लि. तत्व है।

1. स्थायी भाव
2. विभाव
3. अनुभाव
4. संचारी भाव



<u>स्थायी भाव</u> - मानव हृदय में कुछ भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहते है। उन्हें स्थायी भाव कहते है। स्थायीभाव की परिपक्व अवस्था की रस है। इनकी संख्या 9 होती है। अतः रस भी 9 रस है।

स्थायी भाव	**रस**
रति	शृंगार
ह्रास	हास्य
शोक	करूण
उत्साह	वीर
क्रोध	रौद्र
जुगुप्सा (घृणा)	वीभत्स
विस्मय	अद्भुत
निर्वेद (वैराग्य), शम	शान्त
भय	भयानक
वातसल्य	वत्सल

नोट :- 10 वें रस के रूप में वात्सल्य को स्थान दिया गया है।
11 वें रस के रूप में भक्ति रस को स्थान दिया गया है।

<u>विभाव</u>- हृदय में सोये हुए स्थायी भाव को भक्ति रस जागृत करने वाले कार्य को विभाव कहते है।

<u>विभाव दो प्रकार है।</u>

1) **<u>आलम्बन</u>** - जिस वस्तु या व्यक्ति के कारण या आश्रय में स्थायी भाव जागृत हो, उसे आलम्बन विभाव कहते है।
जैसे - नायक, नायिका, प्रकृति आदि।

ii) उद्दीपन - जो कारण स्थायी भाव को उत्तेजित करते है। वे उद्दीपन विभाव कहलाते है।

जैसे - नायिका का रूप सौन्दर्य आलम्बन यदि आग है। जो अंगारे के रूप में आग लगाती है। और उद्दीपन उसे हवा के समान उसे तीव्र करती है।

<u>आश्रय</u> - जिसके हृदय में भाव उत्पन्न होता है। उसे आश्रय कहते है।

<u>अनुभाव</u> स्थायी भाव के जागृत होने पर उनको प्रकट करने वाली शारीरिक चेष्टाओं को अनुभाव कहते हैं।

अनुभाव सदैव आश्रय के होते है। इनकी संख्या 8 मानी गई है।

इनके प्रकार दो है। आठों नाम बताऐं

1) कायिक -
2) सात्विक -

संचारी भाव - आश्रय के हृदय में उठने वाले अस्थिर मनोविकारों को संचारी भाव कहते है। इनकी संख्या 33 होती है। इनकी स्थिति क्षण भंगुर होती है। जैसे - निन्द्रा, स्वप्न, चिन्ता, मद, ग्लानि।

नोट - नाट्य सहायक प्रणता आचार्य भरत ने आठ रस माने है। तो आचार्य मम्मट और विश्वनाथ में रसो की संख्या 9 मानी है। आगे चलकर वात्सल्य और भक्ति रस की भी कल्पना की गई। इस प्रकार 11 रसों की कल्पना की गई।

1) शृंगार रस - शृंगार रस का स्थायी भाव जो पति-पत्नी के भाव से जुड़ा रहता है। इसके दो भेद है।

1) संयोग शृंगार रस - जहाँ पर प्रेमी-प्रेमिका मिलकर किल्लोलें (बाते करना या हसी मजाक) करते है। वहाँ संयोग श्रृंगार रस होता है।

उदा. बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय सौंह धरे मोहिन हँसे, देन कहे नट जाय।।

2) वियोग श्रृंगार रस - वियोग श्रृंगार रस में नायक - नायिका से विछोह हो जाता है। अर्थात् एक-दूसरे से दूर हो जाते है। ऐसी स्थिति में मनोगति एक दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करती है।

उदा.

1) निसि दिन बरसत नैन हमारे, सदा रहती पावस ऋतु हम पे।
जब तो श्याम सिधारे।

2) मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई। जाके सिर पे मोर मुकुट मेरो पति सोई।।

2) हास्य रस - जहाँ पर काव्य को पढ़कर सहृदय के मन में प्रफुल्लता 'रोमांच और प्रसन्नता उत्पन्न होती है वहाँ हास्य रस होता है।

उदा.

मेरठ मे हमको मिले धमधूसर कव्वाल, तरबूजे सी खोपड़ी और खरबूजे से गाल खरबूजे से गाल देह हाथी से पाई, लम्बाई से ज्यादा थी उनकी चौड़ाई 'बस से उतरे स्टेशन पर इक्को के अड्डे पर आए। घोड़ो ने उन्हे देख आँसू टपकाए, रिक्से वाले भाग गए डीलडोल को देख साहस कर आगे बड़ा ठेले वाला एक रूपये मे चार लूँगा दो फेरे कर बाबूजी को पहुंचा दूंगाा, पहुंचे दल्ली जक्शन मन में उठा ख्याल वजन मालूम करने 10 का सिक्का ड़ाला टिकट जब बाहर आया पास खडे एक सज्जन से फरमाया सुनिए सज्जन क्या लिखा है। कहिए टिकट पर लिखा था। कृपया एक-साथ 4 न चढ़िए।

3) **करूण रस** - करूण रस में सहृदय के मन में एक ग्लानि या शोक या पश्चाताप आदि भाव जागृत हो जाते है।

उदा. प्रिय मृत्यु का अप्रिय, महासंवाद पा कर विषभरा।
चित्रस्थ-सी, निर्जीव सी हो रह गयी उत्तरा।।

4) वीर रस - वीर रस में मानव शरीर के अन्दर शिथिलता को सक्रियता में बदलने की ताकत होती है। एक प्रकार का जोश शरीर मे प्रकट हो जाता है कार्य करने की उमंग जाग जाती है। मन उत्साह से भर जाता है।

जैसे - कालिआ नाग को देखकर श्री कृष्ण का जोश से भरना -

1) स्वजाति की देख अतीव दुर्दशा, विगर्हणा देख मनुष्य निहार के
प्राणि-समूह को, हुये सब उत्तेजित वीर- की केसरी।।
हितैषणा से निज जन्म-भूमि की, अपार आवेश ब्रजेश को हुआ।
बनी महाबंक गठी हुई भवे, नितान्त विस्फारित नेहा हो गए।।

2) मैं सत्य कहता हूँ सखे। सुकुमार मत जानो मुझें यमराज से भी युद्ध में, प्रस्तुत सदा मानो मुझे।। हे सारथे ? है द्रोण। क्या आवे स्वयं इन्द्र भी वो भी न जितेगे आज क्या मुझसे भी कभी।।

5) रौद्र रस - शब्दों के माध्यम से कविता की रचना भाव पूर्ण शक्तियों से जहाँ क्रोध को जन्म देती है। वहाँ रौद्र रस होता है।

जैसे - श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे। सब शोक अपना भूलकर करतल-युगल मलने लगे।।

6) वीभत्स रस - जहाँ पर कविता में घृणा का भाव भरा हो वहाँ पर वीभत्स रस होता है।

रस सिर पैर बैठयो काग, आँख दोऊ खात निकारत खींचत जीभहि स्यार, अतिहि आनन्द धास्त।।

7) भयानक रस - जहाँ पर कवता के माध्यम से डर उत्पन्न हो जाए। मनोदशा असन्तुलित हो जाए, वहाँ भयानक रस होता है

उदा. अ. नभ से टपत बाज लखि भूलयो सकता प्रपंच कम्पति तन
व्याकुल नयन लावक हिलियो न रच।।
ब. उधर गरजती सिन्धु लहरियाँ कुटिल काल के जालो सी।
चली आ रही फेन उगलती फन फैलाए व्यालों सी।।
स. एक ओर अजगरी लखि एक ओर बनराज।
बिकल बटोही बीच मे पर छो मुरहा खाए।।

8) अदभुत रस - जहाँ पर काव्य मे असम्भव कार्य को सम्भव बताया
जाए। और सुनकर आश्चर्य हो। वहाँ अद्भुत रस होता है।

जैसे - एक अचंभा देखा रे भाई । ठाड़ा सिंग चरावै गायी।
कुत्ता को ले गई बिल्ली, पहले पूत पीछे भई माई।।

2) आखिल भुवन चर-अचर जग हरि मुख में लखि मातु।
चकित भयी, गदगद वचन, बिरित दृग पुलकातु।।

3) हनुमान की पूछँ में, लगन पायी आग। लंका सारी जल गई गये निशाचर भाग।।

9) **शान्त रस** - जहाँ पर कविता मे काव्य के माध्यम से वैराग्य, शान्ति आदि भावों का अनुभाव होता है। वहाँ शान्त रस होता है।

जैसे - कोई भी भजन

उदा. बुध का संसार त्याग, क्या भाग रहा हूँ भार देख।
तु मेरी ओर निहार दे, मैं, त्याग चल। निस्सार देख।।
अटके गो मेरा कौन काम ओ क्षण भन्गुर भव राम-राम

10) वात्सल्य रस - जहाँ पर माँ - बेटे के प्रसंग में माँ का दुलार बेटे की चपलता का वर्णन हो वहाँ पर वातसल्य रस होता है।

जैसे - मैया मैं नहीं माखन खायो।

11. भक्ति रस -

जहाँ पर कविता में काव्य के माध्यम से भक्ति आदि भावों का अनुभव वह भक्ति रस होता है।

उदाहरण :-

अ. कोई भी भक्ति पूर्ण गीत

छंद

छंद - छंद शब्द 'चद्' धातु से बना है। जिसका अर्थ है। खुश करना। छंद का सर्वप्रथम प्रयोग ऋग्वेद में मिलता है। अर्थात् ''मात्रा और वर्ण आदि के विचार से होने वाली वाक्य रचना को छंद कहते है।''

दूसरे शब्दों में, वर्णों और शब्दो का ऐसा क्रम जिसमें तुक हो, लय हो सार्थकता हो छंद कहलाता है।''

छंद के प्रकार - छंद के मुख्यतः तीन मुक्त भेद होते है -

1. मात्रिक छंद
2. वार्णिक छंद

मात्रिक छंद - जिन छंदों की पहचान केवल 'मात्राओं के आधार पर' की जाती है। वे मात्रिक छंद कहलाते है। इनमें मात्राओं की समानता एवं संख्या पर विचार किया जाता है।

जैसे -

दोहा, चौपाई, रोला, सोरठा, उल्लाला, हरिगीतिका, गीतिका, कुण्डलिया

चौपाई :-

यह एक मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते है। प्रत्येक चरण में 16-16 मात्रायें होती है।

उदा. मंगल भवन अ मंगल हारी,।
द्रवहु सु दशरथ अजिर बिहारी।।

दोहा- यह एक विषम मात्रिक छंद है। इसके प्रथम और तीसरे चरण में 13-13 मात्राऐं और दूसरे व चौथे चरण में 11-11 मात्रायें होती है।

उदा. रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती मानुष चून।।

सोरठा -

यह एक अर्धसममात्रिक छंद है। यह दोहे का उल्टा होता है। इसके पहले और तीसरे चरण में 11-11 मात्राएं दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राऐँ होती है।

उदा. सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।
विहसे करूणाएन, चितहु जानकी लखन तन।।

रोला-

यह एक साममात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राऐं होती है।

उदा. मूलन ही की जहाँ अधोपति केशव गाइये। होत हुतासन घूम नगर एकै गालिनाइय।।
दुर्गति दुर्जन ही जो, कुटिल गति सरितन ही में।
ओ फल को अभिलाष, प्रकट कुल कवि के जी में।।

कुण्डलिया :-

कुण्डलिया एक विषम मात्रिक छंद है। जिसमें 6 चरण होते है। प्रत्येक चरण में 24 मात्राऐं होती है। इसमें 4 चरण 5 चरण में यथावत् दोहा + रोला आता है। इसमें प्रथम दो पंक्तियां दोहा छंद की तथा अंतिम चार पंक्तियाँ रोला छंद की होती है।

उदा.

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय।
काम बिगारे आपनो, जग में होत हसाय।।
जग में होत हसाए, चित्त में चैन न पावे।
खान पान सम्मान, रास रंग मनहि न भावे।।
कहें गिरधर कवि राय, दुःख कछु टरत न टारो।
खटकट है हिय माही, जो कियो बिना विचारो।।

बरबै -

यह एक अर्धसममात्रिक छंद है। इसके पहले और तीसरे चरण में 12-12 मात्राऐं दूसरे और 4 चरण में 7-7 मात्राऐ होती है।

उदा.

अवधि शिला का उस पर, था गुरू भार।
तिल-तिल काट रही थी, दृग जल धार।।

गीतिका छंद

यह एक मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते है। 14, 12 के विराम से 26 मात्राएँ होती है।

उदा. जो अखिल कल्याणमय है व्यक्ति तेरे प्राण में। कौरवो के नाश पर रो रहा केवल वही। किन्तु उसके पास ही समुदायगत जो भाव है। पूछ उनसे, क्या महाभारत नही अनिवार्य है।

हरिगीतिका :-

यह एक सममात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण ये 16-12 के विराम से 28 मात्राऐं होती है।

नोट - अगर किसी शब्द पर ऊपर (र्म) आए तो उससे पहले वाले शब्द पर (गुरू) लगाते है।

उदा. दुष्कर्म

उदा. 1 अन्याय सहकर बैठ रहना, यह यहाँ दुष्कर्म है, न्यायार्थ अपने बंधु को भी, दण्ड देना धर्म है।

उल्लाला छंद -

यह अर्धसममात्रिक छंद है। इसमें 4 चरण होते है। 15-13 मात्राएँ होती है। इस प्रकार यह 28 मात्राओं का छंद है।

उदा. हे शरणादायिनी देवी। तू करती सबका त्राण है। तू मातृभूमि, संतान हम, तू जननी तू प्राण है।

छप्पय - यह एक मात्रिक छंद है। जिससें पहले चार चरणों में रोला और बाद में ये दो उल्लाला होते है। इसमें 24-28 मात्राओं के योग से 52 मात्राऐं होती है।

नोट - अगर किसी शब्द पर (-) अनुनासिक स्वर आए तो (ऽ) दीर्घ मात्रा लगाते है।

उदा.

नीलाम्बर परिधान हरित पट पर सुंदर है।
सूर्य चन्द्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है।
नदियां होम प्रवाह, फूल तारे मण्डल है।
बन्दीजन खगवृन्द, शेषफन सिंहासन है।
करते अभिषेक पपोद है बलिहारी इस वेश की-28

अलंकार

अंलकार का शाब्दिक अर्थ सजावट, शृंगार, आभूषण आदि। साहित्य शास्त्र से अलंकार शब्द का प्रयोग काव्य सौन्दर्य के लिए होता है।

जिस प्रकार आभूषण पहनने से व्यक्ति का शारीरिक सौन्दर्य और आकर्षण बढ़ जाता है उसी प्रकार काव्य में अलंकार के प्रयोग से उसके सौन्दर्य में वृद्धि होती है। अर्थात् अलंकार काव्य को सौन्दर्य प्रदान करते है।

अलंकारों के प्रकार - मुख्य रूप से दो और संस्कृत भाषा में तीन है।

1. शब्दालंकार
2. उभयालंकार
3. उभयालंकार

1. **शब्दालंकार** - जहाँ पर साहित्य में कविता के माध्यम से वर्णों व शब्दो का संग्रह चमत्कार उत्पन्न करता है वहाँ शब्दालंकार होता है।

इसके तीन भेद होते है।

1. **अनुप्रास अंलकार** - जहाँ पर कविता में किसी एक वर्ण की बार-बार आवृति द्वारा चमत्कार उत्पन्न होता है। वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे - अ. चारू चन्द्र की चंचल किरणें, खेल रही है जल-थल में।
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है, अवनी और अम्बर तल में।।

'च' वर्ण की आवृत्ति

ब. पावस ऋतु भी पर्वत प्रदेश, पल-पल परिवर्तित प्रकृति वेश।।

'प वर्ण की आवृत्ति'

2. यमक अलंकार - जहाँ पर कविता में एक शब्द की आवृत्ति दो या अधिक बार हो व अर्थ अलग-अलग निकले वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदा. अ. कनक-कनक ते, सौ गुनी मादकता अधिकाय। वा खाये बौराए नर, या पाये बौराय।।
ब. जेते तुम तारे, तेते नभ मे न तारे हैं।
तारे - प्रताड़ित करना
तारे - आसमान के तारे

3. श्लेष अलंकार - जहाँ पर साहित्य में एक ही शब्द हो। तथा संदर्भ बदलने पर अर्थ अलग-2 निकले वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण अ. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सबसून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून।।
ब. हरि बोला हरि ने सुना, हरि गए हरि के पास।
वे हरि तो हरि में गए, वे हरि भए उदास।।
हरि - मेढ़क, हरि - तालाब, हरि - साँप

उदा. 1. एक कबूतर देख हाथ में, पूछा कहाँ अपर है।
उसने कहा अपर कैसा, वह उड़ गया सपर है।।
अपर - कबूतर अपर-बिना पर का
2. को तुम हो? इत आए कहाँ।
'घनश्याम' है, तो कितहूँ बरसो।

2. अर्थालंकार - जहाँ पर कविता में अर्थ के माध्यम से चमत्कार उत्पन्न होता है। वहाँ अर्थालंकार होता है।
प्रकार - अर्थालंकार के प्रकार निम्न है -

1. उपमांलकार - इसमें प्रस्तुत वस्तु को देखकर अप्रस्तुत वस्तु से बराबरी करना अर्थात् तुलना करना उपमा अलंकार कहलाता है

उपमा के चार अंक होते है।

अ. उपमेय - जिसकी तुलना की जाए।
ब. उपमान - जिससे तुलना की जाए।
स. साधारण धर्म - जिसके कारण तुलना की जाए।
द. वाचक शब्द - समान बताने वाला शब्द

जैसे - 1 सीता का मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है।
2 राधा-रति के समान सुन्दरी है।

2. रूपक अलंकार - उपमेय में उपमान के आरोप को रूपक अलंकार कहते है।

जैसे - 1. मुख चन्द्र है।
2. वंदऊ चरण कमल हरि राही।

3. उत्प्रेक्षा अलंकार - उपमेय में उपमान की सम्भावना को उत्प्रेक्षा अलंकार कहते है।

पहचान - जनु, जानुह, मनहु, ज्यों, त्यों, मानो, इव आदि शब्द आते है।

उदा. अ. मुख मानहूँ चन्द्र है।
ब. चमचमाता चंचल नयन, बिच घूँघट पट झीन।
मानहूँ सुरसरित विमल जल उछरत युग मीने।।
स. जान पड़ता नेत्र, देख बड़े-2।
हीर को में गोल नीलम है जड़े।।
पद्य रागो से अधर मानों बने।
मोतियो से दाँत निर्मित है घने।।

4. सन्देह अलंकार - जहाँ पर कविता में अर्थ स्पष्ट न हो। और वास्तविक स्थिति से अवगत न हुआ। वहाँ सन्देह अलंकार होता है।
दूसरे शब्दों में - जहाँ किसी वस्तु को देखकर संशय बना रहे है। निश्चय न हो वहा संदेह अलंकार होता है।

जैसे - 1 सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है।
सारी ही की नारी है, कि नारी ही की सारी है।।

5. भ्रान्तिमान अलंकार - जहाँ किसी वस्तु को देखकर किसी विशेष समानता के कारण किसी दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाए। वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है।

जैसे - अ. नाक का मोती अधर की कांति से, बीज दाडिम का समझकर भ्रान्ति से,। देख उसको ही हुआ शुक मौन है, सोचता है अन्य शुक यह कौन है।
ब. पांय महावर देन को नाइन बैठी आय।
पुनि-पुनि जान महावरी एड़ी मोड़ति जाय।।

6. अन्योक्ति अलंकार - जब कोई बात विशेष लक्ष्य को रखकर दूसरे व्यक्ति के सन्दर्भ में कही जाती है तो वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।

उदा. 1 माली आवत् देखकर कलियन करी पुकार
फूले-फूले चुन लिये काल हमारी बार।।

7. अतिशयोक्ति अलंकार - जहां किसी वस्तु या बात को बढ़ा चढ़ाकर कर वर्णन किया जाए। अथवा सीमा के बाहर की बात कही जाए। वहां अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदा. अ. पड़ी अचानक नदी अपार किस विध घोड़ा उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक उस पार।।
ब. देख लो साकेत नगरी है
यही स्वर्ग से मिलने गगन मे जा रही है।
स. बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरो से ।
मणि वाले फणियों का मुख, क्यों भरा हुआ हीरों से।।

8. अत्युक्ति अलंकार - जहाँ किसी वस्तु का बढ़ा-चढ़ाकर किया गया वर्णन झूठा प्रतीत हो वहाँ अत्युक्ति अलंकार होता है।

उदा. लखन सकोप वचन जब बोले।
डगमगानि माहि दिग्गज ड़ोले।।

9. विभावना अलंकार - जहाँ कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति हो वहाँ विभावना अलंकार होता है।

उदा. अ. बिनु पद चले सुने बिनु काना।
कर बिनु करम करे विधि नाना।।

10. विशेषोक्ति अलंकार - जहाँ पर कार्य नही हो रहा है वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होता है।

उदा. पानी बिच मीन, मीन पियासी,
मोहि सुनी-सुनी आवे हाँसी।।

पाठ-बोधन

अवतरण : एक

राम भारतीय पुरातन इतिहास के अत्यन्त उज्ज्वल नक्षत्रों में से एक हैं। निस्सन्देह, संहिताओं और ब्राह्मण ग्रन्थों में दशरथ और राम के सम्बन्ध में उल्लेख मिलते हैं। किन्तु रामकथा का सबसे पहले वाल्मीकि ने अपने आदिकाव्य रामायण में ही गान किया है। रामायण के आरम्भ में ही जो नारद-वाल्मीकि संवाद दिया गया है और जो इस महान् महाकाव्य के बीज के रूप में है, उससे यह प्रकट होता है कि वाल्मीकि के मन में पहले से ही आदर्श मानव की कल्पना थी फिर भी उनकी काव्य प्रतिभा ने अपने इस आदर्श को किसी काल्पनिक व्यक्ति का चित्रण करके साकार करने का प्रयत्न नहीं किया; वे ऐसे व्यक्ति की खोज में थे, जिनके जीवन को सत्यनिष्ठा, धैर्य, परोपकार, आत्मसंयम, करूणा आदि गुणों का साक्षात् सजीव रूप माना जा सके। नारद ने वाल्मीकि को यह बताया कि दशरथ राम ही ऐसे नायक हैं और वाल्मीकि ने उन्हें तत्काल स्वीकार कर लिया तथा अपनी रामायण में उन्हें अमर कर दिया है।

1. वाल्मीकिकृत रामायण को आदि - काव्य क्यों कहा गया है?
(a) क्योंकि उससे पहले कोई साहित्यिक काव्य रचना नहीं थी।
(b) क्योंकि उससे पहले के काव्य-ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है।

(c) क्योंकि उससे पहले के उपलब्ध ग्रन्थों में रामायण-जैसे काव्य तत्व नहीं है।
(d) क्योंकि उससे आदर्श महापुरूष पुरूषोत्तम राम की कथा कही गयी है।

2. वाल्मीकि रामायण क्या है?
(a) पुराण (b) दार्शनिक ग्रन्थ
(c) महाकाव्य (d) नीति कथा

3. वाल्मीकि कैसे व्यक्तित्व की खोज में थे?
(a) जो बहुत वीर योद्धा हो।
(b) जो बहुत विद्वान् हो।
(c) जो श्रेष्ठ कुशल प्रशासक हो।
(d) जो सत्य, धैर्य, परोकार, आत्मसंयम, करूणा आदि का सजीव रूप हो।

4. वाल्मीकि के मन में आदर्श मानव की जो कल्पना थी, वह राम के रूप में कैसे साकार हुई?
(a) नारद-द्वारा उन्हें यह बताये जाने पर कि दशरथ राम ही एसे नायक हैं।
(b) वह उनकी काव्य-प्रतिभा का चमत्कार था।
(c) उनकी रामायण के नायक की कल्पना ही वैसी थी।
(d) वे राम को इस रूप में स्वयं जानते थे।

ANSWER							
1	C	2	C	3	D	4	A

अवतरण : दो

आधुनिकीकरण से हर समाज की समाजिक संरचना और मूल्यों में गतिशीलता के नये तत्व उभर कर सामने आते हैं। इन तत्वों के विकास में राष्ट्रीय एकता की प्रक्रिया को बल मिलता है। भारत में अब सामाजिक और सांस्कृतिक आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का पर्याप्त विस्तार हो चुका है। इसे संविधान, लोकतान्त्रिक चुनावों की राजनीति, सामाजिक तथा आर्थिक सुधारों से बल मिला है। इन सभी की शुरूआत समाज की असमानताओं और शोषण को दूर करने के लिए की गयी थी। योजना के जरिये शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, औद्योगिकीरण, आर्थिक समृद्धि, समाज-सुधार तथा वितरणशील न्याय के क्षेत्र में व्यापक प्रयत्न किये गये थे। इन सभी ने भारत में सामाजिक संरचना, मूल्यों तथा जातिपरक प्रथाओं पर गहरा प्रभाव डाला है। जैसे-जैसे व्यावसायिक कार्यो में गति आयी वैसे-वैसे देश में शिक्षा, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण तथा बाज़ार की शक्तियों का विकास हुआ। जाति की अस्मिताओं पर दबाव पड़ने लगा। मज़दूरी की एवज में मुद्रा देने की व्यापक प्रणाली और गाँवों में बाज़ार के प्रवेश ने जजमानी व्यवस्था की आर्थिक भूमिका लगभग समाप्त कर दी। व्यवसायों की वंशानुगत विशेषज्ञता का अर्थव्यवस्था में प्रभाव समाप्त हो गया।

1. आधुनिकीकरण का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(a) सामाजिक संरचना के गतिशीलता में नये तत्व आते हैं।
(b) समाज का आधार बदल जाता है।
(c) समाज का पुराना रूप बिगड़ जाता है।
(d) इनमें से कुछ नहीं होता।

2. भारत में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को किससे बढ़ावा मिला है?
(a) पश्चिमी देशों के सम्पर्क से
(b) संविधान, लोकतान्त्रिक चुनाव, सामाजिक तथा आर्थिक सुधारों से
(c) पुरानी राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन से
(d) इनमें से किसी से नहीं।

3. व्यवसायिक कार्यो से किसका विकास हुआ?
(a) जातिगत भावनाओं का
(b) वर्गगत अस्मिता का
(c) शिक्षा, शहरीकरण तथा औद्योगिकीकरण का
(d) इनमें से किसी का नहीं।

4. मुद्रा देने की प्रणाली का क्या प्रभाव पड़ा?
(a) जजमानी व्यवस्था की आर्थिक भूमिका समाप्त हो गयी।
(b) मज़दूरी समाप्त हो गयी।
(c) अर्थ-व्यवस्था में असन्तुलन समाप्त हो गया।
(d) कोई प्रभाव नहीं हुआ।

ANSWER							
1	A	2	B	3	C	4	A

अतवरण : तीन

बुद्धिवादी युग में आज विद्यार्थी 'अहंवादी' बन गया है। अहं पूर्णतः बुरी चीज़ नहीं कही जा सकती। वह व्यक्तित्व का एक अंग है और एक सीमा तक आवश्यक भी है किन्तु आज का विद्यार्थी अपना महत्व बताकर सम्मान प्राप्त करना चाहता है। जब महत्वाकांक्षी छात्र अपने गुरूजनों से स्नेह, प्रशंसा तथा सम्मान नहीं पाते तब उनका हृदय विद्रोह कर उठता है। यही विद्रोह हड़ताल और संघर्ष के रूप में प्रकट होता है। माता-पिता के उचित मार्गदर्शन के अभाव में बच्चे उत्तम संस्कार ग्रहण नहीं कर पाते। विद्यालय या महाविद्यालयों में प्रवेश करके ये मर्यादाहीन और उच्छृंखल बन जाते है।

1. आज के विद्यार्थी का अंहवाद :-
(a) पूर्णतः बुरी चीज़ नहीं है। (b) उसके व्यक्तित्व का अंग है।
(c) एक सीमा तक आवश्यक है (d) बुद्धिवादी युग की देन है।

2. विद्यार्थी महत्वाकाक्षीं होने के कारण :-
(a) सम्मान प्राप्त करना चाहते है
(b) गुरूजन का स्नेह प्राप्त करना चाहते हैं।
(c) अपना महत्व रखते हैं।
(d) प्रशंसित होना चाहते हैं।

3. छात्र क्यों विद्रोह कर सकते हैं?
(a) सम्मान न प्राप्त कर पाने के कारण
(b) महत्व न स्वीकृत होने के कारण
(c) महत्वाकांक्षी होने के कारण
(d) महत्वाकांक्षी से प्रशंसा न मिलने के कारण

4. छात्रों का विद्रोह प्रकट होता है :-
(a) अहंवाद से (b) हड़ताल से
(c) उच्छृंखल होने से (d) पढ़ाई छोड़ने से

ANSWER							
1	A	2	A	3	A	4	B

अवतरण - चार

आधुनिकता एक सार्वभौमिक समस्या है। ध्रुवीकरण के रहते भी इस समस्या की विलक्षण प्रकृति ने सम्पूर्ण विश्व की चेता को परस्पर संघातों के माध्यम से समस्या का एक सम्पुञ्ज भेंट किया है। आधुनिकता, इस स्तर पर सार्वभौमिक सत्य के चक्र से जुड़ी हुई एक विविध विचार - पद्धति है, जो चक्र के घुमाव में केवल 'घुमाव' के स्तर पर लक्षित की जा सकती है। यही कारण है कि इसकी अलग-अलग परतें खोल कर दिखला पाना स्वतः एक जटिल समस्या है। सार्वभौमिक सत्य के चक्र के घुमाव में लक्षित आधुनिकता की अपनी परिस्थितियाँ और सन्दर्भ हैं, जिनके अवलोकन से समस्या का बिम्ब सहजानुभव का विषय बन सकता है।

चेतना के विकास-क्रम की पृष्ठाभूमि तैयार करनेवाली अन्तर्विस्फोटक चेतना-संघर्ष की प्रक्रिया, आधुनिकता मूल्यों की बद्ध-प्रणाली का विरोधी गाण्डीव बन चुकी है। अपनी लैंगिक शब्द-सत्ता में स्त्रीलिंग का बोध करते हुए भी वह अपनी प्रकृति में

अर्द्धनारीश्वर से अखण्डता लिये हुए है। चेतन संघर्ष की प्रक्रिया का ही परिणाम है कि शताब्दियों से स्वीकार किया जा रहा है 'परम मूल्य', जिससे दूसरे अथाह मूल्यों की निःसृति सम्भव मानी जाती थी, आज स्वयं में एक प्रश्न-चिह्न है। आधुनिकता की परिस्थिति की शुरूआत का यह प्राथमिक सन्दर्भ माना जा सकता है। यह अलग बात है कि आधुनिकता ने 'परम मूल्य' को पूर्णतः खण्डित नहीं किया लेकिन जिस प्रकार अपने विद्रोहशील चेतन के प्रत्यय से जुड़कर यह प्रश्नचिह्न का अस्तित्व खड़ा कर सकी है, वह शाश्वत सत्य की सार्थकताओं और निरर्थकताओं अथवा क्षमताओं और अक्षमताओं को अभूतपूर्व रूप में उभारता है।

1. आधुनिकता कैसी समस्या है?
(a) मनोवैज्ञानिक (b) शारीरिक
(c) आर्थिक (d) सार्वभौमिक

2. आधुनिकता किसके चक्र में जुड़ी हुई विविधा - विचार वाली पद्धति है?
(a) ईश्वर के (b) समाज के
(c) सार्वभौमिक सत्व के (d) घुमाव के

3. आधुनिकता ने किसे पूर्णतः खण्डित नहीं किया?
(a) जीवन-मूल्य को (b) परम मूल्य को
(c) समाज को (d) चेतना को

4. किस प्रक्रिया के कारण परम मूल्य, प्रश्न चिह्नमात्र बन गया है?
(a) आधुनिकता (b) ईश्वरीय विधान
(c) चेतन संघर्ष (d) निःसृति

ANSWER							
1	D	2	C	3	B	4	C

अतवरण : पाँच

हमारे संविधान ने संसद् को बहुत महत्त्वपूर्ण अधिकार सौंपे हैं क्योंकि संसद् में हमारे चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं। यद्यपि राष्ट्रपति का पद महान् सत्ता और गौरव का है तथापि उसे मन्त्रिमण्डल की सलाह पर काम करना पड़ता है। अतः यह सरकार का सांविधानिक प्रमुख है लेकिन वास्तविक शक्ति जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के पास होती है। राष्ट्रपति लोकसभा को भंग कर सकता है लेकिन प्रधानमन्त्री की सलाह के बिना वह ऐसा नहीं कर सकता। वह प्रधानमन्त्री उसी व्यक्ति को बना सकता है, जो लोकसभा में बहुमत का समर्थन प्राप्त न हो तो सरकार को चला पाना असम्भव हो जाएगा। वह आपातकालीन स्थिति की घोषणा तभी करेगा जब प्रधानमन्त्री ऐसा करने की सलाह दे। अतः सांविधानिक दृष्टि से उसकी वही स्थिति है, जो ग्रेट ब्रिटेन के सम्राट की है।

1. ब्रिटिश साम्राज्य ने अपनी नाविक शक्ति क्यों इतनी प्रबल बना ली?
(a) कोई शत्रु इसे हरा न सके
(b) कोई लन्दन पर आक्रमण न कर सके
(c) कोई इसके जहाजों का आना-जाना न रोक सके
(d) लन्दन शहर को कोई क्षति न पहुंच सके।

2. मस्तूलों का जंगल कहने से लेखक का क्या अभिप्राय है?
(a) मस्तूलों की पंक्तियाँ (b) असंख्य मस्तूल
(c) मस्तूलों का आकर्षक दृश्य (d) मस्तूलों की बहार

3. 'त्राहि-त्राहि मच जाने' का क्या अर्थ है?
(a) हल्ला मच जाना (b) हल्ला-गुल्ला आरम्भ होना
(c) शोर-शराबा होना (d) हाहाकार मच जाना

4. 'टक्कर लेने' का अर्थ है
(a) तुलना करना (b) मुकाबला करना
(c) टकराना (d) लोहा मानना

5. लन्दन बन्दरगाह कहाँ पर स्थित है?
(a) समुद्र तट पर (b) काफी गहरे पानी पर
(c) जहाजों के जगंल में (d) नदी के तट पर

ANSWER									
1	C	2	B	3	D	4	B	5	D

अनुच्छेद में रिक्त स्थानों की पूर्ति

निर्देश : नीचे दिए गए गद्यांशों में से कुछ शब्द निकाल दिए गए हैं। ये शब्द हर रिक्त स्थान के लिए दिए गए विकल्पों में शामिल हैं। गद्यांशों को पढ़िए और उनका विषय समझिए। तब दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनिए तदनुसार सही उत्तर दीजिए।

गद्यांश 1

यह सत्य है कि चुनाव के समय जब .....(1).....राजनीतिक दलों द्वारा प्रस्तुत .....(2).....में से किसी एक को चुनना होता है तब हमारी स्वतन्त्रता .....(3)..... हो जाती है। हो सकता है कि हम उनमें से किसी को भी .....(4).....न समझते हों और उनके अतिरिक्त किसी .....(5).....योग्य व्यक्ति पर हमारी दृष्टि हो किन्तु दलों का चुनाव-अभियान ऐसे जोरों से चलता है और ..... (6).....प्रत्याशी पर इतना धन .....(7).....किया जाता है निर्दलीय प्रत्याशी को भी अपनी .....(8).....के लिए किसी न किसी दल का .....(9).....लेना पड़ता है। इस प्रकार आधुनिक युग की प्रजातांत्रीय पद्धति में राजनीतिक दलों का ऐसा महत्व ..... (10).....हो गया है कि जो व्यक्ति किसी दल में न हो उसका मानो राजनीतिक अस्तित्व ही नहीं रहता।

1. (क) भिन्न (ख) अलग
(ग) विभिन्न (घ) विच्छेद

2. (क) अभ्यर्थियों (ख) प्रत्याशियों
(ग) आवेदकों (घ) प्रार्थियों

3. (क) संकुचित (ख) एकत्रित
(ग) सीमित (घ) कुंठित

4. (क) उपयुक्त (ख) सही
(ग) अपेक्षाकृत (घ) ठीक

5. (क) अन्य (ख) अनन्य
(ग) भिन्न (घ) पृथक

6. (क) सर्वांगीण (ख) सर्वथा
(ग) सभी (घ) प्रत्येक

7. (क) अपव्यय (ख) व्यय
(ग) मितव्यय (घ) अल्पव्यय

8. (क) सिद्धि (ख) उच्चता
(ग) विजय (घ) उच्चांकाक्षा

9. (क) सहायता (ख) समर्थन
(ग) सहयोग (घ) साथ

10. (क) सिद्ध (ख) संलग्न
(ग) वर्तमान (घ) स्थापित

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ग	ख	ग	क	क	घ	ख	ग	ख	घ

गद्यांश 2

कई दिन यहाँ रहने पर मुझे उस साध्वी की .....(1).....के बारे में बहुत कुछ मालूम हो गया। प्रातः काल उसके आश्रम से निरन्तर आती हुई तुलसीदास के भजनों की स्वर लहरी मेरी सोई हुई आत्मा को .....(2).....कर देती थी। कितने दिनों से मैं रेलम-पेल व भागमभाग से .....(3).....वातावरण में आने की बात सोच रहा था। इस युग में भविष्य के प्रति .....(4).....हमें जल्दी निर्णय लेने से रोकती रहती है। फिर भी भीड़ से दूर निकलने

की बलवती .....(5).....किसके मन में रह-रह कर नहीं जाग उठती है?

1. (क) परिचर्या (ख) दिनचर्या
   (ग) परिचर्चा (घ) परिक्रमा
2. (क) जागृत (ख) उदास
   (ग) चंचल (घ) विचलित
3. (क) प्रभावित (ख) दूषित
   (ग) संलग्न (घ) अचेत
4. (क) आशा (ख) हताशा
   (ग) आशंका (घ) निश्चिन्तता
5. (क) उत्सुकता (ख) इच्छा
   (ग) लालसा (घ) तृष्णा

1	2	3	4	5
ख	क	घ	ग	ख

गद्यांश 3

फल तथा सब्जियों में स्वास्थ्य .....(1).....विटामिन और खनिज लवण पाये जाते हैं। इनके अतितिरक्त इनमें पर्याप्त मात्रा में कार्बोज और कुछ .....(2).....में प्रोटीन भी मिलता है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रतिदिन प्रत्येक व्यक्ति को 280-300 ग्राम सब्जियों की आवश्यकता होती है लेकिन हम बहुत कम सब्जियाँ खाते हैं। ताजे फल तथा सब्जियाँ हमेशा .....(3).....नहीं होते हैं इसलिये यदि इन्हें सुखाकर रख लिया जाये तो यह हर समय उपलब्ध रह सकते हैं। भारत में फल तथा सब्जियों की .....(4).....का तरीका ... .(5).....देशों से भिन्न है। हमारे यहाँ इनकी जितनी भी पैदावार होती है वह अधिकतर सभी बाजार में भेज दी जाती है और यह काफी मात्रा में सड़कर .....(6).....भी हो जाती है।

1. (क) संक्रामक (ख) संरक्षण
   (ग) सम्बन्ध (घ) क्रियाशील
2. (क) अनुपात (ख) परिमाण
   (ग) संख्या (घ) मात्रा
3. (क) प्रयुक्त (ख) रूचिकर
   (ग) उपलब्ध (घ) लाभदायक
4. (क) खपत (ख) लागत
   (ग) उपयोग (घ) इस्तेमाल
5. (क) अन्य (ख) उन्नत
   (ग) उन्नतिशील (घ) उच्च
6. (क) ध्वस्त (ख) नष्ट
   (ग) व्यर्थ (घ) अनुपयोगी

1	2	3	4	5	6
ख	घ	ग	क	ख	ख

गद्यांश 4

भारतीय राष्ट्रीयता की अभिवृद्धि के लिये अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का प्रस्ताव सर्वप्रथम बंगला विद्वानों ने रखा था। बंगला के महानुभावों ने यह प्रस्ताव इसलिए नहीं किया कि उस समय बंगला भाषा उन्नत नहीं थी। उस समय भी बंगला साहित्य इतना .....(1).....हो चुका था कि उसके मन्दिर का ..... (2).....अन्य भाषाओं के मन्दिरों के मध्य निजी .....(3)..... .लिए हुये चमक रहा था। बंगीय .....(4).....ने हिन्दी भाषा को इतना महत्व इसकी .....(5).....विशेषताओं के कारण नहीं दिया था। अपने .....(6).....को दबाकर अपनी भाषिक-साहित्यिक श्रेष्ठता को .....(7)..... करके उन्होंने हिन्दी का इसिलये ....(8).....किया था क्योंकि देश में इस भाषा के .....(9)..... .की संख्या अधिक होने के कारण इसे .....(10).....बनाने का कार्य उनकी दृष्टि में अपेक्षाकृत अल्प श्रम-साध्य था। कितने महान् थे वे लोग, जिनके हृदय में राष्ट्रीयता के इतने श्रेष्ठ भाव थे और जो राष्ट्र पुरूष के महाव्यक्तित्व की स्थापना करने के लिए अपने अहंभाव को दबा लेते थे। हम सभी उनके ऋणी हैं।

1. (क) विपन्न (ख) विशद
   (ग) समृद्ध (घ) संवृत
2. (क) कंगूरा (ख) कंचन
   (ग) कुलिश (घ) कलश
3. (क) वैशिष्ट्य (ख) वैविध्य
   (ग) वैचित्र्य (घ) विशेष्य
4. (क) मुनीश्वरों (ख) महिषियों
   (ग) मनीषियों (घ) मनीषाओं
5. (क) वैचारिक (ख) साहित्यिक
   (ग) सांस्कृतिक (घ) आलंकारिक
6. (क) व्यक्तित्व (ख) स्वामित्व
   (ग) स्वत्व (घ) चरित्र
7. (क) विज्ञापित (ख) विश्रुत
   (ग) विस्मित (घ) विस्मृत
8. (क) विवर्ण (ख) वारण
   (ग) वरूण (घ) वरण
9. (क) शुभचिन्तकों (ख) प्रशंसकों
   (ग) प्रयोक्ताओं (घ) अध्येताओं
10. (क) राजभाषा (ख) राष्ट्रभाषा
    (ग) उप भाषा (घ) मानक भाषा

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ग	घ	क	ग	ख	ग	घ	घ	ग	ख

गद्यांश 5

यदि विचार-सामग्री निबन्ध की आत्मा है तो भाषा शैली निबन्ध का शरीर है। एक अच्छे निबन्ध में .....(1).....स्पष्ट तथा सुबोध भाषा का .....(2).....करना चाहिये। एक ..... (3).....निबन्ध की भाषा का सबसे बड़ा गुण यही है कि वह इतनी .....(4).....हो कि पाठक का मन .....(5)..... .....ही अपनी ओर आकर्षित कर ले। भाषा को सशक्त बनाने के लिये .....(6).....मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया जा सकता हैं। लक्षणा तथा .....(7).....नामक शब्द शक्तियों तथा विभिन्न अलंकारों के द्वारा भी भाषा में .....(8)... .....का समावेश किया जा सकता है। लेकिन .....(9)..... .में अलंकारों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि की .....(10)..... .भी नहीं होनी चाहिए। ऐसा करने से निबन्ध में अस्वाभाविकता का समावेश हो जाता है और उसका सारा लालित्य नष्ट हो जाता है।

1. (क) क्लिष्ट (ख) कृत्रिम
   (ग) शुद्ध (घ) अपरिमार्जित
2. (क) आयोग (ख) प्रयोग
   (ग) उपयोग (घ) योग
3. (क) श्रेष्ठ (ख) वरिष्ठ
   (ग) गरिष्ठ (घ) विशिष्ट
4. (क) अशक्त (ख) सशक्त
   (ग) निकृष्ट (घ) आसक्त
5. (क) सायास (ख) अभ्यास
   (ग) अनायास (घ) विपर्यास
6. (क) यथाशक्ति (ख) यथास्थान
   (ग) यथावत् (घ) यथापूर्व
7. (क) व्यंजना (ख) अभिव्यंजना
   (ग) रंजना (घ) अतिरंजना
8. (क) औदार्य (ख) व्यवहार्य
   (ग) सौजन्य (घ) सौन्दर्य

9. (क) प्रबन्ध (ख) निबन्ध
(ग) पदबन्ध (घ) अनुबन्ध
10. (क) अतिशयता (ख) प्रगाढ़ता
(ग) सघनता (घ) प्रबलता

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
घ	ख	क	ख	ग	ख	क	घ	ख	क

गद्यांश 6

भारतीय नृत्यकला की भी एक समृद्ध शास्त्रीय .....(1)..... रही है। इसमें भावनाओं की अभिव्यक्ति की जाती है, कोई कथा कही जाती है या कोई नाटिका प्रस्तुत की जाती है। भारतीय नृत्यकला के विषय में बहुत कुछ .....(2).....और मध्यकालीन मन्दिरों की स्थापत्य कला से जाना जा सकता है। नटराज के रूप में शिव की जो मुद्रा .....(3).....है इस बात का .....(4).....है कि भारतीय जनता के जीवन पर नृत्यकला का कितना गहरा ..... (5).....रहा है। इसे महाराजाओं, राजाओं और साधारण जनता, सबका .....(6).....प्राप्त हुआ है। सदियों से कालक्रम मं जिन शास्त्रीय .....(7).....का विकास हुआ है, उनमें कुछ हैं कत्थकली, कुचीपुड़ी, भरतनाट्यम कथक और मणिपुरी। ये सभी शैलियाँ एक लम्बे काल में .....(8).....हुई हैं। शास्त्रीय संगीत-नृत्य और लोक संगीत नृत्य, दोनों की .....(9).....और दोनों की समृद्धि भारत की सांस्कृतिक .....(10).....का एक महत्वपूर्ण अंग हैं।

1. (क) रीति (ख) परम्परा
(ग) इतिहास (घ) कथा
2. (क) प्राचीन (ख) पुरातन
(ग) खण्डित (घ) अर्वाचीन
3. (क) प्रसारित (ख) वर्णित
(ग) प्रचलित (घ) प्रस्थापित
4. (क) चिह्न (ख) निशान
(ग) प्रतीक (घ) प्राकृत
5. (क) प्रभाव (ख) प्रसार
(ग) प्रवाह (घ) प्रहार
6. (क) अन्वेषण (ख) संरक्षण
(ग) समर्थन (घ) मत
7. (क) सभ्यताओं (ख) मान्यताओं
(ग) धारणों (घ) शैलियों
8. (क) प्रस्फुटित (ख) उदित
(ग) विकसित (घ) निकासित
9. (क) विविधता (ख) विस्मयता
(ग) विभूषिता (घ) विस्मिता
10. (क) कोष (ख) विरासत
(ग) संग्रह (घ) संहिता

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ख	क	ग	ग	क	ख	घ	ग	क	ख

गद्यांश 7

प्रायः घर में जरा-सी असावधानी के कारण बड़ी - बड़ी ..... (1).....हो जाती हैं। कई बार तो ये दुर्घटनायें बहुत .....(2)..... ..रूप धारण कर लेती हैं तथा कई बार इनके कारण मृत्यु तक हो जाती है। .....(3).....ये दुर्घटनाएँ रसोईघर में सुरक्षा .....(4).. .....नियमों का पालन न करने के कारण होती हैं। .....(5)..... अपना अधिक समय रसोईघर में व्यतीत करती है तथा उसके साथ परिवार के अन्य .....(6)..... जैसे छोटे बच्चे भी काफी समय रसोईघर में रहते हैं। अतः रसोईघर में सावधानी बरतना अत्यन्त आवश्यक है। रसोईघर को .....(7)..... बनाने के लिये उसमें सभी प्रकार की उत्तम व्यवस्था होनी चाहिऐ।

1. (क) आशंकाएँ (ख) दुर्घटनाएँ
(ग) दुष्परिणाम (घ) विकार
2. (क) विकट (ख) कठिन
(ग) कंटक (घ) कष्टदायक
3. (क) बहुधा (ख) प्रायः
(ग) अधिकार (घ) अधिकतम
4. (क) सम्बन्धी (ख) उपयोगी
(ग) हेतु (घ) ग्रस्त
5. (क) कर्णधारिणी (ख) औरत
(ग) महिला (घ) गृहिणी
6. (क) जन (ख) सदस्य
(ग) लोग (घ) व्यक्ति
7. (क) सुविधाजनक (ख) सुरक्षित
(ग) सुचारू (घ) सुव्यवस्थित

1	2	3	4	5	6	7
ख	क	ग	क	घ	ख	ख

गद्यांश 8

भारतीय सेना को सर्वाधिक प्रगतिशील सेवाएँ माना जाता है। इसके .....(1).....इस क्षेत्र में उन्नति, विकास और बढ़ोत्तरी के साथ व्यक्ति के .....(2).....के अनुसार पुरस्कार प्राप्त करने के बहुत से सुनहरे अवसर मिलते हैं। गैर-स्नातकों के लिए इसमें एक अधिकारी के पद पर सीधे .....(3).....होने को अद्वितीय सुविधा भी पेश की जाती है। इसके साथ ही .....(4).....स्तर की सेवाओं में भी .....(5).....के असंख्य रास्ते खुले हुए हैं।

1. (क) अतिरिक्त (ख) ऊपर
(ग) बावजूद (घ) अपेक्षित
2. (क) शक्ति (ख) सामर्थ्य
(ग) अपेक्षा (घ) लक्ष्य
3. (क) आसीन (ख) प्रस्थापित
(ग) कार्यरत (घ) निर्वाचित
4. (क) अधीनस्थ (ख) निम्न
(ग) उपेक्षित (घ) अवांछित
5. (क) आयुक्ति (ख) नियुक्ति
(ग) प्रगति (घ) चुनाव

1	2	3	4	5
क	ख	ख	क	ग

गद्यांश 9

अशोक जैसे शासकों ने बौद्ध धर्म को .....(1)..... किया और इसके सिद्धान्तों का पालन करते हुए सहनशीलता और उदारता की नीति को अपनाया। उनके शासन के दौरान ऐसे अनेक उपाय किए, गए, जो मुख्यतः जनता के .....(2).....से संबंधित थे। अपने एक शिलालेख में अशोक ने .....(3).....किया था कि सभी मेरे बच्चें हैं। जैसा कि मैं अपने बच्चों के बारे में चाहता हूँ कि मैं उनके लिए इस और अगले संसार में सभी कल्याण और सुख जुटा सकूँ, वैसा ही मैं सभी लोगों के लिए चाहता हूँ। जनता के कल्याण के लिए अशोक .....(4).....यात्राएँ करते थे। ऐसा कहा जाता है कि अशोक के शासन के दौरान भारत के विभिन्न लोगों में राजनीतिक एकता की भावना .....(5)..... हुई थी।

1. (क) स्वीकार (ख) अंगीकार
(ग) धारण (घ) पालन
2. (क) कल्याण (ख) निर्वाण
(ग) निर्माण (घ) विकास

3. (क) घोषणा (ख) कथन
(ग) उद्घोष (घ) प्रस्ताव
4. (क) नियमित (ख) बहुतेरी
(ग) नित्यप्रति (घ) निर्निमेष
5. (क) उदित (ख) उदात्त
(ग) अनुदात्त (घ) पारित

1	2	3	4	5
क	ख	ग	क	ख

पद्यांश

(1)

आज क्यों तेरी वीणा मौन
शिथिल शिथिल तन थकित हुये कर
स्पन्दन भी भुला जाता डर
मधुर कसक सा आज हृदय में
आन समाया कौन?
झुकती आती पहलें निश्चल
चित्रित निद्रित से तारक चल
सोता पारावार दृगों में
भर-भर लाया कौन?
आज क्यों तेरी वीणा मौन?

1. इस कविता के रचियता हैं-
(क) सुमित्रानंदन पंत (ख) सुभद्रा कुमारी चौहान
(ग) महादेवी वर्मा (घ) मीराबाई
2. 'नीरजा' से उद्धत इस कविता का आशय है-
(क) न जाने आज क्यों उनकी हृदय तंत्री बज नहीं रही
(ख) दुःखों से आपूरिक हृदय तथा नेत्रों के अश्रुमय होने के बावजूद वीणा मौन क्यों हैं?
(ग) विरह व्यथा की कसक तन-मन को व्याकुल बना रही है, फिर भी आहें नहीं भरी जातीं, रहस्य प्रकट करने में न जाने मैं क्यों असमर्थ हूँ।
(घ) विरह व्यथा की कथा अकथनीय है
3. इस कविता का उपयुक्त शीर्षक होगा-
(क) सुधि बन छाया कौन (ख) आज क्यों तेरी वीणा मौन
(ग) हृदय में आन समाया कौन (घ) मौन वीणा का रहस्य
4. कवयित्री के बारे में यह निर्विवाद सत्य है कि वह -
(क) सर्वोत्कृष्ट कवयित्री थी (ख) साधना में दूसरी मीरा थी
(ग) छायावादीत्रयी में न होकर अपनी विशिष्ट पहचान रखती थी
(घ) सुप्रसिद्ध छायावादी कवयित्री थी
5. भाव व्यंजना की दृष्टि से यह कविता -
(क) दुर्बोध रचना है (ख) श्रेष्ठ रचनाओं में से एक है
(ग) आरम्भिक रचना है
(घ) प्रकृति चित्रण की दृष्टि से बेजोड़ है।

(2)

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की
देख मराठे पुलकित होते उसके तलवारों के वार
नकली युद्ध व्यूह की रचना और खेलता खूब शिकार
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खेलवार
महाराष्ट्र कुल देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

1. उक्त पद्यांश का सही शीर्षक हो सकता है-
(क) झाँसी की रानी (ख) 1857 का गदर
(ग) अंग्रेजों का आक्रमण (घ) महाराष्ट्र कुल देवी
2. इस कविता की कवयित्री का नाम है
(क) महादेवी वर्मा (ख) सुभद्रा कुमारी चौहान
(ग) तारा पाण्डेय (घ) मीराबाई
3. इस कविता में प्रयोग किया गया रस है-
(क) भक्ति (ख) करूण
(ग) शृंगार (घ) वीर
4. कवयित्री की अधिकांश रचनाएँ-
(क) सामाजिक हैं (ख) वात्सल्यपूर्ण है
(ग) देशभक्तिपूर्ण हैं (घ) धर्मित हैं
5. 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' में मरदानी शब्द का अर्थ है-
(क) वीरांगना (ख) पुरूषों जैसी
(ग) पुरूषत्ववान (घ) लड़ाकू

(3)

अस्ताचल रवि, जल छल-छल छवि
स्तब्ध विश्वकवि, जीवन उन्मन
मन्द पवन बहती सुधि रह रह
परिमल की कह कथा पुरातन
दूर नदी पर नौका सुन्दर
दीखी मृदु तर बहती ज्यों स्वर
वहाँ स्नेह की प्रतुनी देह की
बिना गेह की बैठी नूतन
ऊपर शोभित मेघ सत्र सित
नीचे अमित नील जल दोलित
ध्यान-नयन मन चिन्त्य-प्राण-धन
किया शेष रवि ने कर अर्पण

1. इस कविता का सार्थक शीर्षक हो सकता है -
(क) दिवस का अवसान (ख) दिवा-गमन
(ग) अस्ताचल रवि (घ) रवि का अर्पण
2. इस कविता में छायावादी कवि निराला ने -
(क) प्रकृति का मनोरम चित्रण किया है
(ख) अस्तगत सूर्य और उसकी प्रतीक्षा में रत संध्या का वर्णन किया है।
(ग) मादक भावनाओं की अभिव्यक्ति की है
(घ) सूर्यास्त का चित्रण किया है।
3. इस पद्यांश में प्रयोग किया गया शब्द 'प्रतनु' अर्थ रखता है।
(क) प्रमुदित (ख) क्षीण
(ग) मृत (घ) प्रेत
4. पण्डित निराला हिन्दी के -
(क) श्रेष्ठ साहित्यकार थे (ख) लेखक तथा कवि दोनों थे
(ग) समाजवादी कवि थे
(घ) प्रख्यात तथा सर्वोत्कृष्ट छायावादी कवि थे
5. उपर्युक्त पद्य में प्रयुक्त 'गेह' शब्द का प्रयोग अर्थ रखता है?
(क) गेहूँ (ख) एक जीव
(ग) घर (घ) द्वार

पल्लवन या विस्तारण

पल्लवन का अर्थ है विशदीकरण अर्थात् किसी सूत्र या विचार को विस्तार के साथ प्रस्तुत करना। पल्लवन शब्द संस्कृत की पल् धातु में क्विप् प्रत्यय और लृ में अन प्रत्यय लगाकर दोनों के योग से बनाया गया है। पल्लवन को अंग्रेजी में Amplification कहते हैं।

पल्लवन क्या है?

संक्षेपण से उलटी लेखन-प्रक्रिया का नाम पल्लवन है। संक्षेपण में एक बड़ी और लंबी-सी रचना को छोटा (संक्षिप्त) करना होता है, तो इसके ठीक विपरीत पल्लवन में एक संक्षिप्त-सी रचना या उक्ति को विस्तार से बताना पड़ता है। पल्लवन का अर्थ है फलना-फूलना, पनपना। पेड़ - पौधे कैसे फलते-फूलते या पनपते हैं? एक बीज में सब कुछ रहता है- रूप, रस, गंध आदि। बस, उसे रोपने की आवश्यकता है, उपयुक्त हवा, पानी, धूप लगने से वह बढ़ता है, पनपता है, फलता-फूलता है। उस बीज में निहित सब गुण बाहर आ जाते हैं। ठीक इसी प्रकार एक छोटे सूत्र, सूक्त, फार्मूला या सुभाषित में इतने गहन भाव या विचार निहित रहते हैं कि वे आसानी से समझ में नहीं आते। जब आप चिंतन-मनन द्वारा अपना ध्यान लगाते हैं तो उनके अर्थ खुलते हैं पौधे के पत्तों और फल-फूलों की तरह, और फिर फूलों की पंखुड़ियों की तरह अनेक सहचर भाव तथा विचार आने लगते हैं। प्रायः सिद्धहस्त लेखक और मनीषी वक्ता कम-से-कम शब्दों में ऐसी गूढ़ बातें कह जाते हैं जो उस भाषा की सूक्तियां बन जाती है। प्रायः कवि जैसे रहीम अपने दोहों में, कबीर अपनी साखियों और सबदों में, तुलसी अपनी चौपाइयों या दूसरे छंदों में, कुछ अन्य लेखक अपनी कृतियों में, कोई महापुरुष अपने प्रवचनों या भाषणों में एक-आध वाक्य में इतनी बड़ी बात कह जाते हैं कि उसकी व्याख्या करने की गुंजायश रहती है- उस उक्ति के भाव को स्पष्ट करना पड़ता है। इसी प्रक्रिया को पल्लव कहते है, अर्थात् किसी सूत्रबद्ध और सुगठित भाव या विचार को विस्तार से प्रस्तुत करना।

इस प्रकार पल्लवित गद्यांश एक छोटा सा निबंध हो जाता है।

पल्लवन-लेखन में यह परीक्षण किया जाता है कि परीक्षार्थी किसी विशिष्ट उक्ति को अच्छी तरह समझ पाया है या नहीं और यदि समझ पाया हो तो वह उसका स्पष्टीकरण अच्छी शुद्ध हिन्दी में कर सका है या नहीं।

पल्लवन-लेखन की विधि

1. दिये गए वाक्य सुभाषित को अच्छी तरह पढ़िए और उस पर चिंतन - मनन कीजिए ताकि उसका अर्थ और अभिप्राय पूरी तरह से समझ में आ जाए।
2. सोचिए कि इस उक्ति के अंतर्गत क्या-क्या विचार या भाव आ गए हैं और आपने मन में इसके पक्ष में क्या-क्या विचार प्रस्फुटित होते हैं। क्या आप इस मूल कथन की पुष्टि में कोई उदाहरण , दृष्टान्त या प्रमाण दे सकते हैं?
3. विस्तार उसी बात का होना चाहिए जो मूल में हों; जोड़ना उतना है जो निश्चित रूप से उसी विषय के अनुकूल हो।
4. आप यह समझ लीजिए कि मूल उक्ति किसी लंबी-चौड़ी बात का निष्कर्ष स्वरूप है। सोचिए कि विचारों के किस क्रम से यह बात अंत में कही गई होगी।
5. इसके बाद लिखना शुरू कर दें। आपका लेख कितना बड़ा हो, इस बारे में कोई नियम नहीं है। एक पैराग्राफ भी हो सकता है, दो-तीन भी। आप अलग-अलग छोटे-छोटे पैराग्राफ लिखिए और देखते जाइए कि मूल की सब बातें आ गई हैं। यदि परीक्षक कहे कि इतने शब्दों में पल्लवन करें तो इस सीमा-निर्धारण का ध्यान रहे। यदि कोई निर्देश न हो तो तीन-साढ़े तीन सौ शब्द काफी समझे जाएं।
6. आप अपने लेख की पुष्टि में ऐसे उद्धरण भी दे सकते हैं जिनकी संगति उस विषय से निश्चित हो।
7. अप्रासंगित बातें मत उठाएं, उक्ति की आलोचना या टीका-टिप्पणी या विरोध न करें।
8. मैं और हम का प्रयोग भूलकर भी न करें। अन्य पुरूष में बात करें।
9. भाषा सरल, शुद्ध और स्पष्ट होनी चाहिए। अलंकृत भाषा से बचें। छोटे-छोटे वाक्य अच्छे होते हैं।
10. अपना लेख एक बार दोहरा लें। कोई शब्द, कोई अक्षर या मात्रा या विराम-चिन्ह छूट गये हों तो ठीक कर लें।
11. लेख में कोई विचार, वाक्य या वाक्यांश दोहराया न जाए।
12. परीक्षा से पहले घर पर अभ्यास करते रहिए तो आपको कोई कठिनाई नहीं होगी। निर्धारित समय से पहले आप अपना काम कर लेंगे।

पल्लवन

पल्लवन की विशेषताएँ :-

1. पल्लवन, लोकोक्ति, मुहावरा अथवा महापुरूषों के कथन या सार का किया जा सकता है।
2. पल्लवन में प्रत्यक्ष कथन तथा पुनरावृत्ति के लिए कोई स्थान नहीं होता।
3. पल्लवन में निवंधात्मकता के गुण होते हैं।
4. कथन में छिपे हुये प्रमुख और गौण विचार समझने के उपरान्त ही कथन का विस्तार किया जाता है।
5. पल्लवन व्यास, शैली में (विस्तार शैली) में लिखा जाता है।
6. पल्लवन की भाषा कथन के अनुकूल होनी चाहिए।
7. पल्लवन उत्तम व मध्यम पुरूष की अपेक्षा अन्य पुरूष में करना चाहिए।
8. पल्लवन की भाषा सरल, सहज व सुगम होनी चाहिए।
9. पल्लवन करते समय कथन की मूल भावना से नहीं भटकना चाहिए।
10. तथा विचारों में क्रम बद्धता होनी चाहिए।

संक्षेपण

संक्षेपण या क्षार लेखन किसी वितारित लेख को छोटा करने की प्रक्रिया है अर्थात् विस्तृत लेख को संक्षेप में लिखने की प्रक्रिया का नाम संक्षेपण है।

दिये गये अवतरण को एक तिहाई अर्थात् (1/3) में प्रयुक्त करना संक्षेपण कहलाता है। दिये गये अवतरण को 1/2 में प्रस्तुत करना सारांश तथा 1/5 में प्रस्तुत करना टिप्पणी कहलाता है।

संक्षपण का उद्धेश्य है कि मुख्य विचारों की और ध्यान आकर्षित करना अर्थात् प्रमुख बाते ही कहना तथा समय की बचत अनावश्यक बाते न करना न लिखना।

संक्षेप का महत्व प्रशासकीय कार्यालयों में प्रारूप लेखन में सबसे अधिक होता है।

संक्षेपण करने की विधिः-

1. दिये गये अवतरण को जब तक पढ़िए तब तक कि उसका केन्द्रीय भाव स्पष्ट न हो जाए।
2. केन्द्रीय भाव स्पष्ट होते ही उससे सम्बन्धित प्रमुख विचारों को रेंखाकित कर लीजिए।
3. इन रेखांकित वाक्यों को उत्तरपुस्तिका के अंतिम पृष्ठ पर रफ कार्य के लिए उत्तर लीजिए यह ध्यान रहे कि न कोई वाक्य छूटे और न कोई कम
4. दो वाक्यों को एक वाक्य या मिश्र वाक्य बनाकर अनेक शब्दों को एक शब्द बनाकर पुनः लिखिए।
5. पुनः लिखते समय अनावश्यक शब्द, उदाहरण दृष्टान्त मुहावरे व कहावत हटा देना चाहिए।
6. संक्षेपण अन्य पुरूष में होना चाहिए। भाषा स्वयं की हो लेकिन विचार लेख के ही होने चाहिए।
7. शब्द गणना कीजिए आवश्यकतानुसार कम ज्यादा कीजिए उचित शीषर्क कीजिए शीषर्क छोटे से छोटा होना चाहिए।

8. शब्द संख्या गिनिए और शीर्षक के पास या अन्त में कोष्ठक में शब्द संख्या लिखिए।

संक्षेपण की विशेषताएँ :-

1. संक्षेपण सम्पूर्ण अनुच्छेद का एक तिहाई होना चाहिए।
2. संक्षेपण करते समय अनुच्छेद का सार संक्षेपण में निहित रहना चाहिए।
3. संक्षेपण की भाषा सरल तथा व्याकरण के जटिल नियमों से मुक्त रहनी चाहिए अर्थात् संक्षेपण स्पष्ट होना चाहिए।
4. संक्षेपण करते समय भाषा की शुद्धता और प्रवाह बना रहना चाहिए।
5. संक्षेपण समास शैली में किया जाना चाहिए। संक्षेपण में अनेक शब्दों के लिए एक शब्द प्रयाग किये जाने चाहिए।
6. संक्षेपण में मुहावरे एवं कहावतों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
7. जहां तक सम्भव हो प्रत्यक्ष कथन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
8. अनुच्छेद में आये उदाहरण, उद्धाहरण आदि छोड़ देना चाहिए।
9. संक्षेपण करने के पश्चात् उसका एक उपर्युक्त शीर्षक देना चाहिए। जो अनुच्छेद के केन्द्रीय भाव को व्यक्त कर सके।
10. शीर्षक दो या तीन शब्दों से बड़ा नहीं होना चाहिए।

अनेक वाक्याशों के स्थान पर एक शब्द रखने से भी शब्दों की संख्या कम की जा सकती है। उदाहरण –

अनेक शब्द	एक शब्द	कितने शब्दों की बचत
राजभवन के अंदर महिलाओं का निवास	अन्तःपुर	5
मन में आपसे आपे होनेवाली प्रेरणा	अन्तःप्रेरणा	5
किसी देश के अंदर होनेवाला या उससे संबंध रखनेवाला	अंतर्देशीय	8
तर्क के बिना मान लिया गया विश्वास	अंधविश्वास	6
जिसमें काँटे या विघ्र-बाधा न हो	निष्कंटक	6
जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो	अक्षम	6
जिजके अंदर या पास न पहुंचा जा सके	अगम्य	7
वह जो करने या होने वाली बात को पहले से ही सोच ले	अग्रसोची	12
कोई बात जो बढ़ा-चढ़ाकर सही गई हो	अतिशयोक्ति	7
जिसका कोई कहीं अतं न होता है	अनंत	6
जिसका या जिसके संबंध में कोई निर्णय न हुआ हो	अनिर्णीत	9
जिसका मन किसी दूसरी जगह लगा हो	अन्यमनस्क	6
चंद्रमास के किसी पक्ष की आठवीं तिथि	अष्टमी	6
किसी वस्तु को आधुनिक रूप देने की क्रिया	आधुनिकीकरण	7
वह कवि जो तत्काल कविता कर डालता है	आशुकवि	7
नित्य दीन-दुखियों को भोजन देने की व्यवस्था	सदाव्रत	7
जो एक ही माता के उदर (पेट) से उत्पन्न हुए हों	सहोदर	9
एक वस्तु लेकर उसके बदले में दूसरी वस्तु देना	विनिमय	8
समाज में उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के बीच का वर्ग	मध्यवर्ग	8

पारिभाषिक शब्दावली

1. वे शब्द जो एक निश्चित अर्थ का बोध कराते हैं।
2. पारिभाषिक शब्द मानक होते है।
3. पारिभाषिक शब्द परिमार्जित, परिनिष्ठित होते है।
4. पारिभाषिक शब्द स्थान विशेष पर ही अपना निश्चित अर्थ का बोध कराते है। अर्थात् मानक शब्द कुछ ऐसे होते हौ जो एक क्षेत्र विशेष में ही मानक होते है वहाँ से हटने पर वे अमानक हो जाते है ऐसे मानक शब्द पारिभाषिक शब्द के रूप में अपनाए जाते हैं तो वे केवल उस क्षेत्र तक ही सीमित रहते हैं।
5. अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए ताकि अर्थ का अर्नथ न हो।
6. पारिभाषिक शब्द का निर्माण उपसर्ग व प्रत्यय लगाकर सामान्यतः किया जाता है उपसर्ग/प्रत्यय मूल शब्द में लगाते हैं।
7. पारिभाषिक शब्द के अनेक रूप है, प्रशासनिक वैज्ञानिक तकनीकी मानविकी व व्यवसायिक।

प्रशासनिक कार्यलियी शब्दावली

1. तदर्थ - Adhoc
2. प्रशासन - Administration
3. प्रतिकूल - Adverse
4. सम्बद्धता - Affiliation
5. कार्य सूची - Agenda
6. भत्ते - Allowance
7. कार्यवाही - Action
8. अधिनियम - Act
9. प्रकट करना - Acknowledgement
10. अकादमी - Academy
11. अनुमान - Estimate
12. नस्ती, मिसिल - File
13. सम्मानीय - Honorarium
14. टकसाल - Mint
15. अंतरिम - Interim
16. आद्यक्षर - Initials
17. अनुक्रमणिका - Index
18. प्रभारी - In charge
19. निदेशालय - Directorate
20. प्रेषण, भेजना - Dspatch
21. कटौती - Deduction
22. संहिता - Code
23. लाभांश - Bonus
24. परिशिष्ट - Appendix
25. लेखा-परीक्षा, अंकेक्षण - Audit
26. बकाया - Arrears
27. सवंर्ग, सेवा स्तर - Cadre
28. कक्ष/प्रकोष्ठ - Cell
29. राजपत्र - Gazette
30. राजस्व - Revenue
31. सचिव - Secretary
32. आरक्षण - Reservation
33. प्राधिकारी - Authority

34. अभिलेख - Record
35. वरिष्ठता - Seniority
36. चयन - Selection
37. निर्वाचन अधिकारी - Returning officer
38. कार्यवृत्त - Minutes
39. औचित्य - Justification
40. पूछताछ - Enquiry
41. अवधि - Duration
42. दक्षतारोक - Efficiency bar
43. प्रतिबंध - Bann
44. घूस, रिश्वत - Bribe
45. उपविधि - Bye low
46. उचित माध्यम से - Through proper channel
47. दैनिक भत्ता - Daily allowance
48. प्रतिलिपि संलग्न- Copy enclosed
49. प्राधिकारी - Authority
50. प्रारूप - Draft
51. नियत तिथि - Due date
52. समाप्ति से पूर्व - Before the expiry
53. बापसी डाक से - By – Return by post
54. वेतन वृद्धि - Increment
55. स्वीकृती - Granted
56. न्याय संगत सिद्ध करना - Justify your
57. निर्णय के लिए रोका गया - Keep pending
58. अर्जित अवकाश - Earned leave
59. आकस्मिक अवकाश - Casual leave
60. उपस्थित नामावली - Muster role
61. निर्दिष्ट - Specified
62. कार्यालय ज्ञापन - Office memorandum
63. अनापत्ति प्रमाण पत्र - No Certificate
64. वार्षिक विवरणी - Yearly reluar
65. भवदीय - Your's faith fully
66. मण्डलीय - Zonal office
67. मण्डल - Zone
68. प्रतिरक्षा सूची - Waiting list
69. रिक्त पद - Vacancy
70. सत्यापित प्रति - Verified copy
71. सत्य प्रतिलिपि - True copy
72. सत्यापन - Verification
73. संक्षेप - Abbreviation
74. अवशोषण करना - Absorb
75. शैक्षणिक - Academic year
76. आवंटन - Allot
77. शीर्ष - Apex
78. शीर्ष निकाय - Apex Body
79. अधिवासी - Domicile
80. वाचन - De-code
81. अनावासी छात्र - Day scholar
82. मन्त्रि मण्डल - Cabinet
83. विषय सार - Brief
84. सामान्य पद्धति - General practive
85. भविष्य निधि - General provident fund
86. राजभवन - Government lounge
87. शासकीय प्रतिभूतियाँ - Government securities
88. कर्मचारी/सहायक - Employee
89. अपठ्राय/अपठनीय - Illegible
90. कुंजी पटल - Key board
91. न्यायपालिका - Judiciary
92. श्रम - Labour
93. सम्पर्क अधिकारी - Wiason officer
94. खाता - Account
95. ज्ञापन - Memo
96. मध्यस्थ - Mediator
97. अल्पसंख्यक - Minority
98. मत - Vote
99. मुद्दा/विषयविद- Point
100. कोटा - Ouota
101. गणपूर्ति - Quorum
102. प्रश्नचिन्ह - Query
103. बजट/आय-व्यय - Budget
104. अनियमित - Random
105. कार्य प्रांरभ करना - Resume
106. विधि मान्य - Valid
107. दर सूची - Traffic
108. अधिवेशन का सत्र - Session
109. सेवा/नौकरी - Service
110. आलेख - Write up
111. बट्टे खाते में डालना - Write off
112. समापन - Wind up
113. प्रवेश पत्र/वीक्षा - Visa
114. आवश्यकता - Wanted
115. शून्यकाल - Zero hour
116. कार्य चालन - Working
117. पेशंन निवृत्तिका - Pension
118. अर्धवेतन अवकास - Half day leave
119. प्रतिपूरक अवकाश - Compensatory leave
120. रूपान्तरित अवकाश - Commuted leave
121. प्राथमिकता - Priority
122. गणतन्त्र - Republic
123. कर - Tax
124. ऋण - Loan
125. पारिभाषिक शब्द - Technical term
126. प्रशिक्षु - Apprentice
127. आवक जावक लिपिक - Inward despatch clerk
128. स्थगन - Adjournment
129. सम्मति - Consent
130. दहशसत/अभिरक्षा - Custady
131. दोषा रोपण फलक अभियोग फलक - Charge sheet
132. निलम्बन - Suspension
133. आहरण - Drawing
134. कटौती - Dedluction
135. दस्तावेज - Document
136. बीजक - Invoice
137. गारण्टी - Guarantee
138. खण्ड/उपबंध - Clause
139. निपटान - Disposal

म.प्र. से हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाऐं मालवा अंचल

इन्दौर - नई दुनिया, इन्दौर समाचार, नवभारत, दैनिक भास्कर, स्वदेश भावताव, जागरण

उज्जैन - विक्रम दर्शन, अवन्तिका, अग्नि बाण, भास्कर, प्रजादूत, जलती मशाल।

रतलाम - जनवृत, जनमत टाइम्स, प्रसारण हमदेश।

नीमच - नई विधा।

देवास - देवास दर्पण, देवास दूत।

मंदसौर - दशपुर दर्शन, कीर्तिमान, ध्वज।

शाजापुर - नन्दनवन।

बघेलखण्ड अंचल

रीवा - बांधवीय समाचार, आलोक, जागरण।

सतना - जवान भारत, सतना, समाचार।

शहडोल - विंध्यवाणी, भारती समय, जनबोध।

बुन्देलखण्ड अंचल

कटनी - महाकौशल केशरी, भारती, जनमेजय।

सागर - न्यू राकेट टाइम्स, आचरण, राही, जन-जन की पुकार।

टीमकगढ़ - ओरछा टाइम्स।

छतरपुर - क्रान्ति कृष्ण, प्रचण्ड ज्वाला।

जबलपुर - नव भारत, नवीन दुनिया, युगधर्म, दैनिक भास्कर, नर्मदा ज्योति, देशबन्धु, लोकसेवा।

निमाड़ अंचल

खण्डवा - विध्यांचल, लाजवाब।

बुरहानपुर - वीर सन्तरी।

बड़वानी - निमाड़ एक्सप्रेस।

छत्तीसगढ़ अंचल

बिलासपुर - लोकस्वर, नवभारत, भास्तकर

दुर्ग - ज्योति जनता, छत्तीसगढ़ टाइम्स।

रायपुर - देशबन्धु, नवभारत, भास्कर, स्वदेश।

(अ) प्रमुख पत्र-पत्रिकाएं

पत्र-पत्रिका का नाम	सम्पादक
1. कवि वचन सुधा	भारतेन्दु हरिशचन्द्र
2. ब्राह्मण	प्रतापनारायण मिश्र
3. आनन्द कादम्बिनी	बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन
4. हिन्दी प्रदीप	बालकृष्ण भट्ट
5. प्रताप	गणेशशंकर विद्यार्थी
6. अभ्युदय	मदन मोहन मालवीय
7. समालोचक	चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'
8. इन्दु	अम्बिका प्रसाद गुप्त
9. देवनागर	उपापदित्त शर्मा
10. सरस्वती	महावीर प्रसाद द्विवेदी
11. प्रभा	बालकृष्ण शर्मा नवीन
12. हंस	प्रेमचन्द्र
13. कल्याण	गीताप्रेस गोरखपुर
14. माधुरी	दुलारेलाल भार्गव
15. मतवाला	महादेव प्रसाद सेठ एवं निराला
16. साहित्य सन्देश	बाबू गुलाबराय
17. हिन्दी नवजीवन	महात्मा गांधी
18. देश	बाबू राजेन्द्र प्रसाद
19. धर्मयुग	धर्मवीर भारती
20. कर्मवीर	माखनलाल चतुर्वेदी
21. कादम्बिनी	राजेन्द्र अवस्थी
22. सारिका	कमलेश्वर, अवधनारायण मुद्गल
23. आलोचना (दिल्ली	नामवर सिंह
24. नन्दन	जय प्रकाश भारती
25. संचेतना	महीप सिंह
26. समीक्षा	गोपाल राय
27. वर्तमान	धनंजय
28. नई कहानियां	भैरव प्रसाद गुप्त
29. कथान्तर	अमर गोस्वामी
30. इंडिया टुडे	प्रभु चावला
31. विकल्प	शैलेश मटियानी
32. वैचारिकी	मणिका मोहिनी
33. आजकल	प्रतापसिंह विष्ट
34. विशाल भारत	बनारसीदास चतुर्वेदी

नोटः- हंस पत्रिका का प्रारंभ प्रेमचंद ने किया सन् 1982 से राजेन्द्र यादव ने किया।

(ब) काव्य शास्त्र के ग्रन्थ

रचना	रचनाकार
1. नाटयशास्त्र	भरतमुनि
2. काव्य प्रकाश	मम्मट
3. काव्यालंकर	भामह
4. काव्यादर्श	दण्डी
5. काव्यांलकार सूत्रवृत्ति	वामन
6. काव्यालंकार	रूद्रट
7. ध्वन्यालोक	आनन्दवर्द्धन
8. काव्यमीमांसा	राजशेखर
9. दशरूपक	धनंजय
10. ध्वन्यालोक लोच	अभिनवगुप्त
11. अभिनव भारती	अभिनवगुप्त
12. सरस्वती कंठाभरण	आचार्य भोजराज
13. वक्रोक्ति जीवित	कुन्तक
14. व्यक्ति विवेक	महित भट्ट
15. औचित्य विचार चर्चा	आर्चा क्षेमेन्द्र
16. चन्द्रालोक	जयदेव
17. रसमंजरी	भानु मिश्र
18. साहित्य दर्पण	आचार्य विश्वनाथ
19. रस गंगाधर	पंडितराज जगन्नाथ
20. शब्दानुशासन	हेमचन्द्र
21. अलंकार सर्वस्त्र	रूयक
22. कुवलयानन्द	अप्पय दीक्षित
23. काव्य कल्पद्रुम	कन्हैयालाल पोद्धार
24. चिन्तामणि (दो भाग)	आर्चाय रामचन्द्र शुक्ल
25. रस मीमांसा	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
26. भारतीय साहित्य शास्त्र (दो खण्ड)	बलदेव उपाध्याय
27. काव्य दर्पण	रामदहिन मिश्र

28. सिद्धान्त अध्ययन	बाबू गुलाबराय
29. काव्य के रूप	बाबू गुलाबराय
30. रस सिद्धान्त	डॉ नगेन्द्र
31. अरस्तू का काव्शास्त्र	डॉ. नगेन्द्र
32. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका	डॉ. नगेन्द्र
33. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त	डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत

(स) प्रमुख उपन्यास

उपन्यास का नाम	उपन्यासकार
■ भाग्यवती	श्रद्धाराम फुल्लौरी
■ परीक्षा गुरू	लाला श्रीनिवास दास
■ नूत ब्रह्मचारी	बालकृष्ण भट्ट
■ सौ अजान एवं सुजान	बालकृष्ण भट्ट
■ धूर्त रसिकलाल	लज्जाराम शर्मा
■ त्रिवेणी	किशोरीलाल गोस्वामी
■ लवंगलता	किशोरीलाल गोस्वामी
■ चन्द्रकान्ता	देवकीनन्दन खत्री
■ चन्द्रकान्ता सन्तति	देवकीनन्दन खत्री
■ नरेन्द्र मोहिनी	देवकीनन्दन खत्री
■ भूतनाथ	देवकीनन्दन खत्री
■ काजर की कोठरी	देवकीनन्दन खत्री
■ अद्भुत लाश	गोपालराम गहमरी
■ गुप्तचर	गोपालराम गहमरी
■ श्यामा स्वप्न	ठाकुर जगमोहन सिंह
■ गोविन्दराम	गोपालराम गहमरी
■ जासूस की भूल	गोपालराम गहमरी
■ नूरजहां	गोपालराम गहमरी
■ लीलावती	किशोरीलाल गोस्वामी
■ अंगूठी का नगीना	किशोरीलाल गोस्वामी
■ अधखिला फूल	अयोध्यासिंह उपाध्याय
■ ठेठ हिन्दी का ठाठ	अयोध्यासिंह उपाध्याय
■ रामलाल	मन्न द्विवेदी
■ प्रमा	प्रेचन्द्र
■ रूठी रानी	प्रेचन्द्र
■ सेवा सदन	प्रेचन्द्र
■ प्रेमाश्रम	प्रेचन्द्र
■ रंगभूमि	प्रेचन्द्र
■ कायाकल्प	प्रेचन्द्र
■ निर्मल	प्रेचन्द्र
■ गबन	प्रेचन्द्र
■ कर्मभूमि	प्रेचन्द्र
■ गोदान	प्रेचन्द्र
■ मां, भिखारिणी	विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक
■ देहाजी दुनिया	शिवपूजन सहाय
■ चन्द हसीनो के खतूत	पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
■ दिल्ली का दलाल	पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
■ बुधुआ की बेटी	पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
■ शराबी	पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
■ कंकाल	जयशंकर प्रसाद
■ तितली	जयशंकार प्रसाद
■ इरावती	जयशंकार प्रसाद
■ परख, सुनीता, त्यागपत्र	जैनेन्द्र
■ चित्रलेखा	भगवती चरण वर्मा
■ तीन वर्ष	भगवती चरण वर्मा
■ सामर्थ्य और सीमा	भगवती चरण वर्मा
■ टेढ़े-मेढ़े रास्ते	भगवती चरण वर्मा
■ भूले बिसरे चित्र	भगवती चरण वर्मा
■ कुण्डली चक्र	वृन्दावनलाल वर्मा
■ गढ़कुण्डार, विराटा की पद्मिनी	वृन्दावनलाल वर्मा
■ मृगनयनी, झांसी की रानी, माधोजी सिंधिया, कचनार, अहिल्याबाई, भुवन विक्रम	वृन्दावनलाल वर्मा
■ अप्सरा, अलका, प्रभावती निरूपमा	सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला
■ प्रेमपथ, मीठी चुटकी, अनाथ पत्नी, त्यागमयी, लालिमा	भगवती प्रसाद वाजपेयी
■ शेखर एक जीवनी	अज्ञेय
■ अपने-अपने, अजनवी	अज्ञेय
■ रवीन्द्र कविता कानन	निराला
■ जुही की कली	निराला
■ गीतिका	निराला
■ अणिमा	निराला
■ अपरा	निराला
■ सरोज स्मृति	निराला
■ तुलसीदास	निराला
■ बेला	निराला
■ नए पत्ते	निराला
■ कामायनी	जयशंकर प्रसाद
■ आंसू झरना, लहर	जयशंकर प्रसाद
■ काननकुसुम	जयशंकर प्रसाद
■ अनामिका	निराला
■ कुकुरमुत्ता	निराला
■ परिमल	निराला
■ तुलसीदास	निराला
■ राम की शक्ति पूजा (कविता)	निराला
■ झांसी की रानी	सुभद्रा कुमारी चौहान
■ पल्लव	सुमित्रानन्दन पन्त
■ वीणा	सुमित्रानन्दन पन्त
■ गुंजन	सुमित्रानन्दन पन्त
■ ग्रन्थि	सुमित्रानन्दन पन्त
■ चिदम्बरा	सुमित्रानन्दन पन्त
■ लोकायतन	सुमित्रानन्दन पन्त
■ स्वर्ण किरण, स्वर्ण धूलि,	महादेवी वर्मा

उत्तरा, ग्राम्या, गुंजन, युगान्त	
■ सांध्य गीत, दीपशिखा	महादेवी वर्मा
■ नीहार, रश्मि, नीरजा	महादेवी वर्मा
■ मधुशाला	हरिवंश राय बच्चन
■ मधुबाला	हरिवंश राय बच्चन
■ निमन्त्रण	हरिवंश राय बच्चन
■ उर्वशी, रेणुका	रामधारी सिंह दिनकर
■ रश्मिरथी, कुरूक्षेत्र, रसवन्ती, हुंकार	रामधारी सिंह दिनकर
■ परशुराम की प्रतीक्षा	रामधारी सिंह दिनकर
■ सामघेनी	दिनकर
■ अर्द्धनारीश्वर	दिनकर
■ नीलकुसुम	दिनकर
■ सीपी और शंख	दिनकर
■ बावरा अहेरी	अज्ञेय
■ आंगन के पार द्वार	अज्ञेय
■ कितनी नावों में कितनी बार	अज्ञेय
■ इन्द्र धनु रौंदे हुये ये	अज्ञेय
■ आत्मजयी	कुवर नारायण
■ एक कंठ विषपायी	दुष्यन्त कुमार
■ साये में धूप	दुष्यन्त कुमार
■ हल्दीघाट	श्याम नारायण पांडेय
■ जौहर	श्याम नारायण पांडेय
■ चांद का मुंह टेढ़ा है	गजानन माधव मुक्ति बोध
■ ब्रह्मराक्षस	गजानन माधव मुक्ति बोध
■ सतपुड़ा के जंगल	भवानी प्रसाद मिश्र
■ अंधा युग	धर्मवीर भारती
■ कनुप्रिया	धर्मवीर भारती
■ सात गीत वर्षत	धर्मवीर भारती
■ ठण्डा लोहा	धर्मवीर भारती
■ प्रबन्ध चिन्तामणि	मेरूतुंग
■ जय मयंक जस चन्द्रिका	मेरूतुंग
■ प्राकृत पैंगलम	लक्ष्मीधर
■ प्राकृत व्याकरण	हेमचन्द्र
■ राउर बेलि	ज्ञेडा
■ श्रावकाचार	देवसेन
■ खुमान रासो	दलपति विजय
■ विजयपाल रासो	नल्ल सिंह
■ जयचन्द्र प्रकाश	भट्ट केदार
■ कीर्तिलता, कीर्तिपताका	विद्यापति
■ बीजक	कबीरदास
■ ग्रन्थ साहब	गुरूनानक
■ जपुजी	गुरूनानक
■ असादीवार	गुरूनानक
■ रहिरास	गुरूनानक
■ सोहिला	गुरूनानक
■ अखरावट	जायसी
■ आखिरी कलाम	जायसी
■ हंस जवाहिर	कासिम शाम
■ अनुराग बांसुरी	नूर मुहम्मद
■ इन्द्रावती	नूर मुहम्मद
■ रामायण महानाटक	प्राण चन्द्र चौहान
■ ध्यान मंजरी	स्वामी अग्रदास
■ हनुमन्नाटक	ह्रदयराम
■ रूप मंजरी	नन्ददास
■ श्याम सगाई	नन्ददास
■ हित चौरासी	हित हरिवंश
■ नरसी जी का मायरा	मीराबाई
■ गीत गोविन्द टीका	मीराबाई
■ राग सोरठ के पद	मीराबाई
■ सुजान रसखान	मीराबाई
■ सुजान रसखान	रसखान
■ युगल शतक	श्री भट्ट
■ ललित ललाम	मतिराम
■ रस रहस्य	कुलपति मिश्र
■ पावस बिलास	देव
■ रसानन्द लहरी	देव
■ जंगनामा	श्रीधर
■ रस चन्द्रोदय	कवीन्द्र
■ अलंकार चन्द्रोदय	रसिक सुमति
■ खटमल बाईसी	अलीमुहिब खां
■ रस नत्नाकर	भूपति
■ रस पीयूष निधि	सोमनाथ
■ अंग दर्पण	रसलीन
■ रस प्रबोध	रसलीन
■ भंड़ौवा संग्रह	बेनी बन्दीजन
■ रस विलास	बेनी
■ सुजान सागर	घनानन्द
■ रस केलिबल्ली	घनानन्द
■ कोकसार	घनानन्द
■ विरह लीला	घनानन्द
■ कृपा काण्ड	घनानन्द
■ विरह बारीश	बोधा
■ इश्कनामा	बोधा
■ चण्डी चरित्र	गुरूगोविन्द सिंह
■ दशम ग्रन्थ	गुरूगोविन्द सिंह
■ भाव पंचाशिका	वृन्द
■ रत्नाष्टक	जगन्नाथदास रत्नाकर
■ पारिजात	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरि औध'
■ मिलन, पथिक	रामनरेश त्रिपाठी
■ स्वप्न, मानसी	रामनरेश त्रिपाठी
■ पलाशवन	नरेन्द्र शर्मा
■ प्रवासी के मीत	नरेन्द्र शर्मा
■ एक फूल की चाह	माखन लाल चतुर्वेदी

■ तार सप्तह, सागर मुद्रा	अज्ञेय
■ आकाश गंगा	रामकुमार वर्मा
■ चित्ररेखा	रामकुमार वर्मा
■ ऊर्मिला, कुंकुम	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
■ प्राणार्पण	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
■ हम विषपायी जनम के	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
■ क्वासि	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
■ कश्मीर	श्रीधर पाठक
■ वनाष्टक	श्रीधर पाठक
■ कुणाल	सोहनलाल द्विवेदी
■ गीत फरोश	भावनी प्रसाद मिश्र
■ अपूर्वा	केदारनाथ अग्रवाल
■ फूल नहीं रंग बोलते है	केदारनाथ अग्रवाल
■ युग की गंगा	केदारनाथ अग्रवाल
■ पुष्पदीप	केदारनाथ अग्रवाल
■ चेता नैया खेता	केदारनाथ अग्रवाल
■ ब्रह्मराक्षस	गजानन माधव मुक्तिबोध
■ अकाल और उसके बाद	नागार्जुन
■ शासन की बन्दूक	नागार्जुन
■ बहुत दिनों के बाद	नागार्जुन
■ संसद के सड़क तक	धूमिल
■ कुछ कविताएं	शमशेर
■ जय सुभाष	विनोद चन्द्र पाण्डेय
■ दर्द दिया है	गोपाल दास नीरज

(य) नाटक एवं एकांकी	
नाटक एवं एकांकी	**नाटककार**
■ श्री चन्द्रावली नाटिका	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
■ भारत दुर्दशा	भारतेन्दु हरिशचन्द्र
■ अंधेर नगरी	भारतेन्दु हरिशचन्द्र
■ वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति	भारतेन्दु हरिशचन्द्र
■ विषस्य विषमौधम	भारतेन्दु हरिशचन्द्र
■ नीलदेवी	भारतेन्दु हरिशचन्द्र
■ सज्जन, कल्याणी परिणय	जयशंकर प्रसाद
■ विशाख, अजातशत्रु कामना	जयशंकर प्रसाद
■ स्कन्दगुप्त	जयशंकर प्रसाद
■ राज्यश्री	जयशंकर प्रसाद
■ चन्द्रगुप्त	जयशंकर प्रसाद
■ ध्रुवस्वामिनी	जयशंकर प्रसाद
■ जनमेजय का नागयज्ञ	जयशंकर प्रसाद
■ एक घूंट	जयशंकर प्रसाद
■ स्वर्णविहान	हरिकृष्ण प्रेमी
■ प्रतिशोध	हरिकृष्ण प्रेमी
■ रक्षाबन्धन	हरिकृष्ण प्रेमी
■ आहुति	हरिकृष्ण प्रेमी
■ सिन्दूर की होली	लक्ष्मीनारायण मिश्र
■ संन्यासी	लक्ष्मीनारायण मिश्र

■ अंगूर की बेटी	गोविन्द बल्लभ पन्त
■ तारा	भगवती चरण वर्मा
■ सबसे बड़ा आदमी	भगवती चरण वर्मा
■ मत्स्यंगधा	उदयशंकर भट्ट
■ कारवां (एकांकी संग्रह)	भुवनेश्वर प्रसाद
■ भोर का तारा	जगदीश चन्द्र माथुर
■ छठा बेटा	उपेन्द्रनाथ अश्क
■ कैद, उड़ान, अंजोदीदी	उपेन्द्रनाथ अश्क
■ डॉक्टर	विष्णु प्रभाकर
■ अंधा कुआं	लक्ष्मीनारायण लाल
■ मादा कैक्टस	लक्ष्मीनारायण लाल
■ दर्पन	लक्ष्मीनारायण लाल
■ आषाढ़ का एक दिन	मोहन राकेश
■ लहरों के राजहंस	मोहन राकेश
■ आधे-अधूरे	मोहन राकेश
■ शशिगुप्त	सेठ गोविन्ददास
■ नया समाज, क्रान्तिकारी	उदयशंकर भट्ट
■ बकरी	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
■ घंटियां गूंजती है	शिव प्रसाद सिंह
■ रेशमी टाई, चारूमित्रा, कौमुदी महोत्सव दीपदान	रामकुमार वार्मा
■ समस्या का अन्त	उदयशंकर भट्ट
■ भोर का तारा	जगदीशचन्द्र माथुर

अन्य महत्वपूर्ण कृतियां	
■ चिन्तामणि	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
■ रस मीमांसा	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
■ हिन्दी साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
■ अशोक के फूल, कल्पलता	हजारी प्रसाद द्विवेदी
■ पर्ण कुकुट, निषाद बांसुरी	कुबेरनाथ राय
■ आवारा मसीहा	विष्णु प्रभाकर
■ क्या भूलूं क्या याद करूं	बच्चन
■ अपनी खबर	पांडेय बेच शर्मा 'उग्र'
■ स्मृति की रेखाएं	महादेवी वर्मा
■ अतीत के चलचित्र	महादेवी वर्मा
■ मेरा परिवार	महादेवी वर्मा
■ पथ के साथी	महादेवी वर्मा
■ रेखाचित्र	बनारसीदास चतुर्वेदी
■ माटी की मूरतें	रामवृक्ष बेनीपुरी
■ जंगल के जीव	श्रीराम शर्मा
■ मैं इनसे मिला	पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'
■ दूसरी परम्परा की खोज	डॉ. नामवर सिंह
■ देव और उनकी कविता	डॉ. नगेन्द्र
■ विचार और अनुभूति	डॉ. नगेन्द्र
■ रीतिकाव्य की भूमिका	डॉ. नगेन्द्र
■ बिहारी की बाग्विभूति	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
■ कबीर	हजारी प्रसाद द्विवेदी
■ चितन की छांह	विद्यानिवास मिश्र

■ तुम चन्दन हम पानी	विद्यानिवास मिश्र
■ मेरे राम का मुकुट भीग रहा है	विद्यानिवास मिश्र
■ रस आखेटक, प्रिया नीलकंठी, गन्धमादन, विषाद योग	कुवेरनाथ राय
■ संस्कृति के चार अध्याय	रामधारी सिंह 'दिनकर'
■ अर्द्धनारीश्वर	रामधारी सिंह 'दिनकर'
■ त्रिशुंक, आत्मेपद	अज्ञेय
■ मेरी तिब्बत यात्रा	राहुल सांकृत्यायन
■ मेरी यूरोप यात्रा	राहुल सांकृत्यायन
■ कलम का सिपाही	अमृतराय
■ प्रवास की डायरी	बच्चन
■ रूपक रहस	श्यामसुन्दर दास
■ शिवशम्भू का चिट्ठा	बालकुकुन्द गुप्त
■ चौरासी वैष्णवन की वार्ता	गोकुलनाथ
■ दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता	गोकुलनाथ
■ भक्तमाल	नाभादास
■ रानी केतकी की कहानी	ईशा अल्हा खां
■ सुखसागर	मुंशी सदासुखलाल
■ नासिकेतोपाख्यायन	सदल मिश्र
■ प्रेमसागर	लल्लूलाल
■ गेहूं और गुलाब	रामवृक्ष बेनीपुरी
■ रस सिद्धान्त	डॉ. नगेन्द्र
■ शिवसिंह सरोज	शिवसिंह सैंगर
■ पृथ्वी पुत्र	वासुदेव शरण अग्रवाल
■ आपका बंटी	मन्नू भण्डारी
■ महाभोज	मन्नू भण्डारी
■ ए लड़की	कृष्णा सोबती
■ डूबते मस्तूल	नरेश मेहता
■ हुजूर दरबार	गोविन्द मिश्र
■ कुरू-कुरू स्वाह	मनोहर श्याम जोशी
■ नेताजी कहिन	मनोहर श्याम जोशी
■ अर्द्धनारीश्वर	विष्णु प्रभाकर
■ क्षण बोले कण मुस्काये	कन्हैयालाल मिश्र प्रीााकर
■ विश्रामपुर का सन्त	श्रीलाल शुक्ल
■ धासीराम कोतवाल	विजय तेन्दुलकर
■ अग्नि परीक्षा	आचार्य तुलसी
■ अग्नि गर्भा	महाश्वेता देवी
■ पीली आंधी	प्रभा खेतान
■ पहला गिरमिटिया	गिरिराज किशोर
■ तमस	भीष्म साहनी
■ जिन्दगीनामा	कृष्णा सोबती
■ स्त्री सुबोधिनी	मन्नू भण्डारी
■ लज्जा	तसलीमा नसरीन
■ मृत्युंजय	शिवाजी गोविन्दराव सांवत
■ दीवार में एक खिड़की रहती थी	विनोद कुमार शुक्ल
■ कुली	मुल्कराज आनन्द

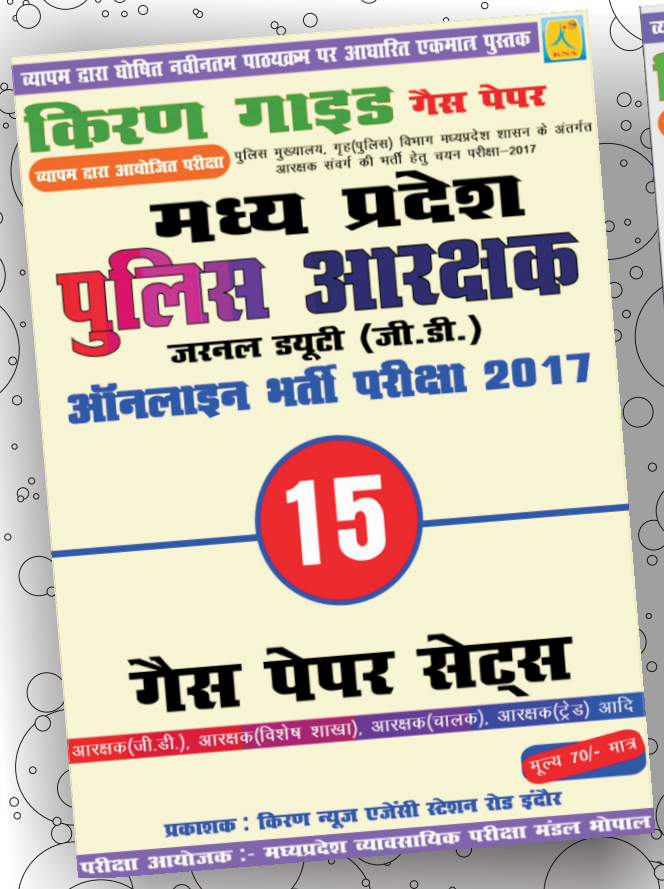
■ कपाल कुण्डला	बंकिम चन्द्र चटर्जी
■ मेरी चीन यात्रा	राहुल सांकृत्यायन
■ एक गधे की आत्मकथा	कृश्न चन्दर
■ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	रामविलास शर्मा
■ जुलूस	फणीश्वरनाथ रेणु
■ रास्ता इधर से है	रघुवीर सहाय
■ कहानी-ई कहानी	डॉ. नामवर सिंह
■ छायावाद का पतन	डॉ. नामवर सिंह
■ भाषा और समाज	रामविलास शर्मा
■ महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण	रामविलास शर्मा
■ विचार और अनुभूति	डॉ. नगेन्द्र
■ विचार और वितर्क	डॉ. नगेन्द्र
■ कल्पलता	हजारीप्रसाद द्विवेदी
■ सूर साहित्य	हजारीप्रसाद द्विवेदी
■ समय और हम	जैनेन्द्र कुमार
■ कामायनी और पुनर्विचार	गजानन माधव मुक्तिबोध
■ दीर्घतपा	फणीश्वरनाथ रेणु
■ शुद्ध कविता की खोज	रामधारी सिंह दिनकर
■ पन्त, प्रसाद और मैथिलीशरण	रामधारी सिंह दिनकर

किरण गाइड

MP-SI स्पेशल

सामान्य हिन्दी

सामान्य हिंदी का इतिहास एवं परिचय





प्रकाशक: किरण न्यूज एजेंसी स्टेशन रोड इंदौर